श्रमणोपासक

धर्मपाल – विशेषांक

10 अक्तूबर 1997

सम्पादक
चम्पालाल डागा

विशेष सम्पादक
डा. आदर्श सक्सेना
डा सजीव भानावत
जानकी नारायण श्रीमाली

प्रकाशक :
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर – 334005 (राज)



श्रमणोपासक

धर्मपाल विशेषांक

* 10 अक्टूबर 1997

* वर्ष 35 अक 13

* पजी संख्या आर एन 7387/63

---

* शुल्क

*आजीवन सदस्यता · 501/-

* वार्षिक : 30/-

* वाचनालयो के लिए 25/-

* प्रस्तुत अक · 25/-

प्रकाशक :

श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ,

समता भवन,रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005 (राज)

तार-साधुमार्गी फोन : 544637

मुद्रक :

जैन आर्ट प्रेस के लिए

अजित कम्प्यूटर्स बीकानेर द्वारा मुद्रित;

धर्मपालक प्रतिबोधक

परम श्रद्धेय

आचार्य श्री नानालाल जी

महाराज

के

युगान्तरकारी कृतित्व

एवं ओजस्वी व्यक्तित्व

को

सादर

सविनय

समर्पित



परस्परोपग्रहो जीवानाम्



प्रकाशकीय

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की लोक-कल्याणकारी प्रवृत्तियों में श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति अग्रगण्य है। संघ में इस प्रवृत्ति का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह प्रवृत्ति जीवन रूपान्तरण की प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति का बीजारोपण समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालालजी म सा के पावन उपदेशों से चैत्र शुक्ला 10 सवत् 2020 को हुआ था।

आचार्य श्री नानेश अपने रतलाम चातुर्मास के बाद उज्जैन की ओर विहार कर रहे थे। पादविहारी आचार्य समाज मे व्याप्त विषमता और अस्पृश्यता जैसी व्याधियो का उपचार करना चाहते थे। नागदा मे यह प्रसग उपस्थित हुआ और गुराडिया मे विधिवत् बलाई जाति के हजारो लोगो ने अछूत का काला-टीका मिटाने के लिए व्यसन मुक्त और सादा-चारित्रवान जीवन जीने का सकल्प ग्रहण किया। आचार्य श्री ने अपनी मर्यादा मे प्रवृत्ति का बीजारोपण किया और फिर श्री अ भा. साधुमार्गी जैन सघ ने इन अछूत बन्धुओ को गले लगाने, इनकी उन्नति करने का कार्य हाथ में ले लिया। इस कार्य हेतु विधिवत् श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति की स्थापना की। यह प्रवृत्ति मालवा के लगभग 600 गावो मे फैली बलाई जाति के उद्धार हेतु स्थापित हुई किंतु कालान्तर मे यह सम्पूर्ण ग्राम को इकाई मानकर व्यसनमुक्ति, शिक्षा और संस्कार-सदाचार प्रदान करने का साधन बन गई। प्रवृत्ति कार्यो को भारी जन समर्थन मिला।

संघ ने व्यवस्थित योजित प्रयत्नो से प्रवृत्ति कार्य को आगे बढाया। क्षेत्र मे बहुआयामी कार्यक्रमो की रचना की। व्यसन मुक्ति से बढकर यह प्रवृत्ति अब श्रावकत्व की स्थिति ग्रहण कर चुकी है। कल तक अछूत समझे जाने वाले बलाई आज धर्मपाल के रूप मे अपने जीवन रूपान्तरण के कारण जैन-अजैन सम्पूर्ण समाज के आदर-सम्मान के पात्र बन चुके हैं। सदाचार से उनकी समृद्धि बढी है, उन्हे समता मिली है।

यह रोमांचक जीवन रूपान्तरण भारत के धर्मों के इतिहास का एक क्रांतिकारी अध्याय है। श्री अ भा. साधुमार्गी जैन संघ ने इस युग सत्य को सम्पूर्ण देश के समक्ष आदर्श प्रेरणा के रूप मे प्रस्तुत करने, इस अद्भुत-अपूर्व प्रगति से उत्साह ग्रहण करने हेतु प्रस्तुत धर्मपाल विशेषांक 1997 प्रकाशित करने का निश्चय किया। यह द्वितीय धर्मपाल विशेषांक है। इससे पूर्व 1984 में

प्रथम धर्मपाल विशेषाक प्रकाशित किया जा चुका है।

प्रस्तुत विशेषाक धर्मपाल प्रवृत्ति के बीजारोपण, विकास और भविष्य की समावनाओ का एक महनीय दस्तावेज है। इसकी योजना निर्माण करने और इसे प्रस्तुत आकार मे समुपस्थित करने मे सघ के प्रतिभाशाली उपाध्यक्ष श्री भवरलालजी कोठारी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। इसके सामयिक प्रकाशन मे सम्पादक श्री चम्पालाल् डागा का विशेष योगदान रहा है। सम्पादक मडल के श्रम और प्रतिमा से इसे इस रूप मे प्रस्तुत करना समव हो सका है।

श्री गोविन्द नारायण श्रीमाली ने युवा होते हुए तत्स्थलीय सर्वेक्षण, सामग्री सकलन और प्रस्तुतीकरण मे जिस सूझ-बूझ का परिचय दिया है, वह सराहनीय है। इनसे भविष्य मे और भी आशाए है।

विशेषाक के प्रकाशन मे अमित कम्प्यूटर्स तथा सघ कार्यालय व जैन आर्ट प्रेस का भरपूर सहयोग मिला। हम उनके आभारी है।

विशेषाक हेतु आलेख-सस्मरण आदि भेजने वाले सघनिष्ठजनो और धर्मपालो के प्रति हार्दिक साधुवाद।

सघनिष्ठ महानुभावो ने अल्पकाल मे अच्छी सख्या मे विज्ञापन प्रदान किये है। यह सहयोग अभिनदनीय है।

धर्मपाल समाज रचना से राष्ट्र के उत्कर्ष की ओर प्रगति का यह आलेख समाज और देश को समर्पित करते हुए हमे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

साभार

गुमानमल चोरडिया	जयचन्दलाल सुखानी	सागरमल चपलोत
अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	महामत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर



सम्पादकीय

23 मार्च 1963 से प्रारंभ हुआ यह धर्मपाल आन्दोलन अपनी चौंतीसवी वर्षगाठ मना कर युवावस्था के अमृत वर्षों मे प्रवेश कर चुका है। इन 34 वर्षों के इसके इतिहास पर यदि दृष्टिपात करे तो इसकी प्रगति एव उपलब्धियों से उत्साहित होने का कारण बनता है। निश्चय ही इसकी प्रेरणा एक अस्पृश्य समझे जाने वाले पीडित वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाने की कामना से उद्भूत थी तथापि व्यसनमुक्ति एव संस्कार-निर्माण की प्रवृत्तियो के इसके साथ सयुक्त हो जाने से इसकी सामाजिक चिन्तन की भूमिका एक क्रान्तिकारी सास्कृतिक अभियान में परिवर्तित हो गई। सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा तथा स्वस्थ एवं विकासमान समाज व्यवस्था सुनिश्चित व्यसनमुक्ति की अपेक्षा रखती है। स्वस्थ, संतुलित समतामय समाज की स्थापना का यह सुगमतम मार्ग था जिसके अनुसरण मे आस्था विकसित कर आचार्य श्री नानेश ने ऐसी क्रान्ति की धारा प्रवाहित की जो अपने आवेग में संस्कृति और धर्म को भी समेट लेती है। संस्कृति को इस प्रकार कि, बिना सुसंस्कारित हुए सामाजिक पुनरुत्थान संभव नही है और व्यसन सुसस्कारिता के मार्ग की सबसे बडी बाधा होते हैं, धर्म को इस प्रकार समेटा कि भौतिकवाद के इस युग मे धर्मोपासना की यात्रा सामाजिक सरोकारों के मार्ग से होकर गुजरती है। इस प्रकार आज वह स्थिति आ गई है जिसमें सभी कुछ सामाजिक प्राथमिकताओं के आधार पर तय होता है। व्यक्ति के समाज व्यवस्था का केन्द्र होने के कारण उसका चरित्र, उसकी मानसिकता और उसकी प्राथमिकताएं, अपेक्षित समाज-रचना मे सहायक हो सकती है। व्यक्ति के सुधार के माध्यम से ही समाज–सुधार का यह कार्य सभव है जिसकी आज महती आवश्यकता है। इस सामयिक सत्य को आचार्य श्री नानेश ने गहराई से पहचाना और एक त्रिआयामी कार्य योजना द्वारा समाज के पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम किया। इसलिये चाहे हम बात समता-समाज की करें, चाहे व्यसन-मुक्ति की, चाहे सस्कार क्रान्ति की, सबका समावेश धर्मपाल प्रवृत्ति मे हो जाता है। धर्मपाल आन्दोलन तो वह त्रिवेणी संगम है जिसमे इन तीनों चिन्तन धाराओं का कल्याणकारी मिलन हो गया है। धर्मपालो के संस्कार जिस प्रकार सुधरे, इस सुधार के जो सामाजिक परिणाम हुए, उनका समाज व्यवस्था पर जो प्रभाव पड़ा तथा यह जो कुछ हुआ वह युगधर्म के पूर्णत अनुरूप था, यह महत्वपूर्ण है। इस प्रकार धर्मपाल आन्दोलन मात्र सामाजिक-वैचारिक क्रान्ति न [illegible]

होकर एक ऐसी धार्मिक क्रान्ति भी है जो युगानुरूप धर्म की प्रतिष्ठा का आह्वान करती है। इसने सामाजिक सुव्यवस्था के लिये अपेक्षित धर्माधार प्रदान कर व्यक्ति के मनोविज्ञान के परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। हम जानते है कि व्यक्ति का मनोविज्ञान अथवा उसकी मानसिकता बदलना किसी भी बडी क्रान्ति की सफलता की पहली आवश्यकता है परन्तु यह क्रान्ति ही सपूर्ण लक्ष्य हो तो मन का यह बदलाव भी कितना पूर्ण होना चाहिये, इसका अनुमान धर्मपाल आन्दोलन करा देता है। यही वह स्थिति है जो धर्मपाल प्रवृत्ति की महिमा प्रतिपादित करती है।

'धर्मपाल' प्रवृत्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक एव मानवीय पक्षो से समाज को परिचित करंना, उसकी प्रगति से अवगत करना तथा भावी योजनाओ की जानकारी प्रदान करना, प्रस्तुत विशेषाक का उद्देश्य है। धर्मपाल आन्दोलन को प्रभावी एव लोकप्रिय बनाने तथा उसकी क्रान्तिकारी भूमिका को सुनिश्चित करते रहने की दृष्टि से पद यात्राओ, सम्मेलनो, धर्मजागरण यात्राओ, सस्कार निर्माण कार्यक्रमो, धर्मपाल पचायतो, प्रवासो, शिविरो आदि का भी महत्त्व होता है। समाज को सपूर्ण अपेक्षित जानकारी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे वह इस दिशा मे जाग्रत रहे, प्रगति के प्रति आस्थावान रहे तथा अपने दायित्वो के निर्वाह के प्रति सचेष्ट रहे। इस विशेषाक द्वारा यही विनम्र प्रयास किया गया है तभी सभी अपेक्षित सामग्री एक स्थान पर सकलित कर दी गई है। हमे विश्वास है कि यह धर्मपाल प्रवृत्ति की सार्थक छवि निर्मित करने मे सक्षम होगी। हमारे इस प्रयास से इस प्रवृत्ति को और अधिक समर्पित जन सहयोग मिल सकेगा तथा युग दृष्टा सत आचार्य श्री नानेश का संस्कार क्रान्ति का स्वप्न साकार करने की दिशा मे हम बडी दूरी तक आगे बढ सकेगे। इस आशा एव विश्वास के साथ यह 'धर्मपाल विशेषाक' हम अपने सुधी पाठको के कर कमलो मे समर्पित कर रहे है।

चम्पालाल डागा
डॉ आदर्श सक्सेना
जानकी नारायण श्रीमाली
डॉ सजीव भानावत



यही जीवन का मंगल मंत्र है ! समीयाए धम्मे : समता ही धर्म है :

धागे चादर को आधार और एकता प्रदान करते है। उसी प्रकार चतुर्विध संघ के प्रत्येक घटक को स्वयं का अस्तित्व भूलकर चतुर्विध संघ को आधार और एकता प्रदान करनी चाहिए। धागों का हित चादर के हित मे संग्रहित है। धागों का जीवन चादर के जीवन पर आधारित है। इस अन्योन्याश्रित संबंध को हृदयंगम करे। संघ एकता का यही सूत्र है। यही जीवन का मंगल मंत्र है। इसी जीवन मंत्र के सहारे जीवन को उज्ज्वल करें।

— आचार्य श्री नानेश

रत्नपुरी में दीक्षा महोत्सव हेतु
हार्दिक आमंत्रण

रतलाम– दिनाक 12997 श्री सघ के असीम पुण्योदय से जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूडामणि, निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के रक्षक, समता विभूति, समीक्षध ध्यान योगी, परम आराध्य आचार्य प्रवर श्री 1008 श्री नानालालजी महाराज सा, हुक्म सघ के भावी नवम् पट्टधर शास्त्रज्ञ, तपोविजेता, व्यसनमुक्ति अभियान के प्रणेता, प्रज्ञापुज प्रशान्तमना, परम श्रद्धेय युवाचार्य प्रवर श्री 1008 श्री रामलालजी महाराज सा ने रखे जाने वाले सभी आगारो सहित विरक्तमना सुश्री ललिता श्री श्रीमाल (आत्मजा श्री बसन्तीलालजी) एव विरक्तमना सुश्री सुनिता कोठारी (आत्मजा श्री नगीनचन्दजी) की जैन भागवती दीक्षा की स्वीकृति दिनाक 7 नवम्बर 97, कार्तिक शुक्ला सप्तमी के लिये (रतलाम सघ की विनती पर) प्रदान की है।

दीक्षा के इस पावन प्रसग पर श्री सघो से सानुरोध निवदेन है कि कृपया रतलाम पधारकर दीक्षार्थी बहनो को आशीर्वाद प्रदान करे व जिनशासन की शोभा बढाने मे अपना अमूल्य योगदान दे। साथ ही श्री सघ को आतिथ्य सत्कार का लाभ प्रदान करे। आपके पधारने से श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी महाराज साहब एव सन्ती सती मण्डल के प्रवचन, दर्शन सेवा का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा।

मांगलिक कार्यक्रम

शोभा यात्रा दिनाक 61197 दोपहर 130 बजे घास बाजार से प्रारभ।
अभिनन्दन समारोह 61197। स्थान–हनुमान रूडी
अभिनिष्क्रमण यात्रा दिनाक 71197 प्रात 830 बजे
दीक्षा समारोह दिनाक 71197 प्रात 10 बजे से
दीक्षा स्थल–जैन स्कूल, बाजना बस स्टेण्ड के पास, रतलाम

पी सी चौपडा
सयोजक, चातुर्मास समिति

विनीत
श्री साधुमार्गी जैन सघ, रतलाम
अध्यक्ष–नाथूलाल मुणत
मत्री–कातिलाल वोहरा

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय, 22, घास बाजार, रतलाम
फोन 07412–31111, 31684, 38480 फैक्स 31107

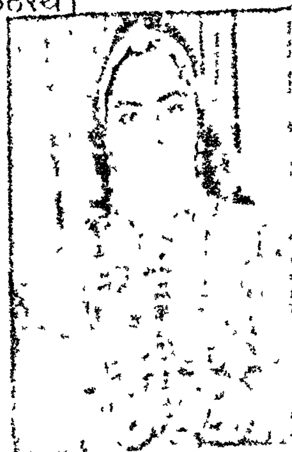


दीक्षार्थी बहिनों का परिचय

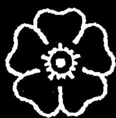


नाम-सुश्री ललिता श्रीश्रीमाल
पिता—श्री बसन्तीलालजी श्रीश्रीमाल
माता—श्रीमती कोमलदेवी
दादाजी—स्व श्री नानालालजी
दादीजी—स्व श्रीमती सज्जनबाई
भ्राताद्वय—श्री राजेन्द्र कुमार एव श्री मनोजकुमार
मामीद्वय—श्रीमती प्रमिलादेवी एव श्रीमती सरितादेवी
भगिनीद्वय—मधुबाला, सगीता
जन्म स्थान—रतलाम
वेराग्यकाल—10 वर्ष
आयु—27 वर्ष
व्यवहारिक अध्ययन—एम ए (हिन्दी साहित्य)

धार्मिक अध्ययन श्री साधुमार्गी जेन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर से रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण। आचाराग सूत्र, सूत्रकृताग सूत्र, रथानाग सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र, उत्तरा ययन सूत्र, नदी सूत्र आदि 25 आगमो का अध्ययन। भक्तामर, पुच्छिसुण, [illegible] अष्ठक, दोनो प्रतिक्रमण, जीवधडा, गम्मा, लघुदण्डक, दोनो बासठिया, 33 बोल पाच समिति तीन गुप्ति, सजया, नियठा, भगवती, प्रज्ञापना सूत्र के कई थोकडे कठस्थ।



नाम-सुनिता कोठारी
सुपुत्री—श्री नगीनचन्दजी एव श्रीमती [illegible] कोठारी
भ्राताद्वय—श्री [illegible]कुमार एव [illegible] कुमार
जन्म स्थल—रतलाम
वैराग्यकाल- 8 वर्ष
आयु -27 वर्ष
व्यावहारिक अध्ययन—[illegible]
[illegible]



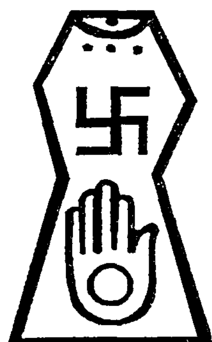

खण्ड 1

संघ-परिचय

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर



एक परिचय



1997



श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना विक्रम संवत् 2019 मिती आश्विन शुक्ला 2 को हुई। संघ का उद्देश्य सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र की आराधना, अभिवृद्धि करते हुए समाजोन्नति के कार्यों को करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति एवं प्राप्ति हेतु वर्तमान मे सघ की निम्न प्रवृत्तिया चालू हैं–

बहु आयामी प्रवृत्तियों की ओर...... ....

श्रमणोपासक

समता संदेशवाहक सघ मुखपत्र 'श्रमणोपासक' विद्वानों व साधक–पाठकों मे दिनो दिन लोकप्रिय। 6150 प्रतिया वितरित नए रुपाकार मे। इसके विशेषांक बहुचर्चित। सघ परिवार के जीवन्त सम्पर्क का प्रतीक। आचार्य श्री नानेश के सन्देश को जन जन तक सप्रेषित करने का सशक्त माध्यम !

सत्साहित्य प्रकाशन

जन मन मे प्रदूषित साहित्य के बढते प्रसार को रोकने व समता-मूलक धर्म-दर्शन चारित्र्य प्रधान सत्साहित्य प्रकाशन की ओर प्रवृत्त सघ साहित्य के निर्णयानुसार कई महत्त्वपूर्ण ग्रथो का मुद्रण हुआ है।

धर्मपाल प्रवृत्ति

दलित पीड़ित व अछूत माने जाने वाले जनो को समाज मे धर्मपाल के रूप मे प्रतिष्ठित करने का अनुष्ठान, मध्यप्रदेश के मालवाचल मे, आचार्य श्री नानेश के प्रवचनों से फला है। चिकित्सा व शिक्षा की समुचित सुविधा धर्मपालो जनो को प्रदान करने के गभीर प्रयास सघ ने किये है। दिलीप नगर, रतलाम मे श्री प्रेमराज गणपत राज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास का सफलता पूर्वक सफल सचालन किया गया है।

धार्मिक परीक्षा

देश की भावी पीढी को धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एव सामाजिक स्तर पर सुशिक्षित करने हेतु स्थापित संघ 'श्री धार्मिक परीक्षा बोर्ड' का कार्य आवश्यकतानुरूप निरन्तर प्रगति पर है। 325 परीक्षा केन्द्र वर्तमान मे प्रवर्तित है। निश्चय ही यह गति उत्साहवर्द्धक है।

स्वधर्मी सहयोग व छात्रवृत्ति

[illegible] स्वधर्मी बन्धु-बहिनों को संघ द्वारा आर्थिक [illegible] दिया जाता है। इसका वार्षिक [illegible] है [illegible]। [illegible] श्री [illegible] श्री [illegible] [illegible]

[illegible]

है। जरूरतमद छात्र-छात्राओ को छात्रवृत्तिया निर्धारित कर महिला समिति प्रतिभा-प्रश्रय का पथ प्रशस्त करने मे जुटी है।

धार्मिक शिक्षण अभियान

धार्मिक शिक्षण शालाओ के माध्यम से बालक बालिकाओ को सस्कारित करने हेतु सघ 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान करता है। यह प्रवृत्ति समता युवा सघ द्वारा संचालित की जा रही है।

ग्रन्थ संरक्षण

रतलाम स्थित 'श्री गणेश जैन ज्ञान भडार' के ज्ञान मन्दिर ग्रन्थागार मे 51000 से अधिक ग्रथ ज्ञानाराधको व शोध अध्येताओ के लिए सुलभ है। संघ-प्रवृत्तियो की यह गौरव श्रृखला है।

शोध कार्य

उदयपुर मे श्री गणेश जैन छात्रावास के एक भाग मे प्रकृति के रम्य वातावरण मे अवस्थित है 'आगम अहिसा, समता एव प्राकृत सस्थान' जहा निरतरित चल रहा है शोध महत्वपूर्ण कार्य। आगम साहित्य अध्ययन – व्याख्या–विवेचन पाडुलिपीकरण व लेखन-अनुवाद-सपादन का आचार्य श्री नानेश का यह एक राष्ट्रीयज्ञान-व्रत अनुष्ठान है।

जैनोलॉजी शिक्षा

श्री मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर मे जैनोलॉजी एव प्राकृत शिक्षण पीठ हेतु सघ द्वारा भेट की गई राशि और शासकीय अनुदान से स्थापित और सचालित यह उच्च अध्ययन-अनुसधान सतत् प्रगतिशील है। सघ-सकल्प का एक प्रेरक प्रतिफलन।

श्री सु. सां. शिक्षा सोसायटी

नोखा (बीकानेर) अवस्थित यह सोसायटी जैन शिक्षण प्रकृतियो के साथ ही अध्यनरत पूज्य सत सतियाजी म सा एव वैरागी भाई बहिनो के धार्मिक शिक्षण की समुचित व्यवस्था करती है।

छात्रावास

श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास रतलाम मे तथा श्री गणेश जैन छात्रावास उदयपुर मे स्थापित है जहा बालको मे व्यवहारिक शिक्षा के साथ धार्मिक एव नैतिक शिक्षण की ओर समुचित ध्यान दिया जाता है।



समता युवा संघ

युवकों के संगठन स्वावलम्बन और सुसंस्कार के लिए क्रियाशील है– युवासघ। बेरोजगार युवको को ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराने तथा धार्मिक शालाओं का संचालन युवा सघ द्वारा किया जा रहा है।

श्री समता प्रचार संघ

स्वाध्याय, सेवा और समर्पण के धनीजनों की सस्था श्री समता प्रचार संघ के माध्यम से पर्युषण पर्व पर सत सती वर्ग से वंचित क्षेत्रो मे सेवा की व्यवस्था है। श्री उमरावमल बम्ब, टोक व उनके परिजनो तथा श्री दीपचन्द भूरा देशनोक द्वारा स्थापित स्व आचार्य श्री श्रीलालजी म सा स्मृति निधि से इस कार्य हेतु धन प्राप्त हुआ है। श्री धर्मचन्द्र पारख, नोखा ने ' श्री मूलचन्द पारख स्मृति स्वाध्याय पुरस्कार, स्थापित करने का स्तुत्य कार्य किया है। श्री मूलचन्द पारख (हिगुणिया वाला) स्मृति स्वाध्याय निधि भी इस पवित्र-प्रवृत्ति की ओर प्रवृत्त है।

श्री समता सरिता दस्साणी सेवा निधि

संघ द्वारा सत सती और वैरानी वैरागिन भाई बहिनो की विहारादि व्यवस्था हेतु श्रीमती रतनदेवी दस्साणी मातु श्री भवरलालजी दस्साणी बीकानेर हाल कलकत्ता के सहयोग से एतदर्थ निधि स्थापित।

महिला समिति

श्री अ भा. सा जैन महिला समिति ने महिलाओ मे शिक्षा, सस्कार व स्वावलम्बन के कार्यो को कुशलतापूर्वक सचालित किया है।

साहित्य पुरस्कार

साहित्य पुरस्कार के क्षेत्र मे प्रतिवर्ष स्व प्रदीप कुमार रामपुरिया साहित्य स्मृति साहित्य पुरस्कार एव स्व चम्पालाल साड स्मृति साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता का आयोजन संघ द्वारा किया जाता है जिनमे विजेताओ को क्रमश. 31 हजार एवं 21 हजार रुपयो का नकद पुरस्कार एव प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

श्री समता जन कल्याण प्रन्यास

सघ द्वारा गभीर रोगो के आक्रमण से स्वधर्मी बन्धुओं की रक्षा और उनके सहयोग हेतु इस प्रन्यास की स्थापना की गई है। स्थानीय सघो के पदाधिकारियों तथा चिकित्सको की अनुशसा से सहायता राशि प्रदान की जाती है।



आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण संस्थान नानेशनगर (दांता)

ग्रामीण अचल मे आचार्य श्री नानेश की जन्म भूमि दाता मे इस सस्थान की स्थापना की गई है। जिसका मूल उद्देश्य आचार्य श्री के उपदेशो एव उनके दर्शन को विकसित एव प्रचारित करना तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि मे प्राचीन गुरुकुल परम्परा के अनुरूप छात्रो मे बौद्धिक चारित्रिक एव शारीरिक विकास कर जैन जगत को ऐसे रत्न प्रदान करना, जिससे सामाजिक चेतना, समता दर्शन एव जैन सिद्धान्तो को प्रचार प्रसार हो।

श्री अ. भा. समता बालक मण्डली

सवत् 2039 मे, सघ अधिवेशन के समय अहमदाबाद मे स्थापित इस बालक मण्डली का अल्पकाल मे ही खूब विकास व विस्तार हुआ है।

जीवदया प्रवृत्ति

सभी जीव जीना चाहते है, कोई मरना नही चाहता। अहिसा प्रधान सिद्धान्तो को मूर्तरूप दिये जाने मे राष्ट्र मे व्यापक रूप से फैलती जा रही हिसक प्रवृत्तियो, कत्लखाने, मत्स्य पालन, कुक्कुट शालाओ एव अण्डो आदि का विरोध करना तथा विभिन्न स्थानो पर सचालित गौशालाओ जीव रक्षा के कार्यो मे सहयोग करना सघ का प्रमुख लक्ष्य इस प्रवृत्ति के अन्तर्गत रखा गया है।

व्यसन मुक्ति एवं सस्कार जागरण

व्यसनो की बढती प्रवृत्ति को रोकने तथा इन व्यसनो से होने वाली हानियो की जानकारी देने हेतु व्यापक प्रचार-प्रसार। पोस्टर्स साहित्य आदि के माध्यम से जन-जन मे जागृति लाना, विद्यालयो/महाविद्यालयो मे व्याख्यानमालाओ, सगोष्ठियो के आयोजन कर अधिकाधिक छात्रो को प्रेरित करना, सकल्प पत्र भरवाना आदि का लक्ष्य निर्धारित।

संघ निधियां

सघनिष्ठ दानी मानी महानुभावो द्वारा स्थापित निधियो मे उल्लेखनीय है – श्री रजना-अजना श्री ज्ञान-वृद्धि कोष, श्री राणीदानजी पारख शिक्षा दीक्षा फड, श्री छात्रावास निधि, श्री शुभ स्वधर्मी सहयोग, श्री जीवदया, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन सेवा सघ, श्री खाचरौद विद्यालय खाचरौद, श्री बालचन्द जी श्री श्रीमाल थैली भेट, श्रीमती जेठीदेवी काकरिया स्वधर्मी सहयोग फड, श्री जवाहराचार्य प्रकाशन निधि, श्री पद्मा श्री प्रकाशन निधि, श्री भीखम चन्द दीप



चन्द भूरा साहित्य प्रकाशन व स्वाध्याय निधि, श्री साहित्य प्रकाशन, श्रीमती बालूदेवी सूवादेवी साड स्मृति धार्मिक शिक्षण साहित्य निधि, श्री मागीलाल मिन्नी साहित्य प्रचार निधि, श्री मेघराज जी हीरावत स्वधर्मी सहायता निधि, श्री शाकाहार प्रचार प्रसार निधि। शिक्षा दीक्षा फण्ड, जीवनराम सिघी ट्रस्ट स्थाई फण्ड, श्रीमती चेतन कुमारी भसाली धर्मपत्नी श्री भीखमचन्द जी भंसाली स्मृति फण्ड, जय गोलछा सयम सेवा निधि।

जैन आर्ट प्रेस

सघ द्वारा सचालित। कार्य सक्षम। सुचारु रूप से सचालित, संघ प्रकाशनो का सबल मुद्रणाधार।

संघ कार्यालय

कार्य सचालन सुचारूता, नियमितता, स्तरीय पूर्ण दैनन्दिन सघ कार्यो व दायित्वो का निर्वहन। लेखा व्यवस्थापन व 'श्रमणोपासक' के प्रबन्ध वितरण व साहित्य सवर्द्धन संपादन रत।

विश्वस्त–मंडल

(BOARD OF TRUST)



श्री चम्पालाल जी डागा,	गगाशहर
श्री धनराज जी बेताला,	जयपुर
श्री उमरावसिह जी ओस्तवाल,	बम्बई
श्री पुखराजजी बोथरा,	अहमदाबाद
श्री शातिलाल जी सांड,	बेगलौर
श्री किशनसिह जी सरूपरिया,	उदयपुर
श्री पकज जी बोहरा,	पीपलियाकला
श्री हुक्मीचद जी खिवेसरा,	बम्बई
श्री नेमीचन्दजी तातेड,	दिल्ली

महामत्री

श्री सागरमल जी चपलोत,	निम्बाहेडा

मंत्री

श्री कन्हैयालालजी भूरा,	कूचबिहार
श्री प्यारेलाल जी भडारी,	अलीबाग
श्री कालूराम जी नाहर,	ब्यावर
श्री इन्दरचन्द जी बैद,	भीलवाडा
श्री अनूपचदजी सेठिया,	कलकत्ता
श्री भवरलाल जी ओस्तवाल,	ब्यावर
श्री धीरजलाल जी मुणत,	रतलाम
श्री कमलचन्द जी सिपानी,	बेगलौर
श्री शातिलाल जी माडावत,	मगलवाड चौराया
श्री अशोक कुमार जी " जैन रगवाला "	नीमच
श्री वीरेन्द्र कुमार जी कोठारी,	उज्जैन

कोषाध्यक्ष

श्री जयचन्दलाल जी सुखानी,	बीकानेर

सयोजक
कार्यालय व्यवस्था समिति

श्री सुरेन्द्र कुमार सेठिया,	बीकानेर



श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति के सदस्यों की सूची वर्ष 1996–97

1.	श्री धीरजलाल मूणत, रतलाम	संयोजक
2.	श्री गणपतराज जी बोहरा, पीपलियां कला	सदस्य
3.	श्री पी. सी चौपडा, रतलाम	सदस्य
4.	श्री सरदारमलजी कांकरिया, कलकत्ता	सदस्य
5.	श्री भंवरलालजी कोठारी, बीकानेर	सदस्य
6.	श्री सुजानमलजी वोरा, इन्दौर·	सदस्य
7	श्री समाज सेवी मानव मुनि जी, इन्दौर	सदस्य
8.	श्री चम्पालाल जी फिरोदिया (मामाजी), रतलाम	सदस्य
9.	श्री गजेन्द्रजी सूर्या, इन्दौर	सदस्य
10.	श्री वीरेन्द्र सिंहजी लोढा, उदयपुर	सदस्य
11	श्री सुरेन्द्रजी बोरदिया, प्रतापगढ,	सदस्य
12.	श्री धूलजी भाई, गुराडिया	सदस्य
13.	श्रीमती शान्ता देवी मेहता, रतलाम	सदस्य
14.	अध्यक्ष, श्री अ. भा. सा जैन संघ,	पदेन सदस्य
15.	महामंत्री, श्री अ भा. सा. जैन सघ,	पदेन सदस्य

श्री प्रेमराज गणपत राज धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीप नगर, रतलाम, समिति के सदस्यों की सूची वर्ष 1996–97

1.	श्री पी. सी चौपडा, रतलाम	संयोजक
2.	श्री गणपतराज जी बोहरा, पीपलियां कला,	सदस्य
3.	श्री मगनलालजी मेहता, रतलाम	सदस्य
4	श्री कोमल सिह कुमट, दिलीप नगर	सदस्य
5.	श्री विजेन्द्र कुमार पीतलिया, रतलाम	सदस्य
6.	श्री समाज सेवी मानव मुनिजी, इन्दौर	सदस्य
7.	श्री चम्पालालजी फिरोदिया (मामाजी) रतलाम	सदस्य
8.	श्री सुजानमल जी चाणोदिया, रतलाम	सदस्य
9.	श्री सुरेन्द्र बोरदिया, प्रतापगढ	सदस्य
10.	अध्यक्ष, श्री अ. भा. सा जैन संघ	पदेन सदस्य
11	महामंत्री, श्री अ भा सा जैन संघ	पदेन सदस्य






खण्ड 2

धर्म और धर्मपाल

धर्मपाल प्रवृत्ति से मानव सेवा और आत्म कल्याण

आचार्य श्री नानेश

परिपूर्ण आत्मिक निर्मलता को प्राप्त कर वीतराग देव ने जिन सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया, वे सिद्धान्त सभी के लिए हितकर, मगलकर एव कल्याण कर है। वीतराग सिद्धान्त गुण एव कर्म के आधार पर ही प्रतिपादित हुए हैं। उनमे छुआछूत या क्षुद्रता के बर्ताव का कही निर्देश नही है।

वीतराग देव के उपासको को गुण एव कर्म मे विश्वास रख कर सभी मानवो के साथ अत्मीय दृष्टि का विस्तार करना चाहिए। उन्हे छुआछूत के भूत को दूर रख कर अपनी मानवता एव नैतिकता को कायम रखकर सभी के साथ आत्मीय भाईचारे का व्यवहार करना चाहिए क्योकि मानव-मानव के प्रति क्षुद्र या क्षुद्रता-ऊच नीच का व्यवहार करना एक मानवीय अपराध है।

वीतराग देव के सिद्धात तो हमे यह प्रेरणा देते हैं कि –

सव्व भूयप्प भूयस्य, सम्म भूयाइ पासओ ।

सभी प्राणियो को अपनी आत्मा के समान देखने वाला साधक उनकी हिसा से उपरत रहकर सब पाप कर्मो के बन्धनो से मुक्त हो जाता है।

सब प्राणियो को अपनी आत्मा समान देखो – यह प्रभु की वाणी तो प्राणी वर्ग के साथ आत्म दृष्टि जोडने की ओर आग्रह करती है जबकि आज के कुछ उपासक मानव-मानव के प्रति अनात्मीयता-छुआछूत की भावनाए फैलाकर एक कुत्सित दृष्टि का विकास कर रहे है बडी सोचनीय बात है।

आज से करीब 20 वर्ष पूर्व इसी रतलाम नगरी का चातुर्मास सम्पन्न कर मैंने खाचरोद, नागदा, मक्सी, गुराडिया, आदि क्षेत्रो मे विचरण किया। विचरण काल मे तत्कालीन बलाई जाति के अग्रगण्य सीताराम जी से मिलना हुआ। सीताराम जी ने छुआछूत से आहत अपने मन की गाठे खोलते हुए मुझ से कहा कि – क्या हम अब गौरक्षक से गौभक्षक बन जाऐ ? क्या हम ईसाई या मुसलमान बन जाय ?

मैंने कहा – भाई ! तुम यह बात कर रहे हो जिस आर्य सस्कृति मे तुम जन्मे हो उस आर्य सस्कृति को छोडकर अनार्य बनने की क्यो सोच रहे हो ?



सीताराम जी ने कहा – महाराज ! हम क्या करे ? हम से लोग छुआछूत करते हैं, हम कोई रोटी या बेटी मांगे तो नहीं देते है। हम तो केवल यही चाहते हैं – मानवीय धरातल पर सबको एक समान जीने का अधिकार है। किसी को अछूत समझ उसे तिरस्कृत करना यह हम नही चाहते। मैने सीताराम जी से कहा – लोग आपसे जो घृणा करते हैं वह सभी दुर्व्यसनो के कारण करते हैं। आप लोग जिन दुर्व्यसनों शराब, मास आदि का सेवन करते है, उन सभी दुर्व्यसनों को छोडकर निर्व्यसन, सात्विक जीवन जीने का अभ्यास करें। लोग आपसे प्रेम करने लग जायेंगे।

मैने मेरी बात विस्तार से समझायी। सीताराम जी व उन के सहयोगियो को लग गई। उन्होंने उसी समय यह प्रतिज्ञा कर ली कि हम आज से किसी प्रकार के दुर्व्यसन का सेवन नही करेगे। मैंने उनको प्रतिज्ञा दिलवाई। आगे सीताराम जी ने कहा आचार्य श्री आपने मुझे तो यह प्रतिज्ञा दिलवा दी पर हमारी जाति की एक लाख की संख्या है और हम जिस राह पर चलते हैं, एक साथ चलते है मेरे अनेक साथी यहा नहीं है यहां से निकट गुराडिया ग्राम मे विवाह के प्रसंग से अनेक गांवो के पंच इकठ्ठे है।

आप मेरे साथ पधारिये। वहां गांव-गाव के सैकडो की संख्या मे लोग एकत्रित है, उन्हें इन व्यसनो से मुक्त कराइये। आप श्री का उपदेश एवं मेरा परिचय यह सब कुछ कर बतायेगा। मै अपने अन्य सहयोगी संतों को किसी बडे क्षेत्र मे छोडकर एक संत को लेकर सीताराम जी के साथ उस गांव में पहुंचा उन्हें उपदेश देकर उनको दुर्व्यसनो से मुक्त करवाया। इसी तरह आगे अनेक गांवों में मैने परिभ्रमण किया। एक अभियान छिड गया। गांव के गांव प्रेरणा पाकर दुर्व्यसनो का परित्याग करने लगे। करीब 3 या 4 माह तक मैंने प्रांत मे भ्रमण किया। उस समय लोगों ने निर्व्यसन जीवन जीने की प्रतिज्ञा लेने वालो की सख्या का आंकडा निकाला तो करीब 15 हजार की सख्या सामने आयी। अब उन लोगों ने इस तरह सात्विक जीवन की प्रतिज्ञा ले ली फिर भी उनकी समस्या रही कि लोग हमे अब भी बलाई जाति से पुकार रहे हैं तो यह बलाई जाति का काला तिलक हमारे सिर पर लगा रहेगा तब तक हम अपने आप मे उच्चता का अनुभव नही कर सकेगे। अत. आप इस काले तिलक को हटा दो। मै उस समय धर्मनाथ भगवान की प्रार्थना के माध्यम से प्रवचन प्रारम करता था तो मेरे मन मे उन भाइयों के प्रति स्फुरण हुई और मैंने उनसे कहा कि आप धर्मपालन करने को उद्यत हुए जिस धर्म को दुर्व्यसनो मे पडकर मुला दिया। अब पुनः उन दुर्व्यसनो को छोडकर धर्म पालन की आपने प्रतिज्ञा ली है तो आज से अपने आप को " धर्मपाल " नाम से संबोधित करे। तब से बलाई जाति का काला तिलक हटाकर उन्होंने अपने आप को धर्मपाल नाम से संबोधन करना



शुरू कर दिया।

प्रारभ मे मैने यह कल्पना नही की थी कि ऐसा युगान्तरकारी परिवर्तन हो जायेगा, केवल यही सोचा था कि इन दलितो को भी अपने उत्थान का अवसर मिलना चाहिए। बाद मे अ भा साधुमार्गी जैन सघ के कार्यकत्ताओ ने इनकी ओर ध्यान दिया। अपने इन बिछुडे भाइयो से मिलकर एक क्रातिकारी कदम मे अपने आपको संयोजित कर दिया। संघ के तत्कालीन मत्री श्रीमान् जुगराज जी सेठिया एक बार धर्मपालो के बीच पहुचे और सकुचित होने वाले धर्मपाल बन्धु को बाह मे भर कर उठा लिया और गले लगा दिया। यह दृश्य देखकर मैने सोचा कि प्रभु महावीर के सिद्धान्तो को समझने वाले आज भी मौजूद है।

सघ के कार्यकर्त्ताओ ने अपना कर्त्तव्य समझा और उनके बीच मे पुन. पुन. जाकर, पदयात्राए करके उनको समझाया। सघ की उच्च घरो की महिलाए भी उनके घरो मे पहुची। कैसे पानी छानना, कैसे व्यर्थ की हिसाओ से बचना, कैसे जीवो को अभय दान देना आदि व्यवहारिक बातो से कैसे सहज ही धर्म कमाया जा सकता है। इन बातो से परिचित कराकर उन्होने इन गिरे हुए परिवारो को ऊपर उठाने का अपना दायित्व समझा। पूर्व मे श्रीमान् गेदालाल नाहर, हीरालालजी नादेचा, गोकुलचन्द जी सूर्या आदि कतिपय सघ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओ ने और वर्तमान मे श्रीमान् गणपत राज जी बोहरा, पी सी चौपडा, समीरमल जी काठेड, गुमानमल जी चोरडिया, भवरलाल जी कोठारी एव दीपचद जी जैन (जिन्हे विनोबा जी ने मानव मुनि के नाम से सबोधित किया) चम्पालाल जी पिरोदिया (मामाजी) आदि अनेक महानुभावो का इस रचनात्मक प्रवृत्ति मे शुभ भावो का जो योगदान है, वह अन्यो के लिए अनुकरणीय है। एक मास भक्षी व्यक्ति से यदि कोई अभक्ष्य छुडवाता है तो वह कितने जीवो को अभयदान देता है ? कितनी तडपती आत्माओ को कुछ समय के लिए मृत्यु भय से मुक्त करवाता है। यह तो एक व्यक्ति की बात हुई पर जहा अनेक व्यक्तियो – हजारो व्यक्तियो से मास मदिरा आदि दुर्व्यसनो को छुडवाना और उसमे सहयोग देना कितना बडा प्रशस्त कार्य है। जब कोई प्रवृत्ति या कार्य चलता है तो उसमे कुछ न्यूनताएं, त्रुटिया रह जाया करती हैं। सहृदय व्यक्तियो का उस समय कर्त्तव्य हो जाता है कि वे उनकी आलोचना-प्रत्यालोचना आदि नही करते हुए उन त्रुटियो, न्यूनताओ को कैसे दूर किया जाय इस ओर परामर्श देवे। आलोचना करने से कार्यकारी बन्धुओ मे कुछ ऊचे नीचे परिणाम आ जाते हैं वे उदासीन व हतोत्साही हो जाते हैं। अत. उपस्थित जन समूह से यही सशोधन है कि आप अपने इन बिछुडे हुए भाईयो को आत्मीय भावना से गले लगाये, इनके पवित्र उद्धार मे सहयोगी बने। यदि ऐसा नही बन सके तो कम से कम



इस कार्य की आलोचना तो न करे।

आज हमारी आंखो के सामने जो धर्मपाल समाज संरचना का चित्र उपस्थित है। इस पर आप कल्पना करिये कि इस कार्य ने अप्रत्याशित उन्नति के साथ अनेक विशाल आयामो का सस्पर्श किया है। गाधी जी एव विनोबा जी ने भी अछूतोद्धार का अभियान छेडा था। उनके साथ तो सम्पूर्ण राष्ट्र की सत्ता थी, पर यहा कोई राजनेता या राष्ट्रीय सत्ता का प्रसंग नही है। यहा तो केवल उपदेशो के द्वारा मानस परिवर्तन के साथ स्वयं से उन दुर्व्यसनो के प्रति घृणा करवा कर आगे बढाने का सत्प्रयास है। आप तुलनात्मक अध्ययन करेगे तो स्वत. सारी स्थिति का परिज्ञान हो जावेगा।

आज यह आवश्यक हो गया है कि कि सारा समाज एक जुट होकर इन भाइयो को अपना भाई समझ कर इनको उन्नत पथ पर आगे बढने का सहयोग दे।

इन्दौर चातुर्मास मे धर्मपाल समाज का प्रथम अधिवेशन संघ के कार्यकर्त्ताओं ने आयोजित किया और उसमे मध्यप्रदेश के तत्कालीन गर्वनर श्री पाटस्कर जी भी उपस्थित हुए। मै उस समय सिक्खों के स्कूल मे ठहरा हुआ था, पाटस्कर जी कार्यक्रम से निवृत हो मेरे पास आये और बडे भावुक होते हुये कहने लगे –

महाराज साहब ! आज ऐसे धर्म एव धर्म गुरुओ की आवश्यकता है जो बिछुडे हुए हृदयो को मिलाने का काम करे। मैंने पाटस्कर जी से यही कहा– हम तो हमारी सयम जीवन की मर्यादाओं मे ही रहकर केवल उपदेश के द्वारा उनके मानस बदलने का काम कर सकते है पर उससे आगे की भूमिका का निर्वहन समाज एव राष्ट्र के कर्णधार ही कर सकते हैं। वे यदि दलित मानव जाति का उत्थान चाहे तो मै आज भी आत्म विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि लाखों की संख्या मे दुर्व्यसनो मे पडे हुए मानवो का उत्थान हो सकता है और जो गौरक्षक से गौभक्षक बन गये हैं, उनमें भी परिवर्तन लाया जा सकता है। यह कार्य भी मै अपनी ग्रहित मर्यादाओं मे रहकर ही करू पर संभालने वाला कोई ठोस धरातल न हो तो वह कैसे क्या बन सकता है। इस बात पर पाटस्कर जी भी मेरे से सहमत हो गये और उन्होने कहा कि पूरा मानव समाज यदि ऐसे रचनात्मक कार्यो को हाथ मे ले ले तो देश की एवं मानव जाति की सही अर्थो मे सेवा हो सकती है।

इसी तरह दुर्ग मे तत्कालीन म. प्र. विधान समाध्यक्ष श्री काशीनाथ पांडे मिले। उनसे भी इस संबंध मे वार्तालाप हुआ, उनसे भी कहा गया कि आप लोग अपने कर्त्तव्य को सोचे हम मर्यादाओ में आबद्ध रहकर कुछ कर सकते हैं पर



ागे का कार्य समाज एवं राष्ट्र का है। वह यदि इस कार्य के प्रति दिलचस्पी ेने लग जाय तो एक ऐतिहासिक युगान्तरकारी परिवर्तन आ सकता है। मय-समय पर इस सदर्भ मे राजनेताओ व समाज नेताओ का ध्यान आकर्षित रने की आवश्यकता है। सच तो यह है कि यह धर्मपाल प्रवृत्ति सारे विश्व टल पर रखने योग्य प्रवृत्ति है, इसमे किसी प्रकार का सकोच नही होना ाहिये।

अन्त मे मै धर्मपाल बन्धुओं को प्रेरणा स्वरूप यही कह रहा हू कि आपने जेस संस्कारित जीवन जीने की प्रतिज्ञा ली है, इसके विपरीत अब कोई भी ाख कह दे कि इन दुर्व्यसनो का सेवन करो, क्या पडा है धर्म कर्म मे? ाओ-पीओ मौज करो। ऐसी स्थिति मे आप लोगो को उन व्यक्तियो की बातो े आकर अपनी प्रतिज्ञाओ से फिसलना नही है। प्राण जाए पर प्रण नही जाए ी कहावत के अनुसार आप कैसी भी विपत्ति-आपत्ति मे पड जाये पर जिन ुच्छ वस्तुओ को आपने छोड़ दिया है, उनको ग्रहण करने की इच्छा नही करे।

आप लोग ऐसा सादा एव सरल सात्विकतापूर्ण जीवन जीने का प्रयास रे, जिससे सारे राष्ट्र मे आप सबसे अलग ही नजर आए। आपके वर्तमान जीवन का रहन-सहन, खान-पान एव आचरण अच्छा बन गया तो फिर आत्म ाधना सरल एव सुगम बन जाएगी। आत्म कल्याण की दिशा मे आगे बढते ले जायेगे।

साध्य का निर्धारण साधना से पूर्व होना आवश्यक है। साध्य का निर्धारण हुए बिना साधना की भी कैसे जा सकती है अर्थात् साध्य विहीन साधना तेली के बैल की तरह केवल भटकाव रूप व्यर्थ श्रम ही सिद्ध हो सकती है। इसलिये साधक को साधना मे गति करने के पूर्व अपना लक्ष्य अवश्य निर्धारित कर लेना चाहिये।

—युवाचार्य श्री राम मुनि



अमोघवाणी से उद्भूत धर्मपाल क्रांति

युवाचार्य श्री राममुनिजी

(12.9.97 के दिन अमृत कुंज रतलाम में परम पूज्य युवाचार्यजी के श्रीमुख र
प्रवाहित और संकलित अमृतवाणी)

वासूपूज्य जिन त्रिभुवन, घन नामी, परनामी रे
णाणस्स सत्वस्स... .. . . ..

चरम तीर्थेश प्रभु महावीर का यह दिव्य शासन जयवंत है।

अनादिकाल से यह आत्मा चतुर्गति मे भ्रमण करते हुए अनेक नाम धरार है अनेक देहो को धारण किया है और बाहर ही बाहर घूमने की इसकी आदर सी बन गई है और जब तक बाहर घूमता रहेगा त्रिभुवन स्वामी नहीं बन पाएगा घननामी अवस्था भी नही मिल पाएगी। कभी व्यक्ति सोचता है अपने नाम वं बारे मे पर अब तक हमने कितने नाम धराये। नाम बदलते ही जाते है जन्म वे समय नाम रखा वह अलग, बोलते वह नाम अलग, स्कूल मे बोलते वो अलग दीक्षा ले ली वो अलग नाम। इस जन्म मे इतने नाम तो पहले के जन्मो मे कितने नाम धराये ? कितने महीनो, दिनो, वर्षो तक यह नाम रह पाता ? जब तक जिन्दा है अपने नाम को सुनकर प्रफुल्लित होता है। नन्दन मणिहार की आत्मा पहले श्रावक जीवन मे थी। बाद मे श्रावक जीवन मे स्खलित हुआ व लोकोपकार के काम करने लगा। बावडियॉ बनाई, दानशाला बनाई, इससे लोगो मे प्रशसा उसकी होने लगी तो उसे जीवन मे रस आने लगा। उससे पहले उसे श्रावक व्रत में जीवन नीरस लगने लगा था। पौषध करते हुए उसके मन में विचारणा हुई कि ये क्या धर्म है ? इतना भूखा रहू, भयंकर प्यास लगी है। पानी के बिना तडफ रहा हूं, ये भी कोई सुख प्राप्ति का उपाय है। इन पौषध आदि मे क्या पता कुछ फल मिलेगा या नही ? नदन मणिहार को धर्म मे विचिकित्सा पैदा हुई। शका, कांक्षा, विचिकित्सा आदि सम्यक्त्व के दूषण है ?

शका होती है सिद्धान्त के विषय मे और विचिकित्सा होती है। धर्म क्रिया के विषय मे कौन जाने इतना धर्म कर रहा हूं, इसका फल भी कुछ होता होगा या नही ? इतनी सामायिके की फिर भी सम्पत्ति मिली नही, दुकान चली नहीं इस प्रकार से विचिकित्सा होती है। नंदन मणिहार को भी विचिकित्सा हो गई और वह धर्म क्रिया से च्युत होकर पुण्य संपादन के कार्य में लगा है। बावडी, बगीचे, बनाये उसी मे मन रमने लगा, उसी मे उसके अध्यवसाय चलने लगे तो परिणाम यह हुआ कि उसी मे आयुष्य बंध हुआ और मरकर बावडी में मेंढक के



रूप मे पैदा हुआ।

वासुपूज्य भगवान को धननामी कहा है, क्यो ? यह आत्मा संसार मे अनेक रूप धारण करती है। कभी तो कुजर बनी तो कभी वह उससे भी कम अगुल के असख्यातवे भाग जितनी अवगाहना (देह) मे भी रही।

सकोच और विस्तार जैसा-जैसा शरीर मिला वैसा-वैसा वह करती रही पर धननामी अवस्था जिसमे संकोच व विस्तार नही होता जब तक कर्मा का लेप पडा है तब तक सकोच विस्तार होता रहता है। उस समय आत्मप्रदेश पोलार के रूप मे होते हैं, पर धनीभूत हो जाने पर फिर उसमे सकुचित विस्तारिक भाव नही होता । शैलेषी अवस्था मे आत्मा इतनी धनीभूत, सगीन हो जाती है कि उस समय फिर और सकोच नही हो सकता।

बार-बार एरण पर हथौडी पडती रहे तो भी एरण का अश नही निकलता पर हथौडी टूट भी जाती है और उसमे क्षीणता भी आ जाती है।

एक फैक्ट्री मे रूकने का काम पडा तो सतो ने देखा वहा एक तरफ बहुत से हथौडे टूटे पडे है। सतो ने पूछा– आपकी फैक्ट्री मे हथौडे बनते हैं क्या? तो कहा नही, हथौडे नही बनते परन्तु यहा पर हथौडे से कुटाई होती है। इस कारण बार-बार काम मे आने से हथौडे के नीचे के भाव टूट जाते हैं या अन्य कुछ टूट-फूट हो जाती है। तो फिर ये काम मे नही आते इसलिए ये बेकार हथौडी का ढेर लगा है। एरण का ढेर वहा नही था, हथौडो का था। ऐसा क्यो?

बन्धुओ ! एरण को बार-बार बदलना नही पडता, हथौडो को बार-बार बदलना पडता है। जो सहता है उसे बार-बार बदलने की आवश्यकता नही पर जो दूसरे को कूटता है उसका अस्तित्व ज्यादा समय तक नही रहता। एरण की तरह हम अपने को धनीभूत बनाये। एरण का बिगाड नही, हथौडे का बिगाड होता है। अत आत्मा भी जब अपना उत्थान करके एरणवत् धनीभूत बन जाय तो ऐसी अवस्था आ जाएगी जिसमे कोई परिवर्तन नही होता कोई विकार प्रविष्ट नही होता।

दूध कैसा होता है? दूध तरल होता है क्योकि उसमे पानी का भार होता है, उसे चूल्हे पर चढा कर मावा बनाने वाले खुरपा चलाते रहते हैं कि नीचे जम नही। और इस प्रक्रिया के बाद वह मावा बन जाता है। उसको धनीभूत अवस्था प्राप्त हो जाती है। उसकी धनीभूत अवस्था मे भी मुलायमपना हैलाकि रहता है पर एक देशीय उदाहरण है कि पानी जला देने पर दूध का मावा रूप धनीभूत बन जाता है। वैसे ही तपस्या के द्वारा आत्मा से कर्म अलग हो जाते हैं तो आत्मा की धनीभूत स्थिति होती है। वासुपूज्य भगवान ने वही धननामी अवस्था



पाई। यह साधना एक ही साथ नहीं सध जाती बल्कि इसमें समय लगता है सुबाहु कुमार की आत्मा ने कितने जन्मों में उत्थान की अवस्था पाई? 15 भव लगेंगे, यात्रा में पडाव करते हुए वे सिद्धि को प्राप्त कर पायेंगे। भगवान महावीर की आत्मा ने नयसार के भव में यात्रा प्रारम्भ की। कई बार ऊपर उठे। कोई आम्र वृक्ष हो, फल ऊचाई पर लगे तो कोई व्यक्ति फल खाना चाहता है तो थोडी हिम्मत करता है, कुछ ऊपर चढकर फिर नीचे गिर जाता है। और इस तरह बार बार कभी चढे कभी गिरे और अंत में पूर्ण हिम्मत/उत्साह जगा तो वह फल पा जाता है। वैसे ही भगवान महावीर की आत्मा भी मोक्ष रूपी फल को पाने के लिए कई बार ऊपर चढी, फिर गिरी फिर नजदीक गई, फिर गिरी, ऐसे करते-करते अंततः वे फल पा ही गए। आत्मा को धननमी बनाने के लिए तप आवश्यक है, अनशन आदि तप बताये हैं। अनशन एक तप है जो के अंतर में प्रवेश करने का प्रारंभिक रूप है। आप कहेंगे अनशन तो बाहरी तप है इससे तो अंतर में प्रवेश कैसे होगा ? अंतर मे प्रवेश तो आभ्यन्तर तन से होगा?

बन्धुओ! अगर मन मे ऐसी धारणा हो तो निकाल देनी चाहिए क्योंकि ये बाह्य तप कहा है न कि सिर्फ बाह्य फल देने वाले। ये तप बाह्य होकर भी चरम अंतरंग स्थिति तक पहुंचाने वाले हैं।

जैसे एक लोह के एंगल को लिया व उसको गोल बनाया तो दोनो छोर आकर आस-पास में मिलेगे। अनशन अन्+शन= जिसमे कुछ आहार नही लेना। अनशन से प्रारंभ की गई यात्रा अनाहारक अवस्था में पूर्ण होती है।

कायोत्सर्ग में सिद्धि अवस्था मे खाना छोडते नए-नए, अभ्यास अगर निरन्तर बनता चला गया तो एक दिन परिपूर्ण, अनाहारक अवस्था भी मिल जाएगी।

यह अनशन अनाहारक अवस्था रूप मिलाने की प्रक्रिया है। बीच मे कई बार सकोच और विस्तार की अवस्था बनती है पर निरन्तर तप आदि पुरुषार्थ करें तो आत्मा धननामी अवस्था प्राप्त कर लेती है।

व्यक्ति अपने जीवन मे भी देखता है कि कितने संकोच, विस्तार, उतार-चढाव आते हैं।

एक सम्राट बैठे है दरबार मे और बात चलती है कि सबसे बुद्धिमान कौन होता है? (श्रोताओ से) आप भी तो बोलिये बुद्धिमान कौन ?

एक श्रावक- विवेक रखने वाला।

दूसरा श्रावक- जो अपने लक्ष्य को साधे।

युवाचार्य श्री- प्रथम बुद्धि बाणियो। यह नीतिकारो ने कहा है। यहा बैठने



वाले कौन है ? "बनिये" सम्राट को भी जवाब मिला कि सबसे बुद्धिमान व्यापारी वर्ग होता है। वे तोलने मापने में, किसी को परखने मे माहिर होते हैं। सम्राट ने सोचा परीक्षा भी लेनी चाहिए कि वे बुद्धिमान होते हैं या नही ? वजीर को सम्मान दिया व कहा कि जौहरी जी मैने सुना कि व्यापारी बुद्धिमान होते है वे हर चीज का भाव तोल लगा लेते है क्या ये बात सही है। जौहरी ने कहा—हुजूर! यह तो कोई प्रसंग आवे तो पता चले। सम्राट ने अपने राजकुमार को सामने खडा किया व कहा—इसकी कीमत करिये। अब क्या लगानी है कीमत ? छत्तीस गढ वाले बोलो कि —महेश जी की कितनी कीमत ? (भाई लोग)—वे तो अनमोल हैं। जौहरी उलझन मे कि राजकुमार की कीमत कैसे लगाई जाय ? कहा—हुजूर ! थोडा समय चाहिए सोचने के लिए 24 घटे की मोहलत दे दी गई। बेचारा गया—कई तरह के व्यापारिक ग्रथ खोले व देखा कि राजकुमार की कीमत क्या है ? पर मिले कैसे ?

शाम के समय बडे बुजुर्गो के पास बैठा तो उन्होने उदासी का कारण पूछा। उसने सब बात बताई तो कहा घबराओ मत जब राजसभा मे जाओ तो मुझे साथ ले लेना। वह आश्वस्त हुआ व ले गया। राजा ने पूछा— बताओ राजकुमार की कीमत उस वृद्ध ने कहा—हुजूर बिना माल देखे कीमत कैसे लगाई जाय ? राजकुमार को हाजिर किया। उस व्यापारी ने राजकुार को चारो ओर से इधर—उधर घूम घूम कर देखा, हाथ, पैर, मुह सारे का निरीक्षण किया। आपको भी हीरा लेना हो तो सीधा चमक देख के नही लोगे। उसे ऊपर नीचे चारो तरफ से देखोगे। सोने को भी कसौटी पर कसकर तोलकर अनुमान लगाओगे। उस व्यापारी ने भी राजकुमार का पूरा निरीक्षण किया फिर कहा—इसके भाग्य मे क्या बदा है ? इसकी कीमत तो नही आकी जा सकती है क्योकि कहा है—

"त्रिया चरित्र पुरुषस्य भाग्य
देवो न जानति कुतो मनुष्य।"
पुरुष का भाग्य जाना नही जा सकता।
भाग्य की बात अलग है।

पर ये (भाग्य) नही हो तो इसकी कीमत मात्र दो आने है। कही मजूरी करने भेजो तो दो आने से ज्यादा नही मिले।

बन्धुओ ! राजकुमार की कीमत दो आने भी है पर हमारी कीमत क्या? हम आत्मा मे रागद्वेष आदि के द्वारा आत्मारूपी दूध को पतला करते जा रहे हैं। वह घनीभूत नही हो पा रही है पर वासुपूज्य भगवान ने कर्मो को हटाकर अपने को सकोच विस्तार से रहित घननामी बना लिया।



अभी धर्मपालों के विषय मे आपने सुना तपस्वीजी ने कहा कि–ये (धर्मपाल) तो बनाये गये हैं और हम बने हुए हैं। बन्धुओ! क्या आप बने हुए हैं? कोई भी व्यक्ति जन्म से कुछ बना हुआ नही होता। बनता है कर्म से। भगवान ने कहा है–

"कम्मुणो बंभणो होई, कम्मणो होइं खतिओ।
वइसो कम्मुणो होई, सुद्दो हवइं कम्मुणा।"

कर्म से कोई व्यक्ति जीवन को जैसा चाहे मोड सकता है। जन्म से कोई ब्राह्मण नही होता, कोई क्षत्रिय नही होता, बल्कि बाद मे जैसा वातावरण मिलता है, जिसमे वह ढलता है वैसे ही वह उस रूप मे कहा जाता है कि वह जैन है, यह मुसलमान है, यह ईसाई है, ब्राह्मण है, यह सिक्ख है। व्यक्ति जन्म से नही, कर्म से ही महान होता है। आचार्य भगवन् जब नागदा क्षेत्र मे गए तो वहा पर एक भाई ने बडे धीमे शब्दो मे निवेदन किया कि "हमारी जाति के एक लाख लोग है" गो हमारी संस्कृति का आधार है। गौरक्षण का, वहा पर मेरे भाई गोभक्षक बन गये है। हमसे लोग परहेज कर रहे हैं। हम कितने दिन तक घृणा सहन करेंगे ? आप हमारे गांव मे पधारे वहां हमारी जाति के 70 गाव के लोग हैं। इकट्ठे होगे उसमे आप प्रवचन देने की कृपा करे। उस भाई की विनती पर आचार्य देव वहा पधारे और धर्मनाथ भगवान की प्रार्थना से प्रवचन शुरु करके वहा उपस्थित गांव के लोगो के बीच व्याख्यान दिया। आचार्य देव ने उस प्रवचन मे नवकार मंत्र की व्याख्या की व कहा कि–ये मंत्र जाति–पाति का नहीं है। ये अपने जीवन का शुद्ध बनाने का मत्र है।

आपने तीर्थकर का इतिहास सुना होगा कि उनके एक ही उपदेश से मेघकुमार जगा, एवता कुमार जगा आदि।

कुछ वैसा ही महान रूप पैदा हुआ। गुरुदेव के एक ही व्याख्यान से वहा उपस्थित सारे जनसमूह ने मांस–मदिरा, अडे आदि के त्याग किये। वे तत्काल खडे हुए व प्रत्याख्यान किये व आज तक नियम पालन यथावत् कर रहे हैं। आचार्यदेव लगभग 3.50 महीने उन क्षेत्रो मे घूमते रहे व उस विचरण मे 17 हजार लोगों ने धर्मपाल जीवन अंगीकार किया। वे व्यक्ति तो बदल गये, पर जैनियों के क्या हाल है ? वे कही दुर्व्यसनों मे तो नही जा रहे हैं। जैनी भी सिगरेट पीते है, पान पराग खाते हैं।

अरे! मरने पर तो आपके पुत्र आपके मुह म आग लगायेंगे व धुआं निकलेगा पर तुम जीते जी क्यो खुद ही अपने मुह में आग लगाते हो ? ये क्या रूप है तुम्हारे जैनत्व का ? तुम उच्च कुल मे पैदा हुवे क्या तुम्हारे मुह मे यह धुआ व आग शोभा देती है? सिगरेट का धुऑ स्वय के लिए तो घातक होता ही



है। दूसरो के लिए भी कितना घातक होता है, उसके फेफडे सड जाते है, गल जाते है।

पान पराग जिसमे छिपकली का पाउडर गिरता है ऐसे पदार्थो को खाकर जैनी क्या तुम अपने आप मे गौरवान्वित होओगे?

उच्च कुल मे जन्म लेने से तुम ऊँचे नही बन गए बल्कि अपने आचरण से ही उच्च कुलीन कहलाओगे वर्ना अपने कर्मो का फल तो मिलेगा ही।

आचार्य भगवन् की उस अमोघ वाणी को सुनकर धर्मपाल क्राति हुई ओर उस समय सबसे पहले नाथूलालजी सेठिया ने आचार्य देव को कहा–गुरुदेव! मुझे स्वप्न आया है कि आपके हाथो से इसी वर्ष मे कोई शुभ काम होने वाला है और सपना सच भी हुवा। वह शुभ महान काम धर्मपाल उद्धार के रूप मे हुआ।

आचार्य देव जब दूसरी बार पुन मालवा पधारे तब गुराडिया ग्राम मे धर्मपाल भाईयो ने प्रतिज्ञा ली कि हम जो व्यक्ति मास मदिरा सेवन आदि कुव्यसन मे रहेगा उसके साथ रोटी–बेटी का व्यवहार नही करेगे। आचार्य देव ने कहा–तुम्हे स्वय को अपनी कमर कसनी होगी। इन सेठ लोगो के भरोसे मत बैठे रहना कि ये आयेगे और हमे संस्कार देगे बल्कि तुम स्वय तैयार होओ और एक व्यक्ति सस्कारी होकर हजारो को सस्कारित करे। और वही रूप नजर भी आ रहा है–धर्मपाल क्षेत्रो मे धार्मिक पाठशालाए चलती है उनके परिवार भी सस्कारित हो रहे है। मै भी अभी चार्तुमास से पूर्व गुराडिया गया था। वहा व्याख्यान देने का प्रसग बना और व्याख्यान मे ही एक बहिन खडी हो गई और अपनी तम्बाकू की डिबियो को तुरन्त निकाल फैका व वहा बैठे भाईयो को कहा– तुम भी त्याग करो तुम त्याग नही करोगे तो मैं एक–एक की पोल खोल दूगी और फिर धडाधड वहा पर भाई खडे हुए व त्याग किये। दुर्व्यसनो मे जो पैसा बहाया जाता है अगर वह बचाये तो बूद–बूद करते घट भरता है वैसे ही बहुत सा धन इकट्ठा हो सकता है और एक–एक बूद घडे से टपकने लगे तो घडा खाली भी हो जाता है।

एक भाई ने रतलाम मे 25 दीक्षा के वक्त से दुर्व्यसनो का पैसा बचाये तो आज उनके पास 5 हजार रुपये इकट्ठे हो गये। एक भाई (श्री नरसिगजी धर्मपाल) लामगरा निवासी इन बचाये गये पैसो से ही स्कूटर ले आया।

आचार्य देव एक बार अछोली (छत्तीसगढ) गाव पधारे वहा पर देखा बहुत लोग जाल से लेकर के जा रहे थे मछली पकडने।

कवरचदजी म सा को मन मे होने लगा–यहा लोग कितने पाप मे रचे हें। यहां तो रहना नही होगा। विश्राम की दृष्टि से आचार्य भगवन् वहा तक एक



चौतरे पर विराजे थे वहां आया एक ब्राह्मण देवता व आकर कहने लगा कि–महाराज! इस गावं के लोग बहुत पापी हैं। ये गायों का, सुअर का व बकरियों का मांस खा जाते है। ये सब बहुत खराब हैं। मैं तो ब्राह्मण हूं कोई मांस नही खाता, सिर्फ कबूतर का मांस खाता हूं।

ऐसे–ऐसे गांवों में भी आचार्य श्री ने सामाजिक क्रांति पैदा की व आज धर्मपालो के घरो मे देखें वहां अब गरीबी नही बन रही। उनके घर स्वच्छ व सुविधायुक्त होने लगे है। गरीबी उन्मूलन तभी हो सकता है जबकि व्यक्ति दुर्व्यसनों से दूर हटे। वर्ना सरकार कितनी ही गरीबी उन्मूलन के नारे लगा ले कुछ नही होने वाला है। बन्धुओ! जो व्यक्ति दुर्व्यसन छोडकर धर्मपाल बने है। उनके लिए सरकार क्या कार्य कर सकी है ? ऐसा सुना गया है कि जो व्यक्ति नव बौद्ध बने है उन्हे सरकार विशेष सुविधा देती है तो फिर जो धर्मपाल के रूप में नवीन जैन बने है उनके लिए क्या सुविधा दी गई है ? कई भाई धर्मपाल बनने से यो भी पीछे हटते है कि हमे सरकारी विशेष पदों मे जो आरक्षण आदि की सुविधा है वह नहीं मिल पायेगी। धर्मपालों को नव बौद्धो की तरह विशेष सुविधा दिलाने का कार्य समाज के बुद्धिजीवियों को करना चाहिए। पहले श्री समीरमजी कांठेड जावरा निवासी मौजूद थे तो उन्होने यह जवाबदारी ग्रहण की थीं। अब यह जिम्मेदारी किसे देवे ? आमसभा मे हिम्मत भाई कोठारी उपस्थित है, मै यह जवाबदारी उन्हे सौपना चाहता हूं कि वे धर्मपालो के लिए यथायोग्य कार्य करके धर्म प्रभावना मे सहयोगी बने। आचार्य देव का चातुर्मास इन्दौर था तब वहा पर मध्यप्रदेश के तत्वकालीन राज्यपाल श्री पाटस्करजी आये थे। उन्होने कहा–आचार्य श्री आपकी यह धर्मपालो के रूप मे की गई सामाजिक क्रांति बहुत ही श्रेष्ठ है। तब आचार्य देव ने कहा था कि मेरा काम है–मन को परिवर्तित करना। वह मैने किया है अब उसे सुरक्षित रखने का काम आपका है।

बन्धुओ! अपने जीवन मे रहे दुर्व्यसनों व विकारो को हटायेगे तो कर्मो से भी धीरे–धीरे मुक्त बनेगे व कर्मो से मुक्त होगे तभी संकोच व विस्तार से परे हटकर वासुपूज्य भगवान के समान धननामी अवस्था को प्राप्त कर पायेगे।

संकलनकर्ता– धीरजलाल मूणत, रतलाम

सूचना

*10 अक्टूबर का श्रमणोपासक **'धर्मपाल विशेषांक'** व 10 नवम्बर का श्रमणोपासक **'संघ अधिवेशन अंक'** होने के कारण २५ अक्टूबर का श्रमणोपासक बन्द रहेगा। पाठक कृपया ध्यान दें। असुविधा हेतु क्षमा चाहते है।*

-सम्पादक



मानव समाज के लिए महत्वपूर्ण कार्य

स्थविर प्रमुख शासन प्रभावक श्री ज्ञान मुनि जी म सा

उत्तराध्ययन सूत्र मे कहा गया है कि –

" आहारमिच्छे मिथमेसणिज्ज सहायामिच्छे निउणत्यबुद्धि।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्ग समाहिकामे समणे तवस्सी "

अर्थात् शाति की इच्छा रखने वाले व्यक्ति का आहार निर्दोष होना चाहिए। तत्त्व के अर्थ को जानने वाले निर्गुण बुद्धि वाले का सहयोग होना चाहिए। विवेक योग्य निकेत, स्थान होना चाहिए, तभी उसे शाति मिल सकती है।

सामाव्यजन को क्या-क्या प्राप्त करना आवश्यक है और वह कैसे प्राप्त हो सकता है ? साधु हो तो निर्दोष आहार एव नैतिकता का आचरण कर शाति प्राप्त कर सकता है। गृहस्थ अपने खान-पान को स्वस्थ बनाऐ। मन को सही रखना है तो तन को सही रखना होगा। अस्वास्थ्य वस्तुए शरीर मे नही जानी चाहिए। शराब, मास, इत्यादि इसानो के भक्षण हेतु है ही नही।

तुम्हारे को ऐसा सहयोगी चाहिए जो निपुणता की बुद्धि का हो, जिसकी बुद्धि निर्गुण हो आगे पीछे की सोच सके, ऐसा निर्गुण बुद्धि का सहायक तुम्हे मिल जाए तो जीवन आराम से कटेगा। सहयोगी गलत है तो सज्जन भी दुर्जन बन जाता है, सगत का असर पडता है। सहयोगी सपर्क अच्छा होना चाहिए। महावीर का सम्पर्क ऐसा है जिससे सम्पर्क मे आकर रोहिणी एव माली जैसे भी तर गऐ।

35 वर्ष पूर्व आचार्य श्री नानेश ने सम्प्रदाय की बागडोर समाली। मालवा मे विचरण चल रहा था। बलाई जाति के लोग जो गो-भक्षक बनने निम्नतम जीवन जीने की ओर अग्रसर हो रहे थे, उन्हे निष्णात बुद्धि वाले आचार्य श्री का सान्निध्य मिल गया। कगाल के हाथ कोहीनूर लग गया। स्वय आचार्य श्री उनसे मिल गए। सघ से अलग होकर उनके बीच चले गए। प्रथम अवसर था, होना तो यह चाहिए था कि आचार्य श्री जैन समाज के बीच रहते परन्तु गुरुदेव ने नीव के पत्थरो को पकडा। जो सबसे अधिक अधर्मी हो उसमे सबसे ज्यादा कर्म का प्रभाव पैदा करना अनिवार्य है, यही विचार कर गुरुदेव बलाई लोगो के बीच गए। इसानियत, हैवानियत का, पशुता–क्रूरता का रूप अपना रही हो तो पहले उसको मिटाना आवश्यक मान कर इन लोगो के बीच बैठकर उपदेश देना



शुरू किया। जहाँ वे लोग अछूत समझे जाते थे, वहां अन्य लोग भी गुरुदेव को अछूतों का महाराज कहने लगे थे। गुरुदेव मान अपमान पर ध्यान नही देते थे, क्रांति का कार्य मान-सम्मान पर विचार करने से नही होता।

आहार पानी के लिए दूसरे गाँवो तक जाते थे। छः माह के प्रयासो बाद 21 हजार बलाई जाति के लोग व्यसन मुक्त हो सस्कारशील बन पाए जो संख्या आगे जाकर 1 लाख तक पहुंच गई। धर्मपाल बन कर उन्होंने अपने संस्कारो का निर्माण कर अपना उद्धार किया। महान् आचार्य के उदबोधनो के प्रभाव से शराब मास आदि कुव्यसनो को छोड दिया। यह कुव्यसनो की मुक्ति का एक अभिनव प्रयास था।

दो महत्वपूर्ण बाते–समता सिद्धान्त व धर्मपाल प्रवृत्ति में हजारो को व्यसनमुक्त बनवाया। आधुनिक जीवन मे प्रचार-प्रसार के नाम पर दोष हो भी जाए तो चिन्ता नही की जाती परन्तु महावीर ने कभी भी इसको मान्यता नही दी। साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका अपनी मर्यादा से कार्य कर रहे है। यदि एक लाख व्यक्ति ने कुव्यसन छोडा है तो कितना बडा कार्य है। एक मासाहारी व्यक्ति 1 वर्ष मे 90 किलो 50 वर्ष में साढे चार हजार किलो मास खा जाता है। एक व्यक्ति को शाकाहारी बनाने से कितने पशु बचे ? वायु प्रदूषण बचा, शाकाहारियो मे फैलती बीमारियों पर काबू हुआ। 50 हजार लोग प्रति वर्ष 22 लाख 50 हजार किलो मांस खा जाते थे। भावी पीढी खराब होती, वह भी बच गई। कितना बडा क्रातिकारी कार्य शुरू हुआ। मानवीय सभ्यता एव समाज के लिए कितना महत्वपूर्ण कार्य था। मानव को मानव बनाने के लिए सत् सस्कारों का बीजारोपण किया गया। यह केवल धार्मिक कार्य ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खराब हो रही मानवीय स्थिति को सुधारने का कार्य था। मानव की हैवानियत को दूर करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। ओसियां मे रतन महाराज आए–उन्होंने सभी को ओसवाल बना दिया था। आज आप सभी वही ओसवाल है। आज जैन समाज ओसवालों के हाथ मे है। इसी प्रकार धर्मपाल समाज का सूत्रपात हुआ। वह बढने लगा, प्रारंभ मे तो लोगो, समाज ने ध्यान दिया, बाद में महत्त्व नही दिया। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य था– बलाई जाति के लोगो का सम्यकत्व हुआ। वे नरक मे जाने के रास्तो से बचते है अगर हम उन्हें शाकाहारी बनाते है तो चारो कारणो से बचाते है। इन्सानों पशुओ एवं देश के वातावरण को बचाते है। राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रचार-प्रसार की बात करते है, उनके लिए यह आश्चर्यजनक था कि बिना मर्यादाओ के त्याग के भी यह समव है कि किसी को जैनी बनाया जा सकता है।

जहा जो मर्यादाओ का पालन होता है, उसको सभी साधु देखते है। वे



यहा की मर्यादाओ से नीचे नही उतरते। श्वेताम्बर समाज हमारी मर्यादाओ, उनके परिष्करण पर ध्यान रखता है। धर्मपाल क्रातिकारी कार्य मे जैन दर्शन का महत्त्वपूर्ण उपयोग रहा। अब तक हम धर्मपाल प्रवृत्ति को समझ पाए हैं या नही? उसके पहलू दुनिया के सामने रखे।

आचार्य श्री का मर्यादित आचरण पूरी सस्कृति को बचा रहा है। जिस समय धर्मपाल योजना शुरू हुई, आचार्य श्री ने मर्यादित कार्य किया। श्रमण सस्कृति की मर्यादाओ मे भी बहुत बडी स्थिति बनी है। धर्मपाल बनाने से कहॉ-कहॉ सुविधाएं व्यवस्थाए क्या हुई ? इसका साईड इफैक्ट क्या हुआ। प्रचार–प्रसार मे शिथिलता दे दे तो क्या धर्मपाल यथावत बने रहेगे ? इन समीक्षात्मक तथ्यो पर विचार करे कि धर्मपाल प्रतिबोधन से देश को क्या मिला ? हम कह सकते है कि धर्मपाल शराब, मास छोड चुके हैं। यह एक महान् क्राति है। जैन समाज को और साथ ही सम्पूर्ण देश को इस क्राति का स्वागत करते हुए, सारे देश मे इसका प्रचार करते हुए समता मय समाज जीवन की रचना करने हेतु अग्रसर होना चाहिए।

यद्यपि अलग-अलग स्थलों पर समता भाव के सदृश्य समाजवाद, साम्यवाद आदि के लुभावने नारे भी आये है जो अधिकतम जनता के अधिकतम सुख को प्रेरित करने वाले वताये जाते है, किन्तु इन वादों के प्रचारकों-प्रसारकों ने यदि आत्वलोकन नहीं किया, अपनी भीतरी ग्रन्थियों को नहीं समझा तथा उन ग्रन्थियों को समता दर्शन की दृष्टि से खोलने की चेष्टा नहीं की तो क्या वे वादे सफल हो सकते हैं ? लेकिन जो कुद हो रहा है, वाहर ही वाहर हो रहा है-भीतर की खोज नहीं है।

-आचार्य श्री नानेश



सुसंगति (धर्मपाल प्रवृत्ति)

आदर्श त्यागी श्री सम्पत मुनि जी म. सा.

"सहाय मिच्छ निउणत्थ बुद्धि" उत्तरा. 32–4

आचार्य श्री नानेश जैसे निपुण बुद्धिमान महापुरुष का सुसम्पर्क धर्मपाल बधुओ को प्राप्त हुआ। जैसे कंगाल (सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन की दृष्टि से) के हाथ मे हीरा आ गया। तेबीस वर्ष की साधना सेवा समर्पणा के बाद आचार्य नानेश ने चिंतन किया कि स्व आचार्य देव ने प्रभु महावीर की इस निर्ग्रथ श्रमण संस्कृति के संचालन का कार्यभार मुझे सौंपा है तो चतुर्विध संघ मुझ से अपेक्षा करेगा। ऐसी स्थिति में मेरा भी चतुर्विध संघ के प्रति महान् उत्तरदायित्व हो जाता है। ऐसा सोचकर उन्होने विश्व की समस्त जनता को शाति प्रदान करने का अमोघ उपाय समता दर्शन की गहन गभीर रूप रेखा दी और प्रभु महावीर द्वारा प्ररुपित अछूतोद्धार के कार्य द्वारा, आचार्य पद के प्रथम चातुर्मास के पश्चात् गुजराती और मालवी बलाई जाति का उद्धार किया।

उन्होने हैवानियत और शैतानियत की ओर कदम बढाने वाले धर्मपालो को इंसानियत का पाठ पढाने के लिए, उन अछूतो के बीच मे पदार्पण किया। अध्ययन शील सतो को एक स्थान पर विराजने का आदेश देकर एक संत के साथ चल दिये। "एकला चालो रे" की कहावत को चरितार्थ किया। जन मानस उन्हे अछूतों के महाराज के नाम से कहने लगा। उन्होंने इस मान अपमान की ओर ध्यान नही दिया। कोई कुछ भी कहे मुझे तो सही काम करना है।

शराब मास मे रचे पचे लोग समाज से अलग थलग पड गये थे। उनकी प्रार्थना पर ध्यान देकर सं 2021 के चैत सुदी 10 को गुराडिया ग्राम मे उस समाज के लोग नुकता (मौसर) के प्रसग से इकट्ठे हुवे थे। उनके बीच मे बैठकर पंद्रहवे तीर्थकर धर्मनाथ प्रभु की प्रार्थना "धर्म जिनेश्वर मुझ हिवडे बसो, प्यारा प्राण समान" का मंगलाचरण कर मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी प्रवचन के द्वारा उस समाज को उद्बोधन दिया।

प्रवचन से प्रभावित होकर उपस्थित 70 गाव के लगभग 1000 भाइयों ने शराब मांस का त्याग कर ओसवाल समाज के भाई बहिनो के हृदय मे अपना स्थान बनाया। देखते ही देखते अल्प समय में 18-20 हजार अनुयायी बन गये।

साधु साध्वी, श्रावक श्राविका अपनी-2 मर्यादा मे रहकर प्रचार प्रसार कार्य मे जुटे। गाव-2 घूमकर नजदीक दूर के गांवो मे ओसवाल समाज से



ार पानी लाकर सुबह शाम धर्मपालो के गावो मे उनको प्रतिबोध देते हुए ख सवा लाख की संख्या मे प्रभु महावीर के अनुयायी बनाए। आज 35 वर्षो उन धर्मपालो ने अपनी समाज के उद्धार का कार्य अपने हाथ मे लेकर समय मय पर सामाजिक एव आध्यात्मिक स्तर पर पच-पचायती के द्वारा नियम ानियम, धारा धोरण बनाकर समाज का सचालन किया और कर रहे है। समय मय पर जैन समाज के लोगो को परामर्श हेतु आमत्रित करते है।

अधिवेशन के अवसर पर इस समाज के प्रतिनिधि उपस्थित होकर चारो का आदान प्रदान कर आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

चितन के क्षणो मे विचार करने पर ज्ञात होता है कि एक एक परिवार का क एक व्यक्ति कितनी शराब पीता है कितना मास खाता है। उन पशुओ के क्त मास मे रहे हुवे बीमारी के परमाणु खाने वाले व्यक्तियो को क्या बीमार नही नाते होगे और वह बीमारी के परमाणु वश परम्परा से भावी पीढी को बीमार या नही बनाते हैं ? परिणामस्वरूप निष्कर्ष निकलता है कि आचार्य श्री जी के द्वारा यह कार्य सपादित किया जाने से व्यसन मुक्ति का कितना बडा क्रातिकारी कार्य हुआ। यह कार्य अतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय सस्कृति और सभ्यता का कार्य था। उन्होने एक दृष्टि से उस बलाई समाज को सस्कारित किया।

ओसिया नगरी मे आचार्य श्री रत्न प्रभ सूरि ने हजारो मासाहारियो को शराब मास कुव्यसन छुडाकर ओसवाल बनाया। पीढी दर पीढी कई पीढिया बन गई। बीच मे बहुत जागृति आई । अभी पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव से पुन विकृति आ रही है। समाज को सावधान होना चाहिए। आज धर्मपाल समाज एक संगठित समाज बन गया है, पर सगति का प्रभाव पडे बिना नही रहता। यदि सुसगति मिलती रही और चतुर्विध सघ का वरद हस्त लगनशीलता के साथ इन पर रहा और बराबर समालते रहे तो काफी विकास की गुजाइश है।

सत रत्न श्री धर्मेश मुनि जी म सा, श्री रणजीतमुनि जी म सा और महासतियां जी श्री सायरकवर जी आदि सत सतियो ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आगम व्याख्याता श्री कवरचन्द जी म सा जैसे सत ने प्रारभिक अवस्था मे आचार्य श्री जी के साथ धर्मपाल क्षेत्र मे विचरण किया।

इस प्रवृत्ति का सम्यक् रीति से विकास हो और ये धर्मपाल वधु सपरिवार धर्माचरण मे प्रगतिशील बने यही भावना है।



वंदन धर्मपाल प्रतिबोधक को

रचयिता—समरथमल डागरिया

निष्ठुर पद पर जीवन चलता
उसको प्रेम दिया किसने

भटको के आंचल को संवारा
राह दिया बोलो किसने

मानवता अरे धन्य हो गई
मुस्कान की ज्योति दे दी किसने

जीवन को अगडाई दे दी,
ज्ञान दिया देखो किसने

उस पावन चरणो मे सिर झुकता है
धर्मपाल प्रतिबोधक को

भव भव की सौगाते दे दी
ऐसे धर्म अराधक को

रामपुरा (म

दूसरों के मुख से गाली सुनकर अपना हृदय कलुषित मत होने दो। वह भीतर भरी हुई अपनी गन्दगी को बाहर निकालता है तो क्या इसका मतलब यह है कि तुम उसे अपने भीतर डाल लो ? अर्थात् गाली के खिलाफ वापिस गाली बोलकर अपने हृदय में गन्दगी मत करो।

—आचार्य श्री नानेश



धर्मपाल प्रवृत्तिः समता समाज रचना की एक अभिनव परिकल्पना

भंवरलाल कोठारी

धर्मनिष्ठ सुश्रावक एव पश्चिम बगाल के पूर्व उपमुख्यमत्री श्री विजयसिह जी नाहर ने सन् 1975 मे मालवा की धर्मपाल धारिणी धर्मधरा पर सघ की "धर्म जागरण, जीवन साधना एव सस्कार निर्माण" "प्रथम पदयात्रा को" "एक महान् धार्मिक क्राति की पूर्व सूचना" बतला कर एक सार्थक सकेत किया था।

इस धर्म क्राति की शुरूआत हुई थी 22–23 मार्च 1964 मे। धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म सा के प्रेरक उदबोधन से उस समय एक अदभुत रूपान्तरण घटित हुआ। नागदा के पास गुराडिया ग्राम मे पिछडी हुई बलाई जाति के मुखिया श्री गोबाजी की सुपुत्री एव थावर जी की बहिन के शुभ विवाह पर चैत्र सुदी 9 को समागत 70 गावो के 533 परिवारो व 200 से अधिक अन्य व्यक्तियो ने मास, मदिरा, शिकार का त्याग कर सदाचारी और सस्कारी जीवन जीने का व्रत अंगीकार किया। छुआछूत व पिछडेपन की त्रासदी भुगत रहे दीन–हीन बलाई परिवारो को धर्माचरण व धर्मपाल के राजमार्ग पर प्रतिष्ठित कर आचार्य प्रवर ने उन्हे " धर्मपाल " नाम से सबोधित किया।

इस प्रकार दुर्व्यसन मुक्ति और सस्कार क्राति के एक अभिनव अभियान का शुभारंभ हुआ। गुराडिया से बडखेडा, बडावदा, लोद, लबोदिया, गुजरवाडिया तास, आकमा, आलोट, महिमपुर, डेलची, बोरखेडा, रानी, पीपलिया, रठडा धमाहेडा आदि गावो मे आचार्य श्री जी के दर्शन व प्रवचन श्रवण के लिए बलाई जाति के लोगो का पारावार उमड पडा। व्यसन मुक्ति अभियान ने आन्दोलन का रूप ग्रहण किया। अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ ने धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति की स्थापना कर इस अभियान व आन्दोलन को व्यवस्थित रूप से सचालित करने का दायित्व स्वीकार कर तदनुसार कार्य योजना का निर्माण किया।

लगभग 300 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के 500 गावो मे निवास करने वाले हजारो बलाई परिवारो को शिक्षित, सस्कारित व आर्थिक दृष्टि से समुन्नत बनाने के लिये धर्मपाल प्रवृत्ति की क्षेत्रवार रतलाम, जावरा, मदसौर, नागदा व उज्जैन-मक्सी की पाच इकाइयां बनाकर क्षेत्र का सर्वेक्षण, गाव-गाव मे नैतिक



सस्कार युक्त शिक्षण–प्रशिक्षण, शालाओ का नियमित निरीक्षण एव योग्यता व परीक्षण करते रहने का तंत्र विकसित किया गया। मेधावी धर्मपाल छात्रो व प्रारभ मे छात्रवृत्ति देकर श्री जैन जवाहर शिक्षण संस्था, कानोड में शिक्षण छात्रावास की सुविधा प्रदान की गई फिर रतलाम मे श्री प्रेमराज गणपत रा बोहरा धर्मपाल छात्रावास की स्थापना कर उसका क्रमिक विकास करते हुए 2 से 50 छात्रों के उन्नयन और चरित्र निर्माण की समुचित व्यवस्था हुई जवाहराचार्य शताब्दी वर्ष में " जवाहर चल चिकित्सालय" चालू कर प्रख्या चिकित्सक पद्मश्री डा. नदलाल जी बोर्दिया के निर्देशन मे दूरदराज व ग्रामांचलो में स्वास्थ्य परीक्षण एवं नि शुल्क उपचार का नियमित प्रबन्ध किय गया। शिक्षा, संस्कार व साधना, उपासना के लिए कई गावो मे समता भवनो क निर्माण हुआ। धर्म जागरण, जीवन साधना व संस्कार निर्माण पदयात्राओ क अनूठा सिलसिला शुरू करके इन चलते फिरते विद्यापीठो के द्वारा जीवन मे स्वाध्याय साधना और सेवा के सस्कारो को स्थाई बनाने का अभ्यास क्रम प्रारंभ किया गया। विभावो, विकृतियो, विषयो, कषायो के प्रदूषण युक्त वायुमण्डल से हट कर मैत्री, करूणा, अनुकम्पा, वात्सल्य व प्राणीमात्र के साथ एकात्मता व संवेदनशीलता के अपने सहज स्वभाव व प्रकृति मे समभाव पूर्वक स्थित होने के विलक्षण प्रयोग का शुभारभ हुआ। इसी प्रयोग को महामना स्व श्री विजयसिह जी नाहर ने सन् 1975 मे आयोजित सघ की पहली " धर्म जागरण पदयात्रा " को " एक महान् धार्मिक क्राति की पूर्व सूचना " बतलाकार दिशादर्शक अभिव्यक्ति दी थी।

उसी अभिव्यक्ति के अनुसार अहिसक भारत की हृदय स्थली मालवा की धर्म धरती पर आज बलाई जाति एक व्यसन मुक्त, सस्कार युक्त सशक्त धर्मपाल समाज के रूप मे उभर कर प्रतिष्ठित हुई है। एक महान् क्राति घटित हुई है। कल तक जो अशिक्षित, असस्कारी एव विपन्न स्थिति मे थे, आज वे शिक्षित संस्कारी और सम्पन्न बने है। उनके वैयक्तिक, पारिवारिक व सामाजिक जीवन के परिपेक्ष मे उसी प्रकार का अन्तर आया है, जैसा कई पीढियो पूर्व हमारे पूर्वजों के जीवन मे उस समय के पूज्य दादागुरूओ के प्रेरक उपदेशो/उदबोधनो से आया था। वे मास, मदिरा व शिकार का त्याग कर जीवरक्षक सत्-संस्कारी व सदाचारी बने थे। वही उनके सामान्यजन से "महाजन" और "श्रेष्ठजन" (सेठ) बनने का आधार था।

धर्मपालो के रूप मे पिछडी हुई बलाई जाति मे आया रूपान्तरण इस युग की एक युगान्तरकारी घटना है। वे आज गाव मे आदर्श समाज का रूप ग्रहण कर रहे है। उनके शैक्षिक, सामाजिक और माली हालत मे प्रभावी परिवर्तन हुआ है। वे गाव को नेतृत्त्व देने लगे है। 80 के लगभग धर्मपाल बलाई, ग्राम पचायतो



के सरपच बने है। कई व्यक्ति तहसील, जनपद, जिला पचायतो व परिषदो के सदस्य, उपप्रधान व प्रधान के पदो पर आसीन हुए है। उनके युवक विभिन्न विभागो के प्रभारी व प्रशासनिक अधिकारी के रूप मे प्रतिष्ठित है। ये अब पिछडेपन से निकलकर अगुओ की पक्ति मे अपना स्थान बना रहे हैं। गाव के अन्य समुदाय उनके इस रूपान्तरण को देखकर आश्चर्य चकित है। प्रभावित हैं। प्रेरणा प्राप्त कर रहे है, इस व्यसनमुक्ति एव सत्सस्कारो से घटित होने वाली चमत्कारिक क्राति से।

यह एक गुणात्मक परिवर्तन है। धर्मपाल प्रवृति अब केवल बलाई जाति तक सीमित नही रही है। उसका व्याप बढ रहा है। गाव के अन्य समुदाय उसकी ओर आकर्षित है। पिछले प्रवासो मे हमने गाव-गाव मे प्रवृत्ति की ओर सभी समुदायो के बढते सम्मान को देखा है। उन्हे एहसास हो रहा है कि यदि बलाइयो की स्थिति बदल सकती है तो हमारी क्यो नही बदल सकती ? यह समय के गर्भ से आने वाले परिवर्तन का सकेत है। हिसा, व्यसन, उत्पीडन मे से जन्म लेने वाले नव समाज के धडकन की ध्वनि है।

समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक युगद्रष्टा आचार्य श्री नानेश ने 34 वर्ष पूर्व इस धडकन की ध्वनि को सुना था। आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात रतलाम के अपने प्रथम वर्षावास सन् 1963 मे उन्होने नव समाज के स्वरूप को रेखाकित किया था। एक व्यसन मुक्त सस्कार युक्त समतावादी समाज का चित्र उकेरा था। एक ऐसा समाज जिसमे ऊच-नीच का भेद न हो। कोई दलित, पीडित, शोषित न हो। जहा व्यसन, फैशन, प्रदर्शन को प्रोत्साहन न मिले। व्यक्तित्व का मूल्याकन पद प्रतिष्ठा पैसे से न होकर सादगी, सरलता, कर्त्तव्यनिष्ठा व गुण कर्म के आधार पर हो। देश की धरती, प्रकृति और सस्कृति के साथ हमारा तादात्म्य हो। हम पश्चिम के दिशाहीन प्रवाह मे बह कर केवल खुदगर्जी, भौतिकवादी न बने। अपने "वसुधैव कुटुम्बकम" के सर्व मगलकारी चैतन्य स्वरूप को कायम रखे। गुण प्रोत्साहक सर्वोदयी समता समाज की स्थापना करे।

गुरुदेव का यह स्वप्न साकार होने के आसार अब नजर आ रहे है। मालवा के धर्मपाल क्षेत्र मे समता समाज रचना के सकेत उभर रहे हैं। पूरा गाव व्यसन मुक्त हो, सस्कार युक्त हो, साक्षर हो, शिक्षित हो, लघु-कुटीर-ग्रामोद्योग रत होकर स्वावलम्बी हो, स्वाश्रयी हो, गाव मे कोई भूखा, निर्वस्त्र, बेकार न रहे। सभी परस्पर एक दूसरे को पोषण दे। खेती, पशुपालन व ग्रामोद्योगो के आधार पर गाव शुद्ध कलात्मक वस्तुओ के उत्पादन का पुन केन्द्र बने। गाव मे उत्पादित वस्तुओ का ही गाव के लोग अधिकाधिक प्रयोग करे। गाव के विवाद गाव मे बैठकर सुलझावे। थाना, कोर्ट, कचहरी से अपने आपको दूर रखे। विदेशी, विकृति व प्रदूषण बढाने वाले पदार्थो का गाव मे प्रवेश न होने दे।



हिसा, अश्लीलता व दुराचार को प्रसारित करने वाली टी. वी. संस्कृति क प्रतिकार करें। अपनी परम्परागत लोक कला, संगीत, रंगोली आदि ज्ञानवर्धक चरित्र उन्नायक, लोकरंजक सस्कृति को पुनर्स्थापित करे। गांव एक स्वयं पूरव इकाई बने। पूर्णतया प्रदूषण मुक्त स्वास्थ्य केन्द्र बने। गांव के युवकों को नौकर की तलाश मे शहरों के गंदे नालों पर बसी गंदी बस्तियों मे कीडे-मकोडो जैसी जिन्दगी जीने के लिए विवश न होना पडे। स्वरोजगार के जरिये वे नौकर नही बल्कि मालिक बनकर स्वाभिमान की जिन्दगी जीयें। आधुनिकता के प्रवाह में हम अपने राष्ट्र की कर्णधार भावी पीढी को चरित्रहीन, दुर्बल, अकर्मण्य व पथभ्रष्ट न होने दे। आज के सभी राष्ट्र नायको और धर्म गुरुओ का यह प्राथमिक दायित्व है।

आचार्य श्री नानेश की ही तरह युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा. ने युवाचार्य पद ग्रहण के पश्चात सन् 1995 के बीकानेर चतुर्मास मे सारे राष्ट्र को व्यसन मुक्त करने का पुरजोर आह्वान किया था। सन् 1996 के निम्बाहेडा मे हुए अपने प्रथम स्वतंत्र चतुर्मास मे अ., भा. साधुमार्गी जैन सघ के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर देश के सभी प्रातो से आये प्रतिनिधियों को उन्होंने समता समजा रचना के कार्य मे जुट जाने का युगीन सदेश दिया था। इस वर्ष उनका चातुर्मास मालवा की हृदय स्थली रतलाम में हो रहा है। यह धर्मपाल प्रवृत्ति का मुख्य केन्द्र है। इस प्रवृत्ति के माध्यम से हमारी प्रकृति मूलक संस्कृति और जीवन धारा के अनुरूप व्यसन मुक्त समता समाज रचना के लिए हमे उनसे निरन्तर प्रेरणा प्राप्त हो रही है।

श्री अ. भा साधुमार्गी जैन सघ आचार्य प्रवर एव युवाचार्य प्रवर की भावनानुसार समता समाज रचना के इस युग निर्माणकारी कार्य को मूर्तरूप देने के लिए प्रयत्नशील है। इसी कड़ी मे इस वर्ष पुन. सघ द्वारा " धर्मजागरण, जीवन साधना, संस्कार निर्माण, पदयात्रा " का धर्मपाल क्षेत्र में आयोजन किया गया। यात्रा विवरण इसी धर्मपाल विशेषांक मे प्रकाशित है। आयोजन सफल एवं प्रभावकारी रहा। यह विकृति से प्रकृति में, विभाव से स्वभाव मे, दभ और अहंकार से ऋजुता और सरलता में, आडम्बर व दिखावे से सादगी व पारदर्शिता मे, विषमता से समता मे लौटने का अभ्यास था। ऐसे अभ्यास वर्गो के द्वारा ही ग्राम आधारित, सदाचार युक्त, समता मूलक, स्वावलम्बी समाज की परिकल्पना को साकार कर सकेगे। अन्त्योदय से सर्वोदय और ग्रामोदय से राष्ट्रोदय का चिर अभिप्सित राष्ट्रीय लक्ष्य प्राप्त कर सकेगे। हमारी सनातन सस्कृति और नैसर्गिक साधना पद्धति मे ही ऐसे सर्वोपकारी शाश्वत लक्ष को साकार करने की विलक्षण क्षमता व अदम्य ऊर्जा है। सद्य प्रारभ होने वाली आगामी इक्कीसवी शताब्दी मे यह समता समाज रचना की अभिनव परिकल्पना मूर्तरूप ले सके यही हमारा अभिष्ठ है।

उपाध्यक्ष, श्री अ. भा. सा. जैन संघ, बीकानेर



हमारे निरन्तर बढ़ते कदम

धीरजलाल मूणत

राष्ट्रीय सयोजक, श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति

किसी अभियान को प्रारंभ करने का विचार मन मे आना उसके बाद उस चार को कार्यान्वित हेतु ठोस योजना तैयार करना तथा योजना को मूर्त रूप ने हेतु सतत सक्रिय और सचेष्ट रहना कोई सामान्य बात नही है।

धर्मपाल बधुओ को दुर्व्यसनो से मुक्त कराने की योजना भी एक ऐसी ही हती योजना थी। इस योजना से लाभान्वित होने वाले कोई सौ-पचास व्यक्ति ही वरन् सैकडो गावो के लाखो व्यक्ति हैं। ये लोग पीढी-दर-पीढी से चले आ हे कुसस्कारो से मुक्त होकर शुद्ध सात्विक जीवन व्यतीत करने हेतु तैयार हुए ।

इस महत्ती योजना के प्रेरणा स्रोत हुक्म सघ के अष्टम् पट्टधारी, दया के सागर, मानव मात्र के जीवन के सुधारक आचार्य भगवन् श्री 1008 श्री नानेश को कोटि-कोटि वन्दन। आपका अभिनन्दन !

23 मार्च 1964 मे शुरु इस अभियान का मुख्य उद्देश्य था – दुर्व्यसनो मे लिप्त व्यक्तियो को व्यसन मुक्त बनाना अर्थात् जुआ, मास, मदिरा आदि सप्त व्यसनो से मानव-मात्र को मुक्ति दिलाना। यह कोई साधारण कार्य नही था, एक महायज्ञ था, जिसको पूर्ण करने मे एक ओर तो सन्त समुदाय प्रेरणा देते थे तथा दूसरी ओर सघ अपने स्तर पर पूरे भारत वर्ष मे महाअभियान के रूप मे कार्य करते थे।

एक बात अवश्य विचारणीय है कि यह योजना क्यो शुरू हुई, कितनी सफल हुई एवम् भविष्य मे इसे कैसे आगे बढाया जा सकता है। "कर भला होगा भला, अन्त भले का भला" जैन सिद्धान्त दया धर्म के मूल सिद्धान्त पर टिका हुआ है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में यह बात सहज ही आ जाती है कि मेरे द्वारा अधिक-से-अधिक व्यक्तियो का भला हो, मैं अधिक–अधिक से अधिक सेवा करू और सुख पहुचाऊँ। क्योकि सुख देने से सुख मिलता है एव दुख देने से दु ख अत क्यो न सुख पहुचाकर अपने जीवन को धन्य बनाऊ। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति इस योजना मे अपनी सह–भागिता दर्ज करा रहा है एव पुण्य कमा रहा है। धन कमाने के अनेक



रास्ते हैं लेकिन पुण्य कमाने के लिए हृदय में दया का भाव आना चाहिए। दया का भाव हृदय मे उत्पन्न हो गया तो दुनिया की कोई भी शक्ति कमाने के आडे नहीं आ सकती है। हम देख रहे हैं कि पिछले तीन दशक लाखों व्यक्ति जो बलाई जाति के थे, उन्होंने मांस मदिरा आदि को छोडा अपने जीवन को अच्छे ढंग से चलाने का संकल्प लिया। इस योजन उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। हमारा कार्य लक्ष्य प्राप्ति की और निरन्तर बढना है। सफलता हमें मिल रही है तथा भविष्य में और भी मिलने की सम्भावना है।

वास्तव में एक बात हम सभी को अवश्य घ्यान रखना चाहिए कि गावों में जाकर शराब व मांस छोडने के लिए समझाया गया और जिन व्यक्ति ने छोडने का सकल्प लिया– हम देखें कि क्या वे अपने सकल्प पर कायम

यदि है तो यह हमारी सबसे बडी सफलता है। अत. सफलता आकलन हेतु हमे गावो मे जाकर एक बार पुन. उन सभी प्रमुख व्यक्तियो सुध लेनी चाहिए जिससे उनका तो मनोबल बढता ही है साथ ही उन लोगो भी हमें प्रेरित करना चाहिए कि अब आप सक्षम हो गए है। आप भी अभियान में जुड जाईये एवं आप भी समाज के शेष लोगो के मध्य जाकर व्यसन मुक्त बनाईये। अतः व्यसन मुक्त होकर व्यसन मुक्त बनाने की योजना आज इस शिखर तक पहुंच गई है। व्यक्ति नही वरन् सारा समाज गांव व्यसन मुक्त हो उनका जीवन सुखकारी हो मंगलकारी हो। यही हम की भावना है। तभी हम अपने को मानवता का प्रतीक मानकर इन्सान कहल के अधिकारी होगे। तभी हम अपने गुरु भगवन्तों के भक्त कहलाने की पा रख सकेंगे।

क्षमायाचना

मेरी आयु ८२ वर्ष होने जा रही है और क्षणभगुर जीवन का कोई भरोसा नही है । सघ अध्यक्ष रहते हुए व तदनन्तर कभी भी किसी से अप्रिय/कठोर वचन कहने/लिखने मे आया हो तो सावत्सरिक उपलक्ष्य मे सभी से अन्तर आत्मा से क्षमायाचना करता हू।

देशनोक **-दीपचन्द भूरा**



स्वर्ण-तिलक

समाज सेवी श्री मानव मुनि जी

धर्मपाल प्रवृत्ति-साधुमार्गी जैन सघ द्वारा की कई क्रातिकारी समाज रचना का एक अनुपम उदाहरण है। भगवान महावीर ने आज से 2600 वर्ष पूर्व चांडाल हरिकेशी को दीक्षा देकर एक महान् क्रातिकारी कार्य किया था। मुनि हरिकेशी सयम-त्याग-साधना द्वारा वीतराग के पथ पर चल कर केवल-ज्ञानी हो गये। इस घटना का आज जैन व अजैन समाज तथा साधु-मुनिराज भी गुणगान करते है। प्रभु महावीर के पथ मे, जैन समाज में, जाति-धर्म-सम्प्रदाय का भेद नही है। जो भी इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करे, सप्त कुव्यसनो का त्याग करे, संयम-त्याग-साधना के पथ पर चले, वह जैन धर्म का उपासक है। वह जैनी है। व्यक्ति अपने कर्म से जैनी होता है, जन्म से नही। जैन धर्म की इसी धारणा के अनुसार समय-समय पर जैनाचार्यो ने श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत कर समाज को दिशा दी है।

युग पुरुष, क्रांतिकारी स्व. पूज्य आचार्य श्री जवाहर लाल जी म सा अपने प्रवचनो में कहा करते थे–

लो अछूतों को, गले से लगा हिन्दुओ
वरना ये लाल, गैरो के घर जाएगे

इसी भावना के अनुरूप, क्रातदृष्टा आचार्य श्री जवाहर ने जीवन भर अछूतोद्धार पर बल दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने अछूतोद्धार के लिए अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया।

स्व. जवाहराचार्य जी म सा के प्रशिष्य, अध्यात्म योगी,समताधारी, मानवता के पुजारी आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने आज से 34 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला दशमी को उज्जैन जिले मे नागदा जक्शन के पास स्थित ग्राम गुराडिया मे गुजराती बलाई समाज के एक जातीय समारोह मे सहज भाव से जो उपदेश दिया, उसी से धर्मपाल की स्थापना हुई।

आचार्य श्री नानेश नागदा विराजित थे और धर्मोपदेश कर रहे थे। उस समय श्री सीताराम जी राठौड बलाई नागदा तथा श्री धूल जी भाई बलाई गुराडिया आदि ने उपस्थित होकर गुरुदेव के समक्ष प्रार्थना की कि आप हमारी जाति का भी उद्धार करिये। हम हरिजन कहलाते हैं। लोग हमसे घृण



है। हमारे हाथ का पानी पीना तो दूर हमे पास भी नही बिठाते। आप हमारा उद्धार करिये वरना हम ईसाई या मुसलमान बन जायेंगे। गोरक्षक से गो भक्षक बन जावेगे। हम धर्म–परिवर्तन कर लेगे, तब ये सवर्ण हमारा सम्मान करेगे। आप हमे बचाइये।

यह करूण पुकार सुनकर करूणामूर्ति आचार्य श्री नानेश ने एक क्षण का भी विलंब नही किया और नागदा से पाद-विहार करके ग्राम गुराडिया पधारे। वहां एक मकान के बाहर दालान मे विराजे व रात्रि विश्राम किया। चैत्र शुक्ला दसमी संवत् 2020 के सुप्रभात मे बलाई समाज की विशाल सभा रखी गई। पूज्य गुरुदेव ने धर्मनाथ भगवान की प्रार्थना की और अपना सारगर्भित प्रवचन सरल भाषा मे दिया। गुरुदेव ने कहा कि मनुष्य से कोई घृणा नही करता। शराब पीना, मांस भक्षण करना, पशुबली करना, व्यसनी होना– इससे घृणा की जाती है। महावीर का धर्म विशाल है। इसमे जन्म से नही, कर्म से धर्म का निर्धारण होता है। आप अपने कर्मो को, आचरण को सुधारो। कोई आपसे घृणा नही करेगा।

संक्षिप्त किन्तु हृदय में समा जाने वाले ये विचार सुन कर वहां का वातावरण ही बदल गया। सबने खडे होकर सामूहिक रूप से व्रत धारण किये। बुराइयो से मुक्त तो हो गये किन्तु श्री सीताराम जी राठौड ने कहा कि गुरुदेव! हमने आज सप्त कुव्यसन का त्याग कर दिया है और सत्संस्कारों के पालन की शपथ ली है किन्तु हमारा नाम तो बलाई-हरिजन ही रहेगा। अत. लोग नफरत करेगे। अत आप हमारा नाम संस्कार भी कर दे।

इस पर गुरुदेव ने कहा कि आप ने अभी धर्मनाथ भगवान की प्रार्थना की है। अत आज से आप धर्मपाल हो गए। अब आप को धर्म के मार्ग पर चलना है। बलाई के काले टीके के स्थान पर अब धर्म का स्वर्ण तिलक लगाया गया है। अब कोई घृणा नहीं करेगा।

तब धर्मपालो ने कहा कि जैन समाज के 24 तीर्थकर हो गए है परन्तु आपने हमारी जाति का उद्धार किया। आप हमारे लिए 25वे तीर्थकर हैं। इस प्रकार इस क्रातिकारी इतिहास का बीजारोपण हुआ धर्मपालो के उत्थान हेतु गुरुदेव का चिन्तन-मनन चलता रहा।

परमपूज्य गुरुदेव का आगामी चातुर्मास उज्जैन हुआ। वही पर श्री अ. भा साधुमार्गी जैन संघ का वार्षिक अधिवेशन हुआ। जिसमे मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री पाटस्कर पधारे थे। पूज्य गुरुदेव के पास महामहिम राज्यपाल दर्शनार्थ पधारे तब आचार्य श्री ने उन्हे धर्मपाल का इतिहास बताते



हुए धर्मपालो के उत्थान की चर्चा की। इस पर श्री पाटस्कर सा ने कहा कि यह कार्य तो शासन को करना था किंतु आपने किया है और उनके सस्कार बदलाने का महान् कार्य करके उन्हे धर्मपाल से सुशोभित कर उनका गौरव बढाया है। मानवता की महान् सेवा का यह कार्य अभिनदनीय है। सरकार इस कार्य मे पूर्ण सहयोग देगी।

इस प्रसंग पर आयोजित विशाल धर्मसभा को सबोधित करते हुए गुरुदेव ने अपने प्रवचन मे कहा कि इस बलाई जाति ने सप्त कुव्यसनो का त्याग किया है। ये धर्मपाल बने है। इन्हे गले लगाना है। प्रेम देना है।

उज्जैन के सघ अधिवेशन मे ही धर्मपाल प्रवृत्ति को सघ की प्रवृत्ति मान लिया गया और सर्वप्रथम स्व श्री गोकुलचद जी सूर्या उज्जैन निवासी को प्रवृत्ति सयोजक का दायित्व सौपा गया। इसके बाद स्व श्री गेदालाल जी नाहर जावरा को सयोजक बनाया गया। मन्दसौर सघ अधिवेशन मे श्री समीरमल जी काठेड (अब स्व) को प्रवृत्ति सयोजक बनाया गया। तभी से प्रवृत्ति मे विशेष गति आई और मालवी बलाई तथा मेवाडी बलाई भी धर्मपाल बने।

इस प्रवृत्ति के प्रारभ से ही मेरा, मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया तथा उनकी धर्मपत्नी स्व श्रीमती धूरी बाई पिरोदिया का जुडाव और सेवा योगदान रहा।

आदर्श त्यागी, तपस्वी विद्वान श्री धर्मेश मुनिजी म सा ने धर्मपाल प्रवृत्ति को नई दिशा दी और चिन्तन-मनन कर धर्मपाल समाज रचना का विचार प्रस्तुत किया, जिस पर सघ और धर्मपालो ने नवीन कार्य योजना बनाकर आचरण प्रारभ कर दिया।

आदर्श त्यागी, तपस्वी श्री सम्पतमुनि जी म सा ने भी धर्मपाल क्षेत्रो मे गाव-गाव मे पद विहार कर व्यसन मुक्ति और सस्कार क्राति का प्रसार किया।

धर्मपाल विद्यार्थियो को उच्च शिक्षा देने और साथ ही उन्हे धार्मिक सस्कार प्रदान करने हेतु धर्मपाल पितामह सेठ श्री गणपत राज जी बोहरा ने उदारता पूर्वक श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास की स्थापना की जहा आवास-भोजन ओर पुस्तको की नि शुल्क व्यवस्था की गई। इस छात्रावास का आज भी धर्मपाल लाभ उठा रहे है और श्री कोमल सिह जी कूमट दिलीप नगर इस छात्रावास को सभालने, समस्या समाधान करने और छात्रो को प्रोत्साहन देने का कार्य कर रहे हैं।

धर्मपाल प्रवृत्ति को शक्तिशाली बनाने मे सेठ सा श्री गणपत राज जी



बोहरा और धर्मपाल माता श्रीमती यशेदा देवी जी बोहरा का तन-मन-धन से सहयोग और आशीर्वाद मिला। स्व. पद्मश्री डॉ. नदलाल जी बोरदिया के नेतृत्व में स्वास्थ्य परीक्षण और चल-चिकित्सालय के माध्यम से क्षेत्र मे चिकित्सा सेवा दी गई।

धर्मपाल क्षेत्रों मे धर्म जागरण, सस्कार निर्माण तथा व्यसनमुक्ति पदयात्राओ के आयोजनों तथा नवयुवको की लंबी-लंबी पदयात्रा रैलियों से अपूर्व जागृति आई। धर्मपाल महिलाओं के धार्मिक संस्कार शिविरो के आयोजन किए गए। महिला जागरण में श्रीमती धूरी बहिन, श्रीमती शान्ता मेहता, श्रीमती कोमल मूणत आदि का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

त्यागमूर्ति श्री गुमान मल जी चोरडिया, श्री पी.सी. चौपडा आदि सघ प्रमुखों का प्रवास-चेतना-उद्बोधन पूर्वक समाज जागरण में विशेष योगदान रहा। संघ ने धर्म आराधना के लिये गुराडिया, शिवपुर, डेलनपुर, हरसोदन, तिलावद-गोविन्द, लामगरा और धमनार मे समता-भवनो का निर्माण कराया। धार्मिक पाठशालाओ का सम्पूर्ण क्षेत्र मे संचालन किया गया। यह कार्य इन दिनों शिथिल है।

स्व श्री समीरमल जी कांठेड ने प्रवृत्ति हेतु महान् योगदान किया। वे प्रवृत्ति के प्राण थे। क्षेत्र मे उन्हे धर्मपाल गांधी से संबोधित करके आदर दिया गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला काठेड के योगदान को भुलाया नही जा सकता। श्री अ. भा सा जैन सघ और महिला समिति का योगदान अभिनंदनीय रहा। संघ ही अब प्रवृत्ति तथा छात्रावास का खर्च बजट-अनुसार दे रहा है।

वर्त्तमान में क्षेत्रीय संयोजको व केन्द्रीय संयोजक की उत्साही युवा टोली है। उन्हे मार्गदर्शन चाहिये। उन्हे ग्राम-ग्राम सम्पर्क करके धर्मपालो का विश्वास पुन प्राप्त करना होगा। धर्मपाल समाज रचना मे शक्ति लगानी होगी। धर्मपाल समाज के नवयुवक आगे बढेंगे, तभी शक्ति खडी होगी। सत-मुनिराजो के सतत विचरण होगे, तब धर्मपाल समाज रचना पूर्ण होगी।

यह प्रवृत्ति मन्दसौर, जावरा, रतलाम, नागदा, उज्जैन, खाचरौद, मक्सी और शाजापुर क्षेत्रो के गावो मे फैली हुई है। इस विशाल क्षेत्र को संभालने के लिये समर्पित कार्यकर्त्ता चाहिये। प्रचार-प्रसार बहुत हो गया। अब तो सगठन शक्ति खडी करनी होगी, तभी धर्मपाल समाज रचना का कार्य आगे बढेगा।

धर्मपाल प्रवृत्ति का अब तक का क्रातिकारी इतिहास निश्चय ही एक स्वर्णिम भविष्य का सृजन करेगा। आइये! हम सभी अपना योगदान इस श्रेष्ठ कार्य मे दे।

—विसर्जन आश्रम, विनोबा चौक
नौलखा, इन्दौर



धर्मपाल प्रवृत्ति-मीलों लंबा सफर

प्रकाशचंद्र सूर्या

33 वर्षो के लम्बे अतराल के बाद आज धर्मपाल प्रवृत्ति के विषय मे हमे निश्चय ही विचार कर पुर्नमूल्याकन करना होगा एव इसकी नवीन कार्य रचना पर विचार करना होगा।

1964 से अब तक के 33 वर्षो मे इसकी तुलना अगर एक अबोध बालक के तरूणाई तक के 33 वर्षों के सफर से की जाय तो निश्चय ही इस प्रवृत्ति का विस्तार अपेक्षानुसार नही हुआ है, तथापि अनेको धर्मपाल व्यक्तियो को बाल्यावस्था मे मिले सुस्कारो से पुष्पवित पल्लवित तरूणाई देख कर हम इस प्रवृत्ति पर निश्चय ही प्रमोद कर सकते है। ऐसे युवक, युवती, प्रौढ एव तरूण सुसस्कारित व्यक्तियो की सख्या हजारो मे नही तो सैकडो मे अवश्य है, जिन्होने अपने जीवन मूल्यो को आचार्य नानेश के दिव्य सदेशो से अलकृत किया है। अपने जीवन को सुस्कारो के सौरभ से महकाया है। ये बधु/बहिने इस प्रवृत्ति एव आचार्य भगवन् के प्रति आज भी पूर्णत आस्थावान एव समर्पित है। सद्सस्कार आज भी उनके जीवन का अग बना हुआ है। वे ये सस्कार अपनी नई पीढी मे भी पोषित कर रहे है।

हमारा दायित्व आज पूर्वापेक्षा अधिक हो जाता है क्योकि इन 33 वर्षों मे समग्र रूप से नैतिक मूल्यो मे भारी गिरावट आई है। ईश्वर और धर्म का आलबन यद्यपि बढता दिखाई देता है, परन्तु भौतिक चकाचौध ने जीवन मे नैतिक स्तर को निम्नतम स्तर पर लाकर खडा कर दिया है। ऐसी स्थिति में समाजसेवी सस्थाओ को धार्मिक मान्यताऐ एव जीवन उन्नायक दर्शन के आपसी तालमेल के साथ नैतिक मूल्यो की पुर्नस्थापना शुद्ध आचार विचार सहजीवन निर्माण कर सदेश जन जन तक पहुँचाना होगा।

प्राय यह कहा जाता है कि जब हमारे स्वय के अनेको परिवारो मे युवक-युवतियो की स्थिति, हमारे अपने सस्कारो के प्रतिकूल एव विपरीत होती जा रही है, तब हमे अपने स्वय की और ध्यान देने की अपेक्षा धर्मपाल जेसी प्रवृत्तियो को क्यो हाथ मे लेना चाहिए ?

वास्तव मे यह एक विडम्बना ही है। परन्तु समग्र चितन करने पर इस नकारात्मक सोच का नतीजा यह नही हो सकता कि सस्कार-क्राति की दिशा



में हमारी बाध्यता अपनों तक सीमित रहे। हमारे अपने परिवारो के मध्य संत समागम, आराधना आदि के सभी प्रकल्प सन्निकट है। हमारा इन तक पहुंचने का प्रवाह भी निर्बाध एव आसान है। हमारे युवजन नि.संदेह इन आयामो तक पहुच सकते है और वो सब ग्रहण कर सकते है जो सस्कार निर्माण एवं जीवन निर्माण की दिशा मे आवश्यक है, जरूरत केवल हमारे करने मात्र की है। दूसरी ओर धर्मपाल समाज या अन्य व्यसन ग्रस्त समाज को आर्थिक, सामाजिक एव मानवीय पहलुओ पर इस बात की ओर ध्यान दिलाना जरूरी है और इस संदर्भ मे उन तक पहुँच कर इस दिशा मे प्रयत्न करना प्रभु महावीर के सिद्धान्तो को जन जन तक पहुँचा कर मानव कल्याण एवं विश्व कल्याण तक के भावों का प्रसारण करने का कार्य है।

जैन होना, जैन धर्म का पालन करना,जैन सिद्धांतो का प्रसार करना, ये सभी शासन सेवा के विभिन्न आयाम हैं। प्रत्येक जैन को इस पर गर्व होना चाहिए एव यथाशक्ति सेवा का लाभ लेना चाहिए।

धर्मपाल प्रवृत्ति को वर्तमान दौर मे अधिक गति एव निश्चित कार्य रचना के साथ आगे बढाने की जरूरत है। इसके लिए संघनिष्ठ युवाओ को अधिक गतिशील होना होगा। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसमे तन, मन, धन एवं समय सभी बातो की अत्यधिक आवश्यकता है। इनमे से एक भी प्रकल्प के अभाव मे प्रवृत्ति को उस आयाम तक नही पहुँचाया जा सकता जिसकी कल्पना आचार्य भगवन् ने की है।

मेरा यह मानना है कि ऐसी गतिविधियों से जुड कर हम स्वय भी अपने संस्कारो के साक्षी बनते है और हमारे जीवन मे कथनी और करनी के अन्तर धीरे-धीरे स्वय छूटते जाते है। अत युवको को इस ओर प्रवृत्त करना स्व कल्याण एवं सद् संस्कार के पोषण का मार्ग भी है।

प्रवृत्ति के मानवीय पहलू सदाचरण ओर सुसस्कार के साथ ही धर्मपाल परिवारो की आत्म निर्भरता ओर उनकी प्राथमिक आश्यकताओ मे सहयोगी होना भी है। इस सदर्भ मे (1) धर्मपाल परिवारो को स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना एवं उनके इस प्रयास मे सहभागी बनना (2) उनके लिए पीने के पानी की व्यवस्था मे सहयोग करना (3) प्राथमिक चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराना।

उपरोक्त सामान्य व्यवस्था हम संघ के माध्यम से करा सके तो धर्मपाल परिवारो के प्रति एक सामाजिक दायित्व का निर्वहन ही होगा।

यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रवृत्ति का मूल उद्देश्य सस्कार परिवर्तन



एवं दुर्व्यवसनो का त्याग है। जैन धर्म के विज्ञान समस्त तथ्यो से यह प्रतिपादित हो गया है कि जीवन जीने के सूक्ष्मतम् आयाम का विश्लेषण जैन दर्शन कराता है। साफ सफाई, सेनीटेशन, रात्री भोज का निषेध, पीने के पानी का समुचित शुद्धिकरण। गर्म पानी का उपयोग आदि। सात्विक आहार एव आहार मर्यादा आदि ऐसे अनेक उदाहरण है जो मनुष्य के स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से व्यापक रूपेण चिकित्सक भी इनका परामर्श एव इन पर जोर देते हैं।

इसके साथ ही पर्यावरण सुरक्षा एव प्रदूषण निवारण के क्षेत्र मे जैन मान्यताए आज प्रभावशाली रूप मे पर्यावरणविद एवं समाज शास्त्री स्वीकार करते हैं।

इस तरह यह संस्कार क्राति जैन मान्यताओ का निर्बाध प्रसार है। आचार्य प्रवर समता विभूति नानेश ने अपने दिव्य सदेशो को जनकल्याणकारी भावो के साथ जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। धर्मपाल बधुओ ने भी इन्हे आत्मसात किया है। धर्मपाल बधु आचार्य नानेश को अपने जीवन का ऐसा अवलबन मानते है जिससे उनके जीवन का उत्थान हुआ है और परिणामस्वरूप नानेश भक्ति का स्वरूप उनके साथ कुछ ही समय रहने पर स्वयं उजागर हो जाता है।

धर्मपाल आदोलन एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसमे सेवा के कई अनुष्ठान जुडे है। यह एक सच्चा पारमार्थिक कार्य भी है। यह एक लंबा सफर है। सघ के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि वे इस सफर मे एक दूसरे के साथी बने और इस प्रवृत्ति के माध्यम से वे अपने सामाजिक दायित्व एव सेवा कार्यो को गति प्रदान करे। निश्चय ही यह लबा सफर एक दिन मधुर स्मृति के रूप मे हमारी यादगार यात्रा सिद्ध होगा।

''अन्न वै प्राणाः जल वै प्राणा.''- अन्न ही प्राण है, जल ही प्राण है,इसलिये अन्न और जल का सदुपयोग करना हमार पुनीत कर्त्तव्य है। उनको बरबाद करना अथवा उनका दुरुपयोग करना धार्मिक एवं नैतिक अपराध है। इन अपराधों से बचना और बचाना प्रत्येक इन्सान का प्राथमिक धर्म है।

-संस्कार क्रांति, आचार्य श्री नाने



अपूर्व संस्कार क्रांति

चम्पालाल डागा

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य श्री जी ने पद ग्रहण के तुरन्त बाद अपना प्रथम चातुर्मास संतव् 2020 रत्नपुरी रतलाम मे किया। रतलाम-मालव प्रान्त की हृदयस्थली है। यह मालव की सुवास, उस क्षेत्र के रहन-सहन, खान-पान और व्यवहार की केन्द्र स्थली है। आदिवासी भील बन्धुओ और पिछडे और पिछडे अछूत व दलित बलाई जाति की यह कर्मस्थली है तो उर्वर मालव क्षेत्र की समृद्ध-सुसकृत श्रेणियो की भी आवास स्थली है।

इस पुण्य नगरी मे अपने चातुर्मास मे आचार्य श्री नानेश ने विषमता से त्रस्त जन-जीवन को समता की अमृतमयी वाणी से अभिसिचित किया। रतलाम चातुर्मास समाप्त करके आचार्य श्री नानेश उज्जैन की ओर विहार करते समय नागदा मे रूके। सत-जीवन अणगार-आगार रहित जीवन है। निरन्तर विचरण करते हुए सत हृदय समाज को अवलोकन करता है। समाज की समस्याओ का समाधान प्रदान करता है।

इसी क्रम मे आचार्य-प्रवर ने मालव क्षेत्र की कृषि-कर्मी बलाई जाति के प्रति समाज के छुआ–छूत भरे व्यवहार को देखा। बलाई-जाति के आचार को भी देखा। बलाई जाति के मुखियाओ मे उन्नति की, सम्मान की चाह को भी अनुभव किया। नागदा मे 5 दिन के आचार्य प्रवर के विहार मे वहा के जैन समाज के प्रयत्नो से बलाई जाति के लोग भी प्रवचनो मे आए। उन्होने आचार्य श्री के सरल-प्रेरक और हृदय स्पर्शी प्रवचनो से प्रेरित होकर जैन धर्म स्वीकार करने का निश्चय किया। उल्लेखनीय है कि इस पिछडे क्षेत्र मे धर्मान्तरण के प्रयासो के चलते अनेक लोग, ईसाई व मुसलमान तक बन चुके थे। अनेक ऐसे लोग पुन मूलधारा की ओर लौटने को उत्सुक थे और उन्होने भी आचार्य श्री नानेश की देशना से प्रभावित हो समकित ग्रहण की।

इस प्रकार आचार्य श्री नानेश ने अपनी तपपूत वाणी से जो अमृत उपदेश दिया, उससे मालव क्षेत्र के सैकडो वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के लगभग 600 गांवो के लक्षाधिक जनो मे अपूर्व सस्कार-क्राति घटित हुई।



इस क्राति के सम्हालने और परिष्कृत करने का पावन दायित्व श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ ने ग्रहण किया और सघ की बहुआयामी सेवा योजनाओ ने, सतो की प्रेरणा-विहार-शुभाशीष ने, आज इस सस्कार क्राति को पूर्णता प्रदान कर दी है। आज सबद्ध क्षेत्रो मे धर्मपाल शब्द सम्मान, सदाचार और जागरूकता का परिचायक बन गया है। व्यक्ति सुधार से, ग्राम सुधार और अब समाज सुधार की ओर अग्रसर यह प्रवृत्ति राष्ट्र की उन्नति का सबल आधार सिद्ध होने जा रही है।

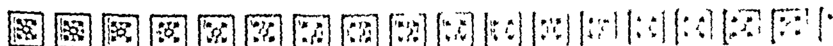
इस प्रवृति का भविष्य स्वर्णिम है। यह प्रवृत्ति अब किसी आलम्बन की मोहताज नही रही है अपितु धर्मपाल समाज स्वय एक आलम्बन बन चुका है। धर्मपाल क्षेत्रो मे ऐसे सैकडो उदाहरण देखने को मिलते है कि जब बलाई बन्धुओ को व्यसन मुक्त-सदाचारी देखकर अन्य वर्गो के लोग भी सदाचार के पथ पर आरूढ हुए है। आचार्य श्री नानेश द्वारा बीज रूप मे प्रदान मत्र आज विशाल वट-वृक्ष की भाति विकसित हो चुका है और जिस प्रकार वट-वृक्ष की शाखाए-बाद मे उसकी जडे, आधार बन जाती है, उसी प्रकार धर्मपाल रूपी शाखा आज जैन धर्म को नया आधार प्रदान कर रही है। धर्मपालो ने जितनी शीघ्रता से श्रावकत्व प्राप्त किया है, वह आश्चर्य चकित कर देता है।

अब सम्पूर्ण समाज की जिम्मेवारी है कि वह इन स्वधर्मी बन्धुओ को सर्वभावेन अपनाकर अपनी गोद मे, अपने हृदय मे स्थान दे। जितना शीघ्र समाज मुक्त अंत करण से कार्य कर सकेगा, उतना शीघ्र ही देश को दीप्त करने वाली यह धर्मपाल प्रवृति-मालव अचल से निकलकर देश के अन्य भागो में प्रसारित होकर सघ की एक गौरवमयी राष्ट्रीय प्रवृत्ति बन सकेगी। आइये ! हम इन्हे गले लगावे।

— नई लाईन, गंगाशहर (बीकानेर)

समभाव के अभाव में जीवन अस्थिर, अशान्त, विषम और सन्तापयुक्त बनता है। ससार मे जितनी मात्रा में समभाव की वृद्धि होगी, उतनी ही मात्रा मे सुख की वृद्धि होगी।

श्रीमद् जवाहराचार्य



देश के महान् उपकारक : आचार्य श्री नानेश

केसरी चंद सेठिया

महापुरुषो के जीवन मे अनेक घटनाए ऐसी घटित हो जाती हैं, जो उन र सयम साधनामय जीवन को झकझोर ही नही देती बल्कि जीवन की एक महा उपलिब्ध बन कर उभर आती हैं।

हुक्म सघ की परम्परा मे महान युगदृष्टा, प्रखर व्याख्याता, शास्त्रमर्म राष्ट्रसत, तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी अनेक महान आचार्य हुए हैं। क्रान्तिका आचार्य श्री जवाहर, शाति के मसीहा गणेश की तरह मागलिक आचार्य श्र गणेशीलाल जी के उत्तराधिकारी शासन नायक निष्पृही, आत्मोन्नति के पथ प्रदर्श वीर धरा मेवाड के लाडले आचार्य श्री नानेश के जीवन मे भी अनेक घटनाए घटि हुई। अनेक जटिल समस्याओ का समाधान आप के द्वारा हुआ। लौकिक, सामाजि धार्मिक समस्याओ का समाधान, भूले भटके लोगो का मार्गदर्शन, आम जनता लिये वरदान सिद्ध हुआ है।

ऐसी ही एक घटना मालवा प्रान्त के एक छोटे से गाव गुराडिया मे पदया के समय घटित हुई। स्थान-स्थान पर जहा-जहा पहुचते श्रमण भगवान महावी की दिव्य वाणी का सदेश झौपड़ो से महलो तक अपनी हृदयस्पर्शी अमृतमयी वाण द्वारा प्रतिबोध देते हुए आप गुराडिया गाव पहुचे। किसे पता था इस मालवा छोटे से गाव मे आप द्वारा एक नई जागृति का सूत्रपात, इतिहास का एक नर पृष्ठ खुलेगा।

स्थानीय जनता के अनुरोध पर वहा आप का प्रवचन हुआ। श्रोता म मुग्ध हो गये। गाव मे चर्चा का विषय बन गया। यह समाचार स्थानीय बलाई जाति के अछूत लोगो तक पहुचा। जब उन्हे पता चला कि एक महान योगी का अपनी शिष्य मडली के साथ पदार्पण हुआ है, जो किसी के साथ भेदभाव नही रखते प्रत्येक स्त्री पुरुष उनके दर्शन श्रवण का लाभ ले सकता है।

प्रवचन सुनकर लोगो के चेहरे पर आत्म सतोष के भाव झलकने लगे कहा– प्रभु– हमारा अहोभाग्य है कि स्वय भगवान हमारे द्वार पर पधार गये। हम पिछडे लोगो को आप प्रतिबोध दे। आप यहा विराजे ताकि हम लोग सामूहिक रूप से आप के उपदेश से उपकृत हो सके।

आचार्य श्री ने उनकी भावभरी विनती स्वीकार करते हुए कहा – भाईयो! मेरा तो काम ही है धर्म की राह बताना। आप सब अवश्य लाभ ले। आप लोगो मे और



न्य लोगो मे कोई फर्क नही, आत्मा सबमे एक सदृश्य है। आप की रगो मे वही क्त है जो अन्य लोगो की रगो मे। आप लोग इसलिये पिछडे गये कि आपके घरो ताडी, शराब, अभक्ष्य तथा अन्य कुव्यसनो ने अपना प्रभुत्व जमा लिया। रूढियो । ग्रस्त हैं। इसीलिये आप की आर्थिक, सामाजिक स्थिति ऐसी हो रही है।

प्रवचन के पश्चात् लोगो ने कहा – महाराज आप हमारे लिये मसीहा हो कर पधारे हैं। आप ठीक फरमाते हैं अधिकतर घरो मे ताडी, जुआ, मृत्युभोज तथा और भी अनेक बुराईया हैं। शिक्षा के लिये हमारे पास कोई साधन नही। आप यहा विराज कर हमारा उद्धार कीजिये। सवर्ण लोग हमसे घृणा करते हैं। पास बैठने से कतराते हैं। हमे अछूत कहते हैं। हम क्या करे आप ही बताइये ?

आचार्य नानेश ने कहा – आज से आप अछूत नही अपने को 'धर्मपाल' के नाम से सबोधित करिये। अपने जीवन मे परिवर्तन लाइये। सप्त कुव्यसनो का त्याग करिये। परम्परागत कुरीतियो को छोडिये। अपने बच्चो को नैतिक, धार्मिक व्यवहारिक शिक्षा दीजिये। अपने को सुधारे। इस योग्य बने कि लोग आप को अछूत न समझे। हम साधु केवल वर्षाकाल मे ही चार मास एक स्थान पर ठहरते हैं। अन्य दिनो मे पदयात्रा द्वारा महावीर का सदेश देते हैं। हम साधुओ की विशेषकर जैन साधु, साध्वियो की अपनी एक मर्यादा होती हैं। अत हम यहा अधिक नही ठहर सकते।

आचार्य श्री के उत्तर से लोगो मे निराशा के भाव प्रलक्षित होने लगे। उसी समय अनुयाई भाईयो ने यहा बीडा उठाया कि हम विश्वास दिलाते हैं कि हम इनकी शिक्षा आदि का प्रबध करेगे और इस कार्य मे कई लोग जुड गये। जिन मे श्री गणपतराजजी बोहरा, श्रीमती यशोदा जी, समाज सेवी श्री मानव मुनि, पी.सी चौपडा, भवरलाल जी कोठारी, स्व समीरमल काठेड, मामाजी आदि अनेक लोगो ने इस मे अपना पूर्ण योगदान दिया। स्थान-स्थान पर पाठशालाए खोली। धर्मपाल छात्रावास के नाम से छात्रावास बनाया। गाव-गाव जाकर कार्य किया।

मुझे याद है कि दक्षिण के तत्कालीन सर्वोदयी राज्यपाल श्रीप्रभुदास पटवारी ने धर्मपाल सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप मे भाग लिया था। भगवान महावीर अहिसा प्रचार सघ के मन्त्री होने के कारण अक्सर उनसे मिलना होता था। उन्होने कहा था – "सेठियाजी आज के इस सम्मेलन से मै बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आचार्य श्री के दर्शन हुए वे एक महान सत हैं। अगर इसी तरह हमारे धर्म गुरु अछूतोद्धार का बीडा उठाले तो भारत मे एक अदभुत कार्य हो जायेगा। आचार्य श्री ने यह मौन क्रान्ति लाकर देश का महान उपकार किया है।"

इस मौन क्रान्ति से आज उनमे काफी सुधार हुआ है। शराब के बद होते ही उनकी आर्थिक स्थिति सुधर गयी। महिलाओ पर होने वाले अत्याचार बद हो गये। उनके बच्चे पाठशालाओ से कॉलेज तक पहुच गये। परम्परागत रूढियो से मुक्त हो गये।

नतमस्तक हैं हम ऐसे महान मौन क्रान्ति के जन्म दाता के चरणो मे।



धर्म, धर्मपाल और धर्मपालना

डॉ. आदर्श सक्सेना

धर्मपाल और धर्मपालना के बीच एक अव्यक्त सबंध है जो धर्म तत्त्व की महिमा को रेखांकित करता है। इस प्रकार इन तीनों के बीच की अनोखी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस स्थिति को धर्म की अवधार संदर्भ मे समझना आवश्यक है।

धर्म की अनेक परिभाषाएं दी गई है जिनमे उच्च आध्यात्मिक गु लेकर केवल निर्मल भाव से कर्म करते रहने तक की स्थितिया समाहित जाती है। इस प्रकार यदि तुलसी ने कहा है –"परहित सरिस धर्म नहिं पर पीडा सम नहिं अधमाई," तो शास्त्रो ने आदर्श व्यवहार में धर्म को स दिया है–

श्रूयतां धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत।।

–पद्मपुराण, सृष्टि 19/355–356

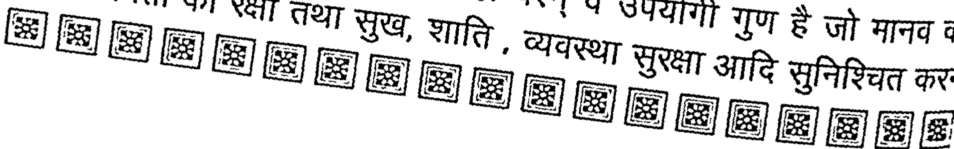
अर्थात् धर्म को पूरा का पूरा कह दिया जाय तो वह इतना ही है कि जो बात अपने प्रतिकूल हो वह दूसरे के प्रति मत करो।

जैन धर्म मे किंचित विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा गया है–

धम्मो वत्थु सहाओ खमादि भावो दसविहो धम्मो।
रथणनय च धम्मो, जीवाण रक्खय धम्मो।।

–कार्तिगेयाणर्वक्खा गाथा –476

इस प्रकार धर्म के चार स्वरूप प्रकट होते है–(1) वस्तु का स्वभाव धर्म है (2). क्षमा आदि दस लक्षण धर्म है, (3) जीवो का रक्षण धर्म है, और (4) सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चरित्र और सम्यकदर्शन रत्नत्रय, धर्म है। इन सब के ऊपर अहिसा को परमधर्म भी कह दिया गया है। यदि इन सबका सार निकालें तो समता भाव, परोपकार, जीवो की रक्षा और आचरण की पवित्रता को धर्म के तत्त्वों के रूप मे गणना कराई जा सकती है। ये विशेषताएं कोई आध्यात्मिक-दार्शनिक अवधारणाएँ नही वरन् वे उपयोगी गुण है जो मानव की रक्षा, मानवता की रक्षा तथा सुख, शाति , व्यवस्था सुरक्षा आदि सुनिश्चित करने



दृष्टि से आवश्यक है और इस प्रकार समाज के अस्तित्व का आधार है। इन गों के अनुसार व्यवहार करना धर्म पालना है और इनके अनुसार आचरण रने वाला 'धर्मपाल' है। इस प्रकार धर्मपाल बनने के लिये धर्मपालन की नसिकता का होना आवश्यक है क्योंकि बिना धर्मपालना की मानसिकता हुए र्माचरण की बात पाखण्ड बन कर रह जाती है। यही वह बिन्दु है जहाँ आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रेरित धर्मपाल आन्दोलन की बात समझ मे आती है क्योकि उन्होंने सम्प्रदाय, जाति अथवा अन्य किसी भी सकुचित विचार से ऊपर उठकर केवल आचरण की पवित्रता को धर्म की पालना की आवश्यक शर्त बताया।

विषय से थोडा हट कर देखें तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य श्री नानेश के समता दर्शन का समाहार भी इस धर्मपाल प्रवृत्ति मे हो जाता है क्योंकि धर्म की एक परिभाषा "समियाए धम्मे" अर्थात् समता ही धर्म है, कह कर भी दी गई है और धर्मपाल आन्दोलन समाज के एक उपेक्षित तथा अस्पृश्य समझे जाने वाले पीडित वर्ग को आचरण अथवा कर्म की पवित्रता के आधार पर समाज के सम्मान्य वर्गो के स्तर पर प्रतिष्ठित करने का अभियान है। आचार्य श्री नानेश अत्यंत सहज रूप मे इस समन्वय का प्रतिपादन कर , सामाजिक पुनरुद्धार का मार्ग प्रदर्शित कर सके यह एक ऐसी उपलब्धि है जिस पर आश्चर्य होता है।

कहते हैं कि सत्य अथवा वास्तविकता कल्पना से अधिक अजनबी होती है–ट्रूथ इज स्ट्रेंजर देन फिक्शन। कुछ ऐसा ही धर्मपाल आन्दोलन के संबध मे भी कहा जा सकता है। ऐसा लगता है यह समन्वय आचार्य श्री नानेश की प्रेरणा की ही प्रतीक्षा कर रहा था इसलिये संयोगो अथवा स्थितियो की एक ऐसी श्रृंखला बनी जिसका किसी परिणति तक पहुचना आवश्यक था। इस विशिष्ट स्थिति पर दृष्टिपात करे।

प्रथम सयोग तो यह बना कि सवत् 2020 मे आचार्य श्री का चातुर्मास धर्मपाल क्षेत्र के केन्द्र नगर रतलाम मे सुनिश्चित हुआ। यह भी संयोग था कि गुरु गणेशाचार्य के उत्तराधिकारी पट्ट शिष्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा का आचार्यत्व पद प्राप्त करने के उपरान्त इस प्रथम चातुर्मासोपरान्त उनके चरण अस्पृश्य समझे जाने वाले बलाई जाति से आबाद क्षेत्र की ओर ही मुडे और यह पूर्वाभास ही तो था कि धर्मपाल जागरण के उनके अभियान प्रारम्भ करने से कुछ दिन पूर्व ही इन्दौर से नागदा की ओर अपनी शिष्य मण्डली सहित बढते हुए आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा की परम्परा के दृढ उपासक वयोवृद्ध श्रावक, समर्थक तथा श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के दृढ



स्तम्भ, श्री नाथूलाल जी सेठिया ने आपसे भेट की। निश्चय ही आचार्य श्री के दिव्य आभायुक्त प्रशान्त मुखमण्डल सबल देहदृष्टि, प्रकाण्ड पाण्डित्य, गु गंभीर प्रेरणादायी वाणी एव युगानुरूप धर्म की प्रतिष्ठा की अटूट लगन प्रभावित होने के कारण उनके मुख से सहज ही ये उद्‌गार निकल पडे। " आचार्य प्रवर! आपके द्वारा निकट भविष्य मे सामाजिक उत्क्रान्ति का कोई अ महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादित होने वाला है।" आचार्य श्री ने भले ही उत्तर मे इत ही कहा हो– "आपकी भावना प्रशस्त है, परन्तु निश्चय ही उनकी प्रखर सवेद भावी का कुछ संकेत पा रही थी। पुन. सयोग बना कि बलाई समाज के ए प्रबुद्ध सदस्य श्री सीताराम राठौड प्रवचन श्रवण करने हेतु प्रेरित हुए ओर त ग्रहण कर सके। उनके मन में स्वयं एवं समाज को उठाने की प्रबल भावना थ जिसे लक्ष्य कर ही आचार्य श्री ने यह नीतिवचन कहे–"जो स्वयं उठने क तत्पर है उसे प्रकृति हजार हाथो से उठाने को लालायित रहती है।" हमें ज्ञा है कि स्वय को उठाने से तात्पर्य है कुसस्कारों का त्याग क्योंकि वे ही उन्न के मार्ग के पथिक के पैरो मे बेडियॉ बन कर बंध जाते है और उसकी प्रग अवरूद्ध करते रहते है, इसलिये उन्होने कुव्यसनो के त्याग का सकल्प क लिया।

अनुकूल परिस्थितियो अथवा सयोगो का क्रम समाप्त नहीं हुआ। 2 मार्च 1964 को जिस दिन 70 गावों की पचायतो से आये 533 परिवारो क सदस्यो, प्रमुखो एव अन्य लोगो की उपस्थिति मे श्री सीताराम जी ने समकि कर जैन धर्म स्वीकार किया तथा विगलित वाणी मे अपने माथे पर लगे अछू जाति के कलक का टीका मिटाने का निवेदन किया। उस दिन आचार्य श्रीज ने अपना प्रवचन ही धर्मनाथ की प्रार्थना से आरंभ किया था। इतने संयोगो, भावाकुल हृदयो के निर्मल उद्‌गारो तथा आचार्य श्री के वत्सल भावो ने तुरन्त ही एक सार्थक नामकरण की पृष्ठ भूमि निर्मित कर दी और आचार्य श्री जी ने प्रारभिक प्रार्थना से सकेत ग्रहण कर उन्हे 'धर्मपाल' नाम प्रदान किया। इस नामकरण की उपयुक्तता बताते हुए उन्होने स्पष्ट किया था कि 'धर्मपाल' शब्द धर्म के व्रत की दृढ पालना के संकल्पकर्ता का विशेषण है और उच्च एवं उज्जवल आचरण के मार्ग पर अग्रसर करने वाला प्रेरक शब्द है।" इस स्थान उस महत्त्वपूर्ण तथ्य की ओर आचार्य श्री जी द्वारा सहज संकेत की बात आती है जिसका प्रारभ मे उल्लेख किया गया है।

तथ्य है धर्म की अवधारणा जो समतामय, सुंस्कारित एव कल्याणकारी समाज व्यवस्था का आधार बनती है। हम देखे कि उन सरल-हृदय, उपेक्षित ग्रामवासियो ने 'धर्मपाल' सबोधन कैसे प्राप्त कर लिया। अपने समाज को



तिरस्कृत व अछूत समझे जाने की पीडा से व्यथित श्री सीताराम जी ने जब आचार्य श्री जी को यह बताया कि मालव प्रान्त के उज्जैन, शाजापुर, इन्दौर, देवास, मन्दसौर, रतलाम आदि जिलो के सैकडो गावो मे बसे बलाई जाति के लोग समाज मे सम्मान और समता के अधिकार से वचित थे तब आचार्य श्री नानेश ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा था कि यदि वे आचरण सुधार ले और सप्त कुव्यसनो का परित्याग कर दे तो वे स्वय सम्मान, प्रतिष्ठा और समानता के अधिकारी बन जायेगे। तत्पश्चात उन्होने जैन धर्म का सरल ज्ञान देते हुए उन्हे बताया था कि जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति के स्तर का निर्धारण उसके आचरण और कर्मो के आधार पर ही होता है तथा भगवान महावीर के शासन मे ऊँच-नीच और छुआ-छूत जैसी कोई चीज नही है परन्तु व्यक्ति के लिये कुव्यसन-मुक्त और सत्सकल्प से सकल्पित जीवन जीना अनिवार्य है। उन्होने आवश्वस्त किया कि यदि वे जिन धर्म की शरण मे आकर सम्यकत्व अगीकार कर ले तो उनके कलुष धुल जायेगे और वे उच्च सामाजिक पद के अधिकारी हो जायेगे। व्यापक बलाई समाज द्वारा इस प्रकार सम्यक्त्व स्वीकार कर लेने पर आचार्यश्री जी ने उन्हे समकित का मत्र देकर उन्हे जैन बना दिया। इसके उपरान्त भी उन नवदीक्षित जैनो के हृदयो मे यह कसक तो रह ही गई कि वे अपमानजनक 'बलाई' नाम से सबोधित किये जाते थे। उनके मन मे इस की कसक और अतर की पीडा को आचार्यश्री जी के सम्मुख विभिन्न गावो से उपस्थित हुए प्रतिनिधियो के बीच श्री सीताराम जी ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया था – "हमने सस्कारित जीवन जीने का सकल्प तो लिया है तथा सभी दुर्व्यसनों का त्याग करने का प्रण भी किया है परन्तु बलाई जाति का काला तिलक तो हमारे सिर पर लगा ही हुआ है, उससे छुटकारा कैसे मिलेगा ? उनका प्रश्न इसलिये सहज था क्योकि जाति व्यवस्था को जीवन-व्यवस्था का अग मानने वाले समाज मे जन्म से ही जाति का निर्धारण होता है कर्म से नहीं। यद्यपि यह मान्यता शास्त्रो के विधि-विधान के पूर्णत प्रतिकूल है क्योकि वहा स्पष्ट कहा गया है –

> कम्मुणा बम्मणो होई, कम्मुणो होई खत्तिओ।
> बइसो कम्मुणा होई, सुद्दो हवई कम्मणा।
>
> – उत्तराध्ययन सूत्र।

सतो की वाणी भी यही है–जाति-पाति पूछै नहि कोई, हरि को भजै सो हरि को होई।' तथापि सास्कृतिक पराभव के युग मे परम्पराओ की सुरक्षा की दृष्टि से जो भ्रामक चिन्तन चला दिया गया था उसके चलते सामाजिक अन्याय



और शोषण की स्थितियो से पूर्ण मुक्ति संभव ही नही थी। इसीलिये गुराडि ग्राम के उन अस्पृश्य समझे जाने वाले नवदीक्षितों के हृदयो में यह संदेह तो ही कि उनके श्रेष्ठ चरित्र और संस्कारित जीवनचर्या के बाद भी बहुजन समा उन्हे स्वीकार नही करेगा। समतायोगी आचार्य श्री नानेश ने उनके संदेह निवारण करने के उद्देश्य से सरल भाव से कहा– "मैंने आज का प्रवचन भगव धर्मनाथ की प्रार्थना से आरंभ किया था। आप सभी लोग धर्म की उपासना अं धर्मपालना के लिये सन्नद्ध हुए हैं। अत. आज से आप स्वयं को बलाई न क 'कर 'धर्मपाल शब्द से अभिव्यक्त करिये। 'धर्मपाल' एक गुण निष्पन्न शब्द है यह धर्म के दृढ व्रत की पालना के संकल्प का परिचायक है। आप स्वयं "धर्मपाल जैन" संबोधित करें तथा तदनुसार ही उच्च उज्ज्वल आचरण करें

आचार्य श्री जी ने तो बडे सहज भाव से कह दिया था कि व्यसन मु संस्कारित जीवन जीने वाला ही सही अर्थ में धर्म का पालन करता है अ 'धर्मपाल' कहलाने का सच्चा अधिकारी भी वही है।

विचारणीय यह है कि यह सब जो इतने सहज रूप में हो गया त जिसके घटित होनें मे इतने संयोग सहायक रहे क्या मात्र समाजोद्धार का ए कार्य था ? समाजोद्धार का कार्य तो यह था ही परन्तु इससे बडा यह ध संस्थापना का कार्य था और धर्मपाल आन्दोलन का यही वह पक्ष है जिस कारण सामाजिक उत्क्रान्ति के रूप मे उसने अपनी पहचान बनाई। इस प्रका मुख्य बात धर्म संस्थापना की है जिस पर किंचित विस्तार से विचार अपेक्षित क्योंकि इसके धार्मिक-सामाजिक सरोकार क्रान्तिकारी संभावनाओ से जुडे हु है।

गीता में भगवान कृष्ण ने 'विनाशाय च दुष्कृताम' के माध्यम साधुओ/सज्जनों के परित्राण और धर्म की स्थापना की बात कही है जिस लिये प्रत्येक युग में वे अवतरित होते है। निश्चय ही सज्जनों से अभिप्रा सद्गुणों से है और दुर्जनों से दुष्प्रवृत्तियों से क्योंकि कोई व्यक्ति इन्हीं क प्रतीक होता है। इस प्रकार तथा दुष्प्रवृत्तियों के विनाश से धर्म की स्थापन स्वतः ही हो जाती है। परन्तु यह कार्य कोई दिव्य-दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति ही क सकता है चाहे हम उसे किसी देवता के नाम से पुकारें चाहे किसी धर्मोद्धारक सत के नाम से। भारत में इस प्रकार के सतो, धर्माचार्यो एव धर्म सुधारकों द्वार धर्म की स्थापना की समृद्ध परंपरा रही है। प्राचीन काल के बुद्ध और महावीर तथा मध्ययुग के निर्गुणिया कबीर, नानक, दादू आदि की उसी परम्परा मे युगानुरूप धर्म की प्रतिष्ठा करने वाले दैवी प्रेरणा प्राप्त संतो की सुदीर्घ परम्परा



मे आचार्य श्री नानेश नवीनतम कडी के रूप में आते हैं। उनका प्रदेय वर्तमान जीवन के संदर्भ मे धर्मस्थापना का कार्य ही है।

भारतीय संस्कृति की एक मान्यता के अनुसार सतयुग मे धर्म चार चरणो पर, त्रेता मे तीन चरणो पर, द्वापर मे दो चरणो पर तथा कलियुग मे एक चरण पर गतिमान रहता है। इस मान्यता के धार्मिक-आध्यात्मिक सदर्भ मे न जाकर यदि इसके परिस्थितिजन्य संदर्भ पर विचार करे तो यह तथ्य प्रकट होता है कि कलियुग मे धर्म का आधार अत्यत क्षीण होता है। इस तथ्य के सुविधापरक रूप पर विचार कर ही प्राचीन सतो ने तो यहां तक कहा है कि कलियुग मे धर्म का क्षेत्र सकीर्ण तथा धर्माचरण की गति धीमी होने के कारण ही मोक्ष की सहज प्राप्ति की संभावनाए उतनी ही प्रबल हैं। तुलसी ने तो यहा तक कहा है – "कलियुग केवल नाम अधारा" इसी विशिष्ट स्थिति की विवेचना करते हुए उन्होने लिखा है – "कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुन्य होहि नहि पापा।" कलियुग की यह विशेष महिमा है कि मन मे किये गये पुण्य तो फलते हैं परन्तु पाप नही। तात्पर्य यह है कि कलियुग मे मात्र शुद्ध आचरण एव शुद्ध चिन्तन से ही मुक्ति सभव है। इस प्रकार यही धर्माराधना का सुगमतम मार्ग भी है। कलियुग के इस प्रताप की बात यदि स्वीकार कर ले तो सप्त कुव्यसनो के त्याग में ही धर्माचरण का मार्ग देखने की जैन धर्म की बात तुरन्त समझ मे आ जाती है क्योकि ये कुव्यसन ही नरक मे गिराने वाले बताये गये है–

द्यूत च मास च सुरा च वेश्या।
पापर्द्धि चौर्य, परदार सेवा।।
एतानि सप्तव्यसनानि लोके।
घोरातिघोर नरकं नयंति।।

अर्थात् जुआ, मासाहार, मद्यपान, वेश्यागमन, शिकार, चोरी और परस्त्रीगमन, लोक मे ये सात व्यसन है जो मनुष्य को घोरातिघोर नरक मे गिराते हैं। इसलिये जैनाचार्य वसुनन्दि ने इन्हे पाप रुपी राजा की सप्ताग सेना कहा है।

धर्मरक्षण पाप-विनाश द्वारा ही सभव है क्योकि धर्म और पाप परस्पर शत्रु है। यदि व्यसन पाप हैं और धर्म की रक्षा पाप के विनाश द्वारा ही सभव है तो धर्म-रक्षण के लिये कुव्यसनो का त्याग कितना आवश्यक है यह कोई भी समझ सकता है, परन्तु समझ ले यह आवश्यक नही क्योकि सरल बात को समझना कई बार कठिन होता है। यदि सत्य को इतनी सहजता से ही लोग स्वीकार कर लेते होते तो न असत्य पनपता न पाप बढता, न धर्म की अवहेलना होती न



कलियुग आता। कौन नही जानता कि व्यसन बुरे है और पाप के लिये प्रे करते है–व्यसन और पाप एक ही सिक्के के दो पहलू है ? व्यसनी भी अ व्यसन के दुष्परिणामो को जानता है फिर भी उन्हें छोड नहीं पाता। पाप की प्रकृति होती है कि जो उनमे एक बार फॅस जाता है, उनसे मुक्त होने मे बहु कठिनाई का अनुभव करता है। परन्तु इन्हे त्यागे बिना धर्म के मार्ग अर्था सम्मान के मार्ग का अनुसरण संभव नहीं। यह समझाने के लिये ही आचार्य श्री नानेश ने बलाई जाति के प्रमुख के सम्मुख कुव्यसनो के त्याग की शर्त रखी थी। यह बात छोटी सी लगती है परन्तु उसी प्रकार प्रचण्ड शक्ति का उत्सर्जन करने वाली है जिस प्रकार पदार्थ का एक परमाणु असीम ऊर्जा का उत्पादन करने की क्षमता रखता है। जिसने कुव्यसनों का त्याग कर दिया उसने स्वत. ही धर्म का मार्ग पा लिया वैसे ही जैसे मैल की पर्त हटते ही दर्पण स्वतः ही निर्मल हो जाता है और इसलिये जिसने व्यसन त्याग दिये उसने धर्म पालन कर लिया–फिर वह और कुछ करे या नहीं, धर्म का उसके आचरण मे संचरण होने लगता है। धर्म की इस प्रकार पालना करने वाला निश्चय ही सच्चा 'धर्मपाल' हुआ।

यह बहुत गहरा सत्य था– अध्यात्म के क्षीर-सिधु से निकाला गया नवनीत, जिसे अत्यंत सहज भाव से आचार्य श्री जी ने सुपात्रो को उपलब्ध करा दिया। परिस्थितियो के ऊपर वर्णित संयोगो के भी यदि इस नामकरण मे सहयोग दिया हो तो भी यह भूलना नही चाहिये कि संयोग भी पात्र और साधना के साथ ही बनते है। आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रदत्त 'धर्मपाल' नाम को इसलिये संयोग न मानकर उनकी उस तत्त्वदर्शी दृष्टि और गहन मानवानुभूति का ही परिणाम माना जाना चाहिये जो किसी युगदृष्टा धर्माचार्य को ही उपलब्ध होती है और इसलिये बात धर्म के उस तत्त्व की आती है जो सप्त कुव्यसनो के त्याग से ही प्राप्त हो सकता है। धर्म का तलस्पर्शी ज्ञान रखने वाला ही अपने चिन्तन की कडियो को इस प्रकार जोड सकता है कि वे इतनी सुदृढ श्रृखला बन जाये कि वह मदोन्मत्त गजराज को भी जकड सकने मे सक्षम हो तथा शुद्ध-चित्त-सात्विक जीवनचर्या वाले मनुष्य के पोत को वारिधि की उत्ताल तरंगो से खीच, पोताश्रय मे सुरक्षित भी कर सके। आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रेरित तथा युवाचार्य श्री रामेश द्वारा पोषित व्यसनमुक्त, संस्कारित, समता-समाज की स्थापना के अभियान को इसी रूप मे देखा जाना चाहिये। धर्म पालना के कठिन मार्ग का अनुसरण करना जो स्वीकार कर सके तथा उस पर सतत अग्रसर होता रहे वह निश्चय ही ध र्मपाल कहलाने का अधिकारी है। ऐसा धर्मपालक अन्य व्यक्तियों के लिये भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है और धर्म की पालना करने वालो की संख्या बढाता जाता है। विगत 33 वर्षो के धर्मपाल आन्दोलन पर यदि हम दृष्टिपात करे तो



र्मपाल क्षेत्र के सतत विस्तार, धर्मपालो की सख्या मे निरतर वृद्धि तथा अन्य र्गो के व्यापक स्तर पर इससे जुडते जाने की अभिलाषा से इसकी लोकप्रियता माणित होती है। इस प्रकार धर्मपालना का यह सुगम मार्ग दिखा कर आचार्य ी नानेश ने निश्चय ही उस युगानुरूप धर्म की प्रतिष्ठा की है जिसकी आज े विषमतामय जीवन मे अत्यधिक आवश्यकता थी। उनका यह प्रदेय ामाजिक-सास्कृतिक उत्क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा, इसमे कोई सन्देह ही।

—बी—17 शास्त्री नगर, बीकानेर—334003

आज सर्वत्र जिस रूप मे विद्वेषपूर्ण वातावरण फैला हुआ है, उसमें भाषा-विवेक के विकास की प्रबल आवश्यकता है। भाषा प्रयोग की दृष्टि से अपना दिल बदल कर दूसरे के दिल को बदलने का यदि व्यापक पैमाने पर सत्कार्य किया जायेगा और प्रभावशाली अभियान चलाया जायेगा तो आशा की जा सकती है कि इस विद्वेषपूर्ण वातावरण को प्रेममय वातावरण मे रूपान्तरित कर सके। जहा-जहां कटुता दीखे, वहा-वहां प्रेम और सहयोग की वचन गगा को बहाते चलो। प्रेम की रसधारा में डूब कर कौन अधम से अधम भी अपना हृदय परिवर्तन नही कर लेगा ?

—आचार्य श्रीनानेश



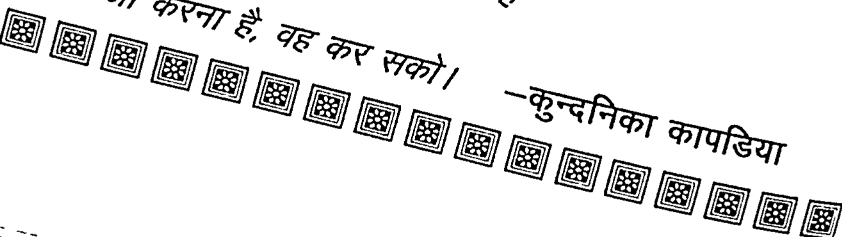

धर्म का रंग

महेन्द्र मिन्नी

परमश्रद्धेय, समताविभूति आचार्य श्री नानेश ने अपने जीवन काल अनेकानेक उपसर्गो-परिषहो को सहन करते हुए जिन शासन की अपूर्व प्रभावना की है। आचार्य-प्रवर ने जिन शासन की प्रभावना मे मालव प्रान्त विचरण के समय छोटे-छोटे ग्रामो के जन-जीवन को निकट से देखा और ममतामय अंतःकरण से उन ग्रामजनो को जीवन कल्याण का मार्ग बताया। उसी मालव विहार मे आप श्री के धर्मोपदेशो से वहां की बलाई जाति के लोगो की चेतना जागृत हुई। यह जाति हिंसा-मद्यपान आदि मे डूबी हुई थी किन्तु आचार्य प्रवर के धर्म उपदेश से इस जाति ने धर्म-पालन का संकल्प लिया और आज वहां की पूरी की पूरी जाति धर्मपाल बन गई। अहिंसामय समता के पथ पर चल कर यह जाति कीचड मे कमल की भांति खिल उठी है। उनका जीवन धर्म के रंग में रंग चुका है। वे प्रतिदिन सामायिक और स्वाध्याय करते है। वहां के बालक बचपन से ही प्रतिक्रमण और भक्तामर आदि के पाठ कंठस्थ करने लग जाते हैं। वहां के गांव-गांव धार्मिक पाठशालाएं खुल गई है। व्यसन युक्त लोगो से धर्मपालो ने लेन-देन व्यवहार बन्द कर दिया है। इस प्रकार धर्मपाल शुद्ध-सात्विक जीवन जी रहे हैं।

धन्य है ऐसे एकान्त परोपकारी जीवन को
परिषहो को सहन करके जगाया है जन जीवन को
उपकार गुरुवर का कभी न भूलें
पाते रहे सदा-सदा तव दर्शन को

—शाखा संयोजक, श्री अ. भा. सा. जैन संघ
गंगाशहर–भीनासर



हमारी प्रार्थना इसलिये नही कि
हम जो मांगे तुम से मिले,
हमारी प्रार्थना तो तुम्हारी ओर
हमारे हृदय उन्मुख करने के लिये है
ताकि हमारे द्वारा
तुम्हें जो करना है, वह कर सको।

—कुन्दनिका कापडिया

धर्मपाल जागरण - एक आन्दोलन

शंकर जैन
उपजिला प्रमुख राजसमन्द

कल ही मुझे पढने को मिला "जोधाराम जोजफ बना' अर्थात् नोखा निवासी जोधाराम ने अपना धर्म परिवर्तन कर डाला और वह ईसाई धर्मावलम्बी बन गया। व्यक्ति किसी भी धर्म को माने वह किसी भी धर्म का अनुयायी हो यह उसकी इच्छा है किन्तु जब भूख, गरीबी, अस्पृश्यता, घृणा से तग आकर कोई व्यक्ति धर्म बदलता है तो हमारी चिन्ता बढ जाती है। किसी भी पददलित को निकट लाना हो तो हमे सर्वप्रथम प्रेम का झरना बहाना होगा, उसे स्नेह देना होगा। मनुष्य के जीवन मे बुद्धि एव हृदय का बडा महत्व है। बहुत से तथाकथित समाज सेवी लच्छेदार भाषण समाज सुधार के लिये देते तो हैं किन्तु वे हृदय से शून्य होते है वे तो शायद यह सोचते है कि मृत्यु के समय घर का समस्त वैभव, धनादि उनके साथ जायेगा। समाज सेवा के सदर्भ मे वे बडे कृपण होते हैं फिर भी यश की, प्राप्ति की भूख को वे अपनी बुद्धि से मिटाने की कुचेष्टा करते हैं। ऐसी परिस्थिति मे भी मै समाज के ऐसे व्यक्तियो को जो धर्मपाल जागरण का काम तन-मन धन से कर रहे हैं नमन करता हूँ। उनको मेरा प्रणाम।

जो ज्योति रतलाम के आस पास गुरुदेव ने आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व जलाई उसे बहुत से समाज सेवी जीवित रख रहे है। प्रसग था एक मौसर का, सैकडो, सहस्त्रो बलाई जाति के बडे-बूढे वहा एकत्रित थे, युवाओ की भीड थी वहा, गुरुदेव सहसा पहुचा गये उन्हे पता चला कि बलाई जाति मे मास, मदिरा मौसर (मृत्यु भोज) का बोलबाला है, लोग उन्हे अछूत समझते हैं, वे हीन भावना से ग्रस्त हैं। गुरुदेव का अन्तर्मन जाग उठा, उन्होने उन्हे सबोधित किया और 'धर्मपाल" समाज का बीज डाल दिया उस सम्मेलन मे। जैन साधुओ की तरह गुरुदेव की तो एक सीमा थी, वे प्रवचन द्वारा प्रेरणा ही दे सकते थे। गुरुदेव के प्रवचन के साथ उनका त्यागमय, तपोमय, शुद्ध सात्विक जीवन भी बोल रहा था जिसका जन समुदाय पर सार्थक प्रभाव पडा और सैकडो बलाई (मेघवाल) समाज के सदस्य मांस, मदिरा, मृत्युभोज का त्याग करने के लिये उस सभा मे उठ खडे हुए। गुरुदेव ने उनकी भावना को समझा उन्हे सकल्प



करवाया और अपने अनुयाइयो को भी प्रेरणा दी कि अछूत्तोद्धार के इस यज्ञ मे अपनी आहुति दे। गुरुदेव के अनन्य भक्त श्री गणपतराज जी बोहरा, श्री पी.सी. चौपडा मामाजी, समीरमल कांठेड आदि अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने अपनी आहुति देने का दृढ निश्चय किया, उसी का परिणाम है कि आज धर्मपाल समाज जागृत हो गया है, व्यसन मुक्त होकर वह सुखद जीवन जी रहा है।

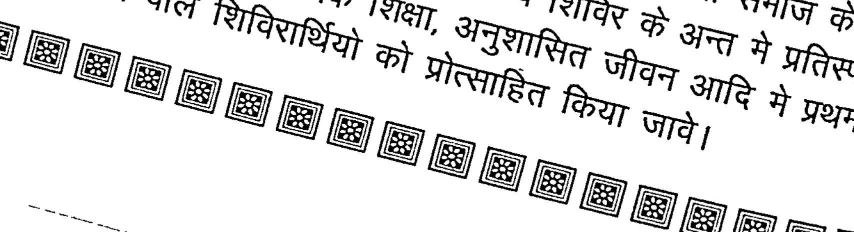
सेठ श्री गणपतराज जी बोहरा व उनकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी यशोदा देवी ने तो अपनी थैली ही खोल दी और रतलाम मे एक छात्रावास भवन बना डाला जहा पर गरीबी की रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने वाले धर्मपाल बालक शिक्षा-सस्कार प्राप्त कर रहे हैं। अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ भी समाज-जागरण के इस कार्यक्रम को गति दे रहा है। प्रतिवर्ष प्रवास-कार्यक्रम, धर्मपाल-सम्मेलन आदि का आयोजन कर गुरुदेव के सकेत एव भावना मात्र को समझकर अपनी सेवाएँ दे रहा है।

किन्तु अभी हमे बहुत कुछ करना है। स्वर्गीय सुमेर मुनि ने खटीक समाज को जागृत करने के लिये 'वीरवाल' समाज की स्थापना की किन्तु उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् उस मशाल मे तेल डालने वाले नही के बराबर रहे और वह आन्दोलन गति नही पकड सका। हमारे पास तो सैकडो साधु-साध्वियो का आशीर्वाद है, उनका चिन्तन, आध्यात्मिक जीवन व धर्मपाल समाज को समाज के साथ जोडने की उनकी मंगलकामना। हमे सदैव आगे बढते रहने की सदभावना देती रही है। इस सबंध मे मेरे कुछ सुझाव हैं :–

1 धर्मपाल-जागरण सेवा कोष की स्थापना की जावे और कम से कम बीस लाख रुपयो की राशि इस कार्य के लिये एकत्रित की जावे जिसके ब्याज से इन कार्यक्रमो को गति मिल सके।

2 जो धर्मपाल युवा प्रतिक्रमण , भक्तामर सीखे, धार्मिक परीक्षा मे सम्मिलित होकर उत्तीर्ण हो उनके उत्साह मे वृद्धि की जावे उन्हे छात्रवृत्ति, पारितोषिक आदि देकर सम्मानित किया जाये।

3. प्रतिवर्ष कम से कम तीस दिवस का एक शिविर चाहे वह सख्या की दृष्टि से छोटा ही हो, आयोजित किया जावे, उसमे सम्मिलित होने वाले युवाओ को प्रोत्साहित किया जावे, निकटस्थ विचरने वाले मुनिराज महासतियां जी भी शिविर मे विराजे, समता सेवा समाज के कार्यकर्त्ता समय दे। उसमे पूर्णकालिक रहे व शिविर के अन्त मे प्रतिस्पर्धा आयोजित कर धार्मिक शिक्षा, अनुशासित जीवन आदि मे प्रथम, द्वितीय आने वाले शिविरार्थियो को प्रोत्साहित किया जावे।



जो गरीब धर्मपाल चयनित परिवार मे आते हो उनका सर्वक्षण कर इन्द्रा-आवास, छात्रवृत्ति, वृद्ध सहायता आदि जो राजकीय सहायता -कार्यक्रम चलते हो उनसे लाभान्वित किया जावे।

पचास चुने हुए युवाओ का एक-सी वेशभूषा मे गुरुदेव की सेवा मे एक धार्मिक शिविर आयोजित किया जावे।

धर्मपाल समाज मे जागृति लाने के लिये एक तपस्वी कार्यकर्त्ता की पूर्णकालिक नियुक्ति की जावे।

इस प्रकार योजनाबद्ध ढग से धर्मपाल समाज सेवा के कार्य को हाथ मे लिया जावे तो वह दिन दूर नही जब सैकडो-सहस्रो बलाई-धर्मपाल बने, बन्धु-बहिने जय गुरु नाना, जय गुरु राम का जयघोष सम्पूर्ण मालव प्रान्त मे गुजा देगे और अपने जीवनोत्थान की ओर अग्रसर हो सकेगे।

यह सही है कि सवेदनशीलता का अनुभाव सर्वजन दु ख निवारण के लिये एक रामबाण औषधि है किन्तु किसी औषधि के मात्र पास मे होने से रोग का निवारण नहीं हो जाता। रोग के निवारण के लिये विधिपूर्वक उस औषधि को ग्रहण करने करने की क्रिया करनी होती है। इसी प्रकार सवेदनशीलता स्वतः ही प्रसारित और विस्तारित नहीं हो जाती है। इस अनुभव के प्रसार और विस्तार के लिये मनुष्य को अपनी वृत्तियो और प्रवृत्तियो से विधिपूर्वक विभिन्न क्रियाए करनी होगी।

—'संस्कार क्रान्ति' आचार्य श्री नानेश



मद्य निषेध गीत

प्रकाश चंद्र श्रीमाल

(धर्म प्रचार और व्यसन मुक्ति अभियान मे गीतों की बड़ी महती भूमिका है। धर्मपाल क्षेत्र के हृदयस्थल ग्राम रिंगनोद का श्रीमाल परिवार धर्म जागरण के इस कार्य मे गत 30–33 वर्ष से निरन्तर सक्रिय सहयोगी रहा है। उसी परिवार के श्री प्रकाश चन्द्र श्रीमाल ने सरल हिन्दी मे गाए जाने वाले गीत जो वे स्वय भी गाते हैं – संकलित करके प्रकाशनार्थ भेजे हैं। ये स्फुट गीत यहां प्रस्तुत हैं)

नशा न नर को चाहिये
द्रव्य-बुद्धि हर लेते
एक नशा के कारणे
सब जग त्यागी देत

अवगुन कहौं शराब को
ज्ञानवंत सुनि लेय
मानुष से पशुआ करे
द्रव्य गांठ को देय

अच्छा नही है भाई
बिल्कुल शराब पीना
सबको शराब पीकर
होता है स्वार जीना

प्यारी अगर ये तुमको
दुश्मन शराब होगी
बरबादी घर की, इक दिन
बेशक जनाब होगी।

पीना शराब तुमको
सिखला दिया है किसने
पैसो का खून जिसमे
इज्जत खराब जिसमे

पैसा लुटाओ अपना
पागल भी तुम कहाओ
पीना शराब का अच्छा है
फिर क्या तुम्ही बताओ।

श्री अध्यक्ष, श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ, रिंगनोद

धर्मपाल बन्धकों की रिहाई एक अद्भुत करिश्मा

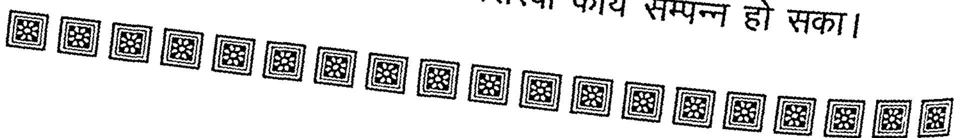
स्व. श्री समीरमल जी कांठेड

(श्री समीरमल जी काठेड प्रमुख सयोजक श्री धर्मपाल प्रचार प्रवृत्ति ने अपने कार्यालय 60 बजाजखाना जावरा से लगभग 30 वर्ष तक धर्मपाल प्रवृत्ति का सचालन किया। प्रस्तुत लोमहर्षक घटना उनके स्वर्गवास से थोडी सी पूर्व घटित हुई और उन्होने जिस प्रकार साहस, सूझ–बूझ और अपने सम्पर्को के सदुपयोग से, इस अपहरण काड को निष्फल कर बधको को छुडवाया, वह सचमुच एक अद्भुत घटना है। प्रस्तुत आलेख स्वय श्री समीरमल जी ने अपने स्वर्गवास से पूर्व अपनी हस्तलिपि मे लिखा था, जिसे अविकल रीति से प्रकाशित करते हुए हमे हर्ष हो रहा है–स)

दिसम्बर माह मे मैं धर्मपाल क्षेत्रों मे प्रवास पर था जब कुछ धर्मपाल भाईयो ने कुछ युवा एव अधेड उम्र के लोगो के लापता होने कि सूचना दी। गुमशुदा छ. माह से ज्यादा समय से लापता होना परिवार के लिये दुखद घटना थी। ऐसी शिकायते रठडा, गीनवान्या घुलेट आदि ग्रामो मे सुनने को मिली इसमे कुछ प्रभावी धर्मपाल परिवार के व्यक्ति भी सम्मिलित थे परिवार के लोगो ने बताया कि काफी समय से खोजबीन कर रहे हैं पर कुछ सुराग नही मिल पा रहा है मैने नागदा और खाचरोद के पुलिस अधिकारियो को इसकी जानकारी दी पर उन्होने इस गुमशुदगी को गभीरता से नही लिया उनका कहना था आवारा गर्दी मे भागे है। मैने उन्हे समझाया कि ग्राम गीनवाव्या डॉ नन्दाराम अधेड उम्र का व्यक्ति है उसके घर मे बाल बच्चे हैं, जमीन जायदाद है उसकी ग्राम मे किसी से दुश्मनी नही है और घर मे भी शान्ति है। वह क्यो भागेगा पर फिर भी पुलिस विभाग निष्क्रिय रहा। मैने एस पी उज्जैन को इस विषय पर आपत्ति भरा गभीर पत्र भेजा और उसकी प्रतिलिपिया म प्र. सरकार के सभी मंत्रियो, अधिकारियो को भेजे एक सप्ताह बीत गया पर सतोषजनक कही से कार्यवाही के समाचार नही आये। मात्र पूर्व सासद श्री बाल कवि वैरागी जी ने मुझे मुख्यमत्री को भेजे पत्र की प्रति भेजी। मैंने भारत सरकार के अनेक विभागों मे पत्र भेजे। उस पर कुछ प्रतिक्रियाए हुई और सदेहास्पद प्रान्तो मे भी खलबली मची उससे घबरा कर जहा यह लोग बन्धक थे उन लोगो ने कुछ सावधानी



बरती और उसी का फायदा उठाकर ग्राम रठडा का जगदीशचन्द वहां से निकला और मुश्किलो से नागदा भाग कर आ गया। जैसे ही वह ग्राम में उसे साथ लेकर नागदा क्षेत्र से 8/10 ग्राम के लोग जावरा आये पूछताछ मालूम हुआ कि मेरठ जिले के ग्राम शीवपुर छीला ग्राम मे एक प्रमुलाल नाम का व्यक्ति है उसके पास सेकडों बीघा जमीन है, मवेशी है और उसके पर डेढ सौ बन्धक मजदूर हैं, जिनसे बेगार लेता है और जो उसके चंगुल फंस गया निकलना मुश्किल है। बन्दूक धारी 3/4 लोग हरदम उस पर रखते है। आस-पास की पुलिस चौकियो पर भी उसका साम्राज्य है। उस के लोग नागदा आये और हमें फुसलाकर ले गये इस प्रकार धर्मपाल परिवार इस क्षेत्र के 18 ग्रामो के लोग उसके यहां बन्दी हैं और उनको छुडाकर लाना बडा दुष्कर कार्य है। उसके भयभीत चेहरे और घटना वर्णन सुनने मे स्थिति की गभीरता को समझ गया। जरा सी असावधानी उन बन्धको के जीवन को खतरे मे डाल सकती थी पर जगदीश के आ जाने से आशा की किरण जरूर दिखाई देने लगी। मैंने भोपाल श्री नाहटाजी से जो जन शक्ति नियोजन मंत्री हैं। फोन पर स्थिति बताई उन्होने मुझे आश्वत किया कि मैं आई. जी. आदि से चर्चा कर आपको बताता हूं कुछ संतोष हुआ तीसरे दिन मुझे उज्जैन के एस पी. का फोन मिला। मैंने उनको विस्तृत जानकारी दी उन्होने उज्जैन से सशक्त पुलिस बल भेजा और यथास्थान से सभी बन्धको को रिहा कराया। साथ ही इस स्केन्डल के मुखिया श्री प्रमुलाल नागर तथा इसका भाई मदनलाल नागर जो सहारनपुर रेल्वे स्टेशन मास्टर हैं को बन्दी बनाकर ले आये हैं। ये लोग उज्जैन जेल मे बंद है और विवेचना चल रही है जैसे-जैसे बन्धक छूट कर घर आये परिवार मे खुशिया छा गई लोग जावरा खुशी से झूमते आने लगे। मैने उन्हें उन ग्रामो का प्रवास का आश्वासन दिया है। काफी फोन और सूचनाओ पर मै ग्राम गीनवान्या जरूर गया (नागदा के पास है)। मेरे पहुंचते ही जो चेहरो पर खुशियो के भाव मैने देखे वह जीवन भर नही भुला पाऊगा। वृद्ध बूढी महिलाएं खुशी के आसु लिये पैरो मे लौट रही थी। कहना था गुरु नानालाल बावजी की कृपा से इस समाज और आपने हमारा साथ दिया वरना हमारी कौन सुनने वाला था। उस ग्राम से विदा हुआ। वह शब्द मेरे कानों मे गुंज रहे थे। यदि इस प्रवृत्ति का शुभारंभ न होता तो इन लोगो से सम्पर्क का प्रसंग ही नही बनता। पता नही इतना बडा स्केन्डल कहां दब कर रह जाता कितने घर उजडते कितनी खुशियां असमय लुप्त हो जाती है। मैंने आचार्य श्री नानेश को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया कि उनके पुण्य प्रताप से यह यशस्वी कार्य सम्पन्न हो सका।



आप-बीती

श्री मोतीलाल जी पंडा, धर्मपाल–जैन

(श्री मोतीलाल जी अपने क्षेत्र के नेता और प्रबुद्ध धर्मपाल कार्यकर्त्ता हैं। ये क्षेत्र विधानसभा चुनाव भी लड चुके हैं। शासन हेतु समर्पित हैं।)

परमपूज्य धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालाल जी म सा, पूज्य श्री म्पत मुनि जी म. सा. पूज्य श्री धर्मेश मुनि जी म सा एव अखिल भारतीय सघ था श्रावक सघ तथा श्रावक-श्राविका वर्ग का धर्मपाल समाज सदा-सदा ऋणी हेगा। हम कैसे किन शब्दो मे आभार प्रदर्शन करे ? बलाई कहलाने वाली, अशिक्षित, अबोध, असहाय, निर्धन और कुव्यसनो मे लिप्त हरिजन जाति को अपनाया और अथक प्रयास कर बुराइयो से वचित किया, शिक्षित बनाकर उच्च बनाने का पूरा प्रयास किया। हमे धर्मपाल-जैन बनाया।

स्वय मै अपनी सत्यकथा कहता हूँ। करीब 30 वर्ष पूर्व मुझे धर्म सबधी कुछ भी ज्ञान नही था। हम लोग मासाहारी थे और एक दिन जब मेरे पिताजी आहार पका रहे थे तो अचानक पूज्य श्री सम्पत मुनि जी म सा ने गाव मे आकर आवाज लगाई। मेरा नाम सुन कर मेरे पिता हाथ धोने दौडे। बडे भाग्य कि जैन साधु हमारे गांव चौक मे पधारे हैं। पिताजी ने मुझे बुलाया। मैने पूरी जाति के लोगो को मन्दिर मे एकत्र किया। पूज्य श्री सम्पत मुनि जी म सा ने उपदेश दिया। सर्वप्रथम मेरे पिताजी ने और फिर गाववासियो ने अहिसा व्रत स्वीकारा तथा 7 व्यसन छोडे। मै सतो को उज्जैन की और विहार मे विदा करा कर आया। पूज्य मुनिराज ने इन्दौर के धर्मपाल प्रशिक्षण शिविर की सूचना दी।

मै इन्दौर पहुचा और मैने धर्मपाल प्रशिक्षण शिविर मे भाग लिया। इस शिविर मे 50 धर्मपाल पहुचे थे। सघ प्रमुखो के आदेश पर हम सभी 50 धर्मपाल भोजन शाला मे जा बैठे। वहा एक ग्रामीण सेठ ने एक वृद्ध ग्रामीण धर्मपाल से पूछा – आप किस जाति के है ? उन्होने कहा – बलाई। सुनते ही सेठजी ने अपना दोना–पत्तल उठाया और दूर जा बैठे। उस वृद्ध बलाई ने बाद मे अपने युवा साथी से कहा कि तुम तो कहते थे – महाजन हमसे छुआछूत नही मानते और भाईचारा रखते है। यहा तो विपरीत स्थिति दिखाई दे रही है। उस



धर्मपाल ने रात्रि में प्रश्नोत्तर के समय यह घटना बयान की। इस पर । ने उस वृद्ध धर्मपाल को बुलाया – उसके वस्त्र गंदे थे, बाल बिखरे थे। ने कहा – भाई । कुछ सफाई भी रखो।

दूसरे दिन प्रात:काल के प्रवचन में मुनिश्री ने छुआछूत की घटना ० हृदयस्पर्शी रीति से रखा तथा कहा – ऐ महाजनों ! हम अपना चौमासा (किसी बरगद के पेड के नीचे भी कर लेगे। महावीर के शासन मे किसी का अपमान सहन नही किया जावेगा। सारी सभा खडी हो गई खम्मा- करने लगी। वे वृद्ध ग्रामीण सेठ भी खडे हुए और क्षमा प्रार्थना पूर्वक के चरणो मे माथा टिका दिया। हम सभी धर्मपाल पुलकित हुए। सायं हम परोसगारी की और सभी महाजन जीमे।

इसके बाद तो प्रशिक्षण शिविरो मे जाने की लगन लग गई। श्री धर्मे मुनि जी से बहुत प्रेरणा मिली। बीकानेर, नोखा, देशनोक, अजमेर, रतलाम पुन. इन्दौर आदि स्थानो पर शिविरो मे भाग लेकर अपना जीवन सफल किया मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया और उनकी धर्मपत्नी मामीजी श्रीमती धू बाई जी पिरोदिया ने हमारे गाव ताजपुर मे मेरे घर 7 दिन रूक कर पर्युषण प की आराधना की तथा हमे कराई। हम धन्य हो गए। मैने मामाजी के सा समय-समय पर तिलावद, रूलकी, हरसोदन व मक्सी आदि गावो मे भ्रम किया। हमारे गावो मे समता भवन बनने लगे। सामायिक-धर्म साधना हो लगी। श्री गोकुलचदजी सूर्या ने (अब स्वर्गीय) हमारे गावो मे कूप खुदाकर ज सकट समाप्त कराया।

प्रवास में श्री समीरमल जी कांठेड सह जोडे आते थे। श्री धर्मपाल छात्रावास के अधीक्षक वयोवृद्ध श्री नानालाल जी मट्ठा गांव-गाव मे घूम कर ह संस्कार शिक्षा देते थे। धर्मपाल उनकी सेवा को नही भूल सकते।

सडक पर पत्थर कूटने वाले, रेती बिछाने वाले छोटे-छोटे बलाई बच्च को सिलाई आदि व्यवसायो का प्रशिक्षण दे, शिक्षा दिलाने मे संघ का सहयोग हम लोग नही भूल सकते। सघ के साथ पूरे क्षेत्र मे भ्रमण कर, पदयात्राओ – रैलियो मे भाग लेकर हम लोगो ने बलाई समाज मे जागृति पैदा की। बच्चो को बच्चियो को शिक्षा की ओर उन्मुख किया जिससे अनेक प्रतिभाए आज सम्मानित पदो पर पहुंची हैं।



हमारा सगठन सशक्त हो गया। अत हमने सरकार की जो योजनाए थीं – उनका भी पूरा लाभ उठाया। नए-नए छात्रावास खुलवाए, बच्चो को छात्रवृत्तिया आदि दिलवाई।

धर्मपाल समाज सेठ सा श्री गणपतराज जी बोहरा और माता यशोदा देवी जी बोहरा की आत्मीयता व सहयोग भावना को कभी नही भूल सकेगा।

आचार्य श्री और सघ की देन है कि आज धर्मपाल समाज के रूप मे हम सम्मानपूर्ण जीवन जी रहे है। मेरी माताजी अति वृद्ध है। मुझे उनकी सेवा मे रहना पडता है अन्यथा मेरी गुरु चरणो मे समर्पित होने की अत करण से कामना है।

तथा प्रकाश यावन्त ससारवेशहेतव ।
तावन्तस्तद्विपर्यासाचिवार्णसुखहे तव ।।

परिभ्रमण के जितने प्रकार के और जितने कारण हैं उतने प्रकार के और उतने ही उनके प्रति भिन्न दृष्टिकोण होने से मोक्ष सुख के कारण हो जाते हैं।



ात्नियॉ, किन्तु हमारे यहां एक पत्नि होती है बाकी सभी माताएं।

जब किसी विदेशी महिला ने स्वामी जी से प्रभावित होकर स्वामी जी से एक पुत्र रत्न अपने समान प्रदान करने हेतु याचना की तो स्वामी जी ने कहा कि बस यही बात है न आज से मुझे पुत्र कहना।

अत यह निर्विवाद है कि भारतीय संस्कृति मे सुसस्कारो का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारतीय भूमि सदा से ऋषि मुनियो, मनीषियो, ससार की आसारता को पहुचानने वाले दार्शनिको की उद्गम भूमि रही है। इस सस्कृति का निर्माण रातो रात नही होता यह तो युगो से बहने वाली सस्कारो की अजस्र धारा से निर्मित होती है और वही भविष्य मे सामाजिक मान्यता प्राप्त कर लेती है।

यहा की सस्कृति मे ही पाच महाव्रत है एव सप्त कुव्यसन त्याग एव समाधि गुण तथा क्षमा आर्जव इत्यादि अनगिनत गुण भरे हुवे है। इन्ही सस्कारो की देन है कि भगवान महावीर को तथा भगवान राम को अनेक परिषह मिलने पर भी इन महापुरुषो ने अपनी क्षमा को नही त्यागा। यही की सस्कृति का स्पष्ट उद्घोष है कि –

" सर्वे भवन्तु सुखिन , सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दु ख भाग् भवे।।

एक महान् सन्त आचार्य श्री नानेश ने कहा है कि –

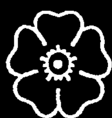
सस्कार ही सस्कृति का प्राण होता है। जिस व्यक्ति मे उस देश की सस्कृति के सस्कार नही होते वह निरीह पशु के समान है।

–गिराणी सुनारो का मौहल्ला, बीकानेर।

सम्राट सिकन्दर ने एक बार किसी फकीर से कुछ मागने को कहा। फकीर ने कहा, "मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता ही नही है।"

सिकन्दर ने जब बार–बार अपना आग्रह दोहराया तो फकीर ने अंत मे कहा,"ठीक है, तू अगर मुझे कुछ देना ही चाहता है तो जरा बाजू भर खिसक जा क्योकि तू बीच मे खडा रह कर मुझे प्राप्त होने वाली सूर्य की किरणो को रोक रहा है।






खण्ड 3

धर्मपाल प्रवृत्ति के बढ़ते चरण

-जानकीनारायण श्रीमाली

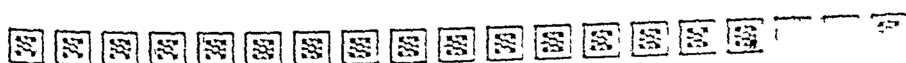
धर्मपाल प्रवृत्ति के बढ़ते चरण

श्री जानकी नारायण श्रीमाली

शात-क्राति के दाता, गुरुणा गुरु आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा ने आसोज सुदी 2 सवत् 2019 को स्वातत्र्य की अमर साधिका उदयपुर नगरी के राजप्रासादो मे अपने सुशिष्य श्री नानालाल जी म सा को युवाचार्य पद पर अभिषिक्त किया और इसी पावन दिवस पर प्रबुद्ध श्रावको ने श्रमण-सस्कृति की सुरक्षा और शुद्धाचारी सस्कृति के विकास हेतु श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की स्थापना की। आसोज सुदी 2 सवत् 2019 के इस पावन दिवस के स्वर्ण विहान की ये दो घटनाए--युवाचार्य मनोनयन तथा सघ सस्थापन महावीर के शासन मे नवीन युगान्तरकारी दृश्य उपस्थित करेगे और विषमता की विष ज्वालाओ से दग्ध मानव जाति को और विशेषत भरत खड को समता की शीतल अमृत का रसपान कराएगे और वह भी इतना शीघ्र, किसी की कल्पना मे भी यह बात नही आ पाई थी।

मात्र चार माह पश्चात् ही माघ कृष्णा 2 सवत् 2019 को आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा का स्वर्गारोहण हो गया और उसी दिन युवाचार्य श्री नानालाल जी म सा को हुक्म सघ के अष्टम पाट पर विराजमान किया गया तथा चारित्र चूडामणि, बाल ब्रह्मचारी परम पूज्य श्री 1008 आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने आचार्य-पद का दायित्व धारण किया।

मात्र 5 माह पश्चात् ही आचार्य श्री नानालाल जी म सा ने आचार्य के रूप मे अपने प्रथम चातुर्मास हेतु रत्नपुरी रतलाम नगरी मे प्रवेश किया। आचार्य श्री ने अपने बाल्यकाल और किशोरावस्था मे समाज जीवन मे व्याप्त विषमता को निकटता से देखा और अनुभव किया था तथा अब साधु जीवन की मर्यादाओ के अनुसरण मे गाव-गाव मे पैदल विहार करते हुए आपश्री का कोमल मन समाज के सुख-दुख से एकात्म हुआ और आपकी सहज प्रतिभा ने समाजोन्नति के लिए समता-दर्शन का प्रतिपादन किया। आपकी तप पूत वाणी और साधक जीवन का श्रोताओ पर गहरा प्रभाव पडा और समतामय समाज जीवन का विचार वातावरण मे परिव्याप्त होने लगा। आचार्य श्री नानेश ने समता के दर्शन



और व्यवहार पक्ष को सरल सुबोध भाषा में जन-समूह के समक्ष रखा। श्रद्धावनत जन समुदाय जाने-अनजाने, सहज ही आपको समता दर्शन स्वीकार करके आपके बताए मार्ग पर चलने को उद्यत हो उठा।

संवत् 2020 का अपना आचार्य के रूप में प्रथम चौमासा पूर्ण करके समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने शेखे काल में मालव क्षेत्र का विहार प्रारंभ किया। मध्यप्रदेश के मालव अंचल के मन्दसौर, उज्जैन, इन्दौर, देवास, शाजापुर व रतलाम आदि क्षेत्रो के वन-बीहड़ो मे, दुर्गम पहाडी और सपाट मैदानी क्षेत्रों में अपनी अमृत वर्षिणी वाणी से जिन धर्म के उदात्त और शाश्वत मानवीय मूल्यों को प्रचारित-प्रसारित करते हुए, कठिन परिषहो को सहन करते हुए आचार्यश्री जी विहार कर रहे थे।

व्यक्ति और राष्ट्र का विवेचन, समाज और व्यक्ति के जटिल संबधों का विश्लेषण करते हुए तथा आदर्श जिनोपासक बनने हेतु जीवन साधने का मार्मिक उपदेश और जीवन्त प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्य श्री नानेश युगधर्म के अनुपालन की चेतना जगाते हुए, सतत विहार कर रहे थे।

धर्मपाल का विचार

इस प्रकार विहार करते हुए दिनाक 16 मार्च 1964 को आचार्य श्री नागदा पधारे। आप यहा 5 दिन विराजे। छोटे से किन्तु व्यवस्थित कस्बे नागदा का सम्पूर्ण परिवेश धर्म-मय हो उठा। सभी जाति और वर्ग के लोग आचार्य श्री जी का पावन प्रवचन सुनने के लिए आते रहते थे। नागदा मे बलाई जाति के लोग भी काफी अच्छी संख्या में रहते थे। इनमे से अधिकांश निजी व्यवसाय तथा शासकीय कार्यों को सम्मानपूर्वक सम्पन्न कर रहे थे। आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रो मे रहने वाले बलाई-सामान्यत. कृषि कार्य करते थे। इतना सब कुछ होने पर भी बलाई जाति अछूत मानी जाती थी। इसलिये बलाईयो के साथ छुआ-छूत की जाती थी। नागदा के ही निवासी और संघ-प्रमुख श्री मयाचद जी कांठेड ने स्थानीय व्यवसायी श्री सीताराम जी राठौड बलाई तथा उनके मित्रो से आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. का प्रवचन सुनने हेतु आने का आग्रह-अनुरोध किया। श्री सीताराम जी एक दिन अपने कुछ साथियो के साथ प्रवचन स्थल पर पहुचे और जब उन सबको महाजनो ने अपने साथ एक ही जाजम पर बिठाया तो उनका मन हर्ष और सम्मान से भर गया। दत्तचित्त होकर उन्होने प्रवचन सुना।



उसी दिन दोपहर के समय श्री सीताराम जी राठौड अपने साथियो हेत पुन. उपाश्रय पहुचे और आचार्य श्री नानेश के चरणो मे अपनी टोपी ार कर धरदी। श्री सीताराम जी राठौड ने कहा कि हमारी बलाई जाति ाम कृषि कर्म करती है, मान-मर्यादा से जीवन-यापन करती है किन्तु हमारे थे पर अछूत का यह ऐसा काला-तिलक अकित है कि हमे हमारा जीवन ही र्थ लगता है। आप हमे इस अछूत के कलक से बचावे।

इस आर्त्त हृदय की पुकार ने करूणा-मूर्ति आचार्य-प्रवर के नवनीत सम ोमल मानस को उद्वेलित कर दिया। वे आश्वासन के स्वर मे बोल पडे कि जो वय उठने को तत्पर है, उसे प्रकृति हजार हाथो से उठाने को लालायित रहती । आप अपने आचरण को सुधार लीजिये। सप्त कुव्यसनो को सामूहिक रूप से शपथ और घोषणापूर्वक छोड दीजिये। आपकी जाति के इस त्याग के प्रति जब समाज को विश्वास हो जाएगा तो वह स्वय आपको उच्च आसन पर आरूढ कर देगा।

आचार्य श्री ने कहा कि जैन धर्म वर्ण-व्यवस्था को नहीं मानता, जाति-पाति को नही मानता। जैन धर्म की स्पष्ट घोषणा है कि–

कम्मुणा बम्भणो होई, कम्मुणा होई खत्तिओ
वइसो कम्मुणा होई, सुद्दो हवई कम्मुणा

(उत्तराध्ययन सूत्र 25/33)

व्यक्ति कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनता है। व्यक्ति के कर्म तथा आचरण से उसकी जाति का निर्धारण होता है, जन्म से नही। आप व आपका समाज सत्सकल्प पूर्वक कुव्यसन मुक्त हो जाएं तो शेष समाज उसे निश्चय ही सम्मान देगा। आप जिन धर्म की शरण मे आकर सम्यकत्व ग्रहण कर लीजिये। स्वत आपका कलुष धुल जाएगा और निष्कलुष जीवन का सर्वत्र सम्मान होता है, यह ध्रुव सत्य है।

प्रेरक वाणी के इन तप पूत और मत्र सिद्ध शंब्दो ने जिज्ञासु, उन्नतिकामी और शुद्ध हृदय के बलाइयो के मनो मे घर कर लिया और वहा उपस्थित सभी बलाइयो ने श्री सीताराम जी राठौड के नेतृत्व मे सप्तकुव्यसनो (1) जुआ (2) मास (3) शराब (4) चोरी (5) परस्त्री गमन (6) वेश्यागमन और (7) शिकार के परित्याग की शपथ ली तथा आचार्य श्री से करबद्ध निवेदन किया कि हमे सम्यकत्व का मत्र प्रदान करे।



स्वय आचार्य श्री नानेश ने अपनी मंगल वाणी से उन्हे समकित ग्र
कराई और मंगल पाठ सुनाया। सीताराम जी के नेतृत्व मे वे धर्म दीवाने ग्रा.
स्थित अपने बन्धु-बान्धवो के बीच गए और मात्र डेढ घंटे में समझा-बुझाकर
अन्य लोगों को ले आए। इन नवागतो ने भी आचार्य श्री जी से समकित ग्र
की और इस प्रकार जीवन परिवर्तन का एक चक्र प्रवर्तित हो उठा।

दि. 21.3.64 को आचार्य श्री जी के प्रवचन मे श्री सीताराम जी
समीपस्थ गुराडिया ग्राम के श्री धूलजी भाई आदि बलाइयों को ले आए। आचार्य
श्री की प्रेरक वाणी सुनी। सभी का मन श्रद्धा और विनय से भर गया। प्रवचन
के बाद श्री सीताराम जी, धूलजी व साथ आए अन्य लोगो ने निवेदन किया कि
हमारे ग्राम गुराडिया में गोवाजी की सुपुत्री और थावर जी की बहिन लीला बाई
का विवाह चैत्र शुक्ला नवमी दि. 23-3-64 को है। ये पिता-पुत्र बलाई समाज
के अग्रगण्य मुखिया हैं। इसलिए इस विवाह मे 70 गांवो के बलाई-प्रमुख आदि
आवेगे। गुराडिया मे बलाई जाति के 40-50 घर हैं, वे भी सभी विवाह मे भाग
लेगे। इसलिए आप दो दिन के लिए गुराडिया पधारे तो हमारी पूरी जाति का
उद्धार हो जाएगा। समाज मे सामूहिक रूप से सदाचार-सद्विचार की क्रांति हो
जायेगी।

आचार्य श्री ने तो साधु बनने के समय ही, अणगार पथ के पथिक बनते समय ही, स्वेच्छा से परिषहो को गले लगाया था। अत. उन्होने तत्काल प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति दे दी और दूसरे दिन ही मध्यान्ह मे शिष्य मंडली सहित विहार कर दिया। नागदा से 4 मील चल कर ग्राम बनबना के हनुमान मन्दिर मे रात्रि विश्राम किया। यहां 2 जैन घर, कुछ ब्राह्मण व कुछ कुलंबी परिवार रहते है। गुराडिया मे आहार-पानी की स्थिति नही थी। अत. बनबना को ही आधार शिविर बनाया। बनबना से गुराडिया 3 मील की दूरी पर है।

स 2021 की चैत्र शुक्ला नवमी दिनांक 22 मार्च 64 को प्रात.काल आचार्यश्री गुराडिया पधारे। उन्होने अपनी सुबोध शैली मे उपस्थित बलाइयो व अन्य जनो को सबोधित किया। सभा मे विचार-विमर्श की उष्मा व्याप्त हुई और 82 वीर उठ खडे हुए। आचार्य श्री ने उन्हे समकित प्रदान करके विशाल जैन समाज की गोद मे ग्रहण कर लिया। आचार्य श्री वापस बनबना लौट आए।

स्वर्णिम-विहान

चैत्र शुक्ला दसमी सवत् 2021 तदनुसार दि 23 मार्च 1964 को पूर्व



तेज पर जो प्रखर तेजपुंज भास्कर उदित हुआ उसने तंम की चादर को ीर्ण कर सर्वत्र शुभ्र वितान तान दिया। आज ही धर्मपाल स्थापना का पावन वस बना और इस दिवस के उदय ने जिस स्वर्ण विहान को जन्म दिया, सने आचार्य श्री की यश पताका को सदा-सदा के लिए हृदयाकाश से गदाकाश तक फहरा दिया। बनबना मे रात्रि विश्राम करके इसी दिन 23-3-64 ो प्रात आचार्य श्री नानेश ने प्रात. गुराडिया की ओर विहार किया। गुराडिया ाम के चौक मे पहुंचकर आचार्य श्री अपने शिष्यो व सुश्रावको सहित तत्रस्थ क कच्चे छप्पर के बराडे मे विराजे। धर्म जिज्ञासु एकत्र होने लगे और देखते-देखते गुराडिया ग्राम का वह विस्तीर्ण ताल स्त्री-पुरुषो से भर गया।

आचार्य श्री नानेश ने अपना प्रवचन प्रारभ किया। वही धीरोदात्त स्वर! वही अभयदान! वही शास्त्र मीमासा! वही सुबोध वाणी। दलितो के प्रति अपार सवेदना, अथाह सहयोग और निर्मल पथ-प्रदर्शन के उदात्त भारो से भरी, हृदय के मर्म स्थल को स्पर्श करती हुई आचार्य-प्रवर की देशना पीडित मनो पर सुखद संलेपन बन कर बरसी। उन्होने सप्त कुव्यसनो से होने वाली हानियो के प्रति सचेत करते हुए जैनत्व के सस्कारो का विस्तार से विवेचन करते हुए जीवन मे कर्म और पुरुषार्थ का महत्व समझाया।

प्रवचन समाप्त होते ही पारस्परिक विचार-विमर्श की एक तरग से जनसागर तरगायित हो उठा और 70 गावो की पचायतो से आए हुए 533 परिवारो के सदस्यो, प्रमुखो व 200 अन्य जनो ने खडे होकर आचार्य श्री से समकित ग्रहण की। जैन धर्म और भगवान महावीर स्वामी, आचार्य श्री नानेश के जयघोष से गगन गूज उठा।

हर्ष गद्-गद् श्री सीताराम जी ने पुन खडे होकर अपने मन की कसक, अन्तर की वेदना आचार्य श्री जी के समक्ष प्रस्तुत की और कहा कि हे उद्धारक! आपने हमे समकित का मन्त्र देकर जैन तो बना दिया किन्तु इससे हमारा बलाई का कलकित जातीय तिलक नही मिटा। कोई ऐसा उपाय करिये, जिससे हमारे माथे से अछूत का यह तिलक मिट जाय।

धर्मपाल का स्वर्ण तिलक

आचार्य श्री जी ने सरल भाव से कहा कि मैंने आज का प्रवचन भगवान धर्मनाथ की प्रार्थना से प्रारम्भ किया था और आप सब लोगो ने भी धर्म की उपासना की पालना का सकल्प लिया है। अत आज से आप स्वय को बलाई



न कह कर "धर्मपाल" कहिए धर्मपाल एक गुण निष्पन्न शब्द है। यह धर्म के व्रत की पालना के संकल्प का परिचायक है। आप स्वयं को 'धर्मपाल-जैन' तथा तदनुसार ही उच्च-उज्जवल आचरण करे।

समस्त उपस्थित बलाई-बन्धु हर्ष से सराबोर हो उठे। गुराडिया के जी भाई व अन्य प्रमुखों ने हाथों मे लबा-लब भरी कुंकुम की थालियां लेकर अपने समाज बान्धवो के गौरवोन्नत भालों पर धर्मपाल का 'स्वर्ण तिलक' अंकित कर दिया। हर्ष नाद-जयनाद गूंज उठा।

सामूहिक संकल्पों का दौर

आचार्य श्री जी के व्यक्तित्व का चमत्कारिक प्रभाव नागदा और गुराडिया से निकलकर पूरे मालव प्रान्तर मे चर्चित हो उठा। धर्मपालो की धर्म-ज्योति जग-मगा उठी। आचार्य श्री बनबना होकर फिर नागदा पधारे। वे बडखेडा, बडा-वदा, लोद, लिम्बोदिया, गुजर बाडिया आदि मे धर्म जिज्ञासुओं को संबोधित करते हुए विनंती स्वीकार कर आक्या पहुचे जहां वैष्णव मंदिर मे रात्रि विश्राम किया। दूसरे दिन आक्या मे 81 गांवों के 763 परिवारो के प्रमुखों सहित सैकडो लोगो ने "धर्मपाल जैन" की उपाधि धारण कर सम्यकत्व स्वीकारा। बलाई जाति मे व्यसनमुक्ति और समाजिक सुधारो का ज्वार उमड पडा जिससे 300 वर्गमील क्षेत्र मे फैले बलाई-जन प्रभावित हुए।

विहार और धर्म जागरण

आक्या से आचार्य-प्रवर शिष्य परिकर सहित उज्जैन की ओर बढे। मार्ग मे आलोट, महीदपुर, डेलची, बरखेडा, रानी, पीपलिया, रठडा व धमाहेडा आदि मे अपने प्रवचनो से नव जागरण का शखनाद करते हुए बरखेडा पधारे। बरखेडा मे 50 गांवों के 600 लोगों को गुरु मत्र प्रदान किया। इस प्रकार आचार्य श्री ने एक माह मे 5000 बलाईयो को समकित प्रदान करके, उनका जीवन रूपान्तरण किया। धर्मपालो के संस्वारो के महनीय कार्य को लक्ष मे रखते हुए आचार्य श्री ने स. 2022 का चातुर्मास इन्दौर स्वीकृत किया।

आचार्य श्री ने महावीर जयंती उज्जैन मे मनायी और बलाई-प्रमुखो के आग्रह पर आप नागझिरी पधारे, जहां 70 गावो के मुखियाओ ने आचार्य श्री से समकित ग्रहण की। ये मुखिया 750 परिवारो के 4500 लोगो का प्रतिनिधित्व करते थे। आचार्य श्री परिषहपूर्ण विहार के पथ पर चल पडे। प्रारभ मे आपके साथ मुनिश्री कवर चद जी म सा., श्री सेवत कुमार जी म. सा एव श्री अमर



: जी म सा थे किन्तु बाद मे आपने केवल मुनिश्री कवर चद जी म.सा. को थ लेकर लक्ष्मणखेडी, कजवाना और जामोदी विहार किया। पेड जीर्ण-शीर्ण बूतरो के सहारे यात्रा-रात्रि विश्राम करते हुए आप अक्षय तृतीया पर पुन ज्जैन पधारे।

रावर्तन

उज्जैन मे बहुत सारे ऐसे लोग एकत्र हुए जो पूर्व मे हिन्दू थे पर बाद मे साई, मुसलमान, अहमदिया आदि धर्म अगीकार करके गोरक्षक से गोभक्षक बन ए थे। इन सभी ने पुन गोरक्षक बनने की इच्छा प्रकट की। आचार्य श्री जी इन्हे पुन अहिसक सस्कृति की छाया तले आश्रय दिया और समकित प्रदान ।।

इस महनीय घटना पर उज्जैन आर्य समाज के प्रमुख नेताओ ने आचार्य जी से भेंट करके उनका भाव अभिनन्दन किया। उल्लेखनीय यह है कि चार्य श्री नानालाल जी म सा ने 141 दिनो मे 87 गावो का विहार कर र्मोद्योत किया।

आचार्य चरण बढते ही चले गए। आप बलाइयो के चीकली ग्राम म्मेलन मे पधारे। जहा 70 गावो के 1100 बलाई-धर्मपाल बने। वहा से बडोद, गगर, डग, शाजापुर, देवास होते हुए आप मक्सी पधारे। मक्सी के बलाइयो ने नत्व स्वीकारा और यह आज भी धर्मपाल की तपो भूमि है।

थम धर्मपाल सम्मेलन 8-10-64

आचार्य श्री नानेश के इन्दौर चातुर्मास मे प्रथम धर्मपाल सम्मेलन आयोजित कया गया, जिसमे मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री पाटस्कर स्वय धारे। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री दीपचद जी काकरिया कलकत्ता ने की । ज्यपाल श्री पाटस्कर ने आचार्य-प्रवर से भेट-चर्चा करके दलितोद्धार के इस गर्य पर हर्ष प्रकट किया। गीता-भवन के बाबा बालमुकुन्द जी (अब स्वर्गीय) भी धर्मपाल के कार्य को अपना सहयोग तथा आशीष दी। इस प्रकार रतलाम इन्दौर चौमासे के अन्तराल मे गुरुदेव धर्मपालो के बीच रहे।

इस प्रकार धर्मपाल कार्य का अपनी मर्यादा मे रहते हुए आचार्य श्री नानेश ने बीजारोपण किया। श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ ने अपने शासन-नायक के इस पावन कार्य मे सर्वविध सहयोगी भूमिका निभाने का तत्काल ही निश्चय किया और निरन्तर इस सकल्प की पालना मे आज भी सेवार्पित है।



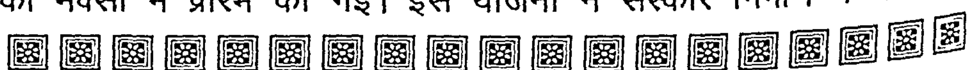
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ और धर्मपाल प्रवृत्ति

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ अपने आराध्य शासन नायक आचार्य नानेश के इस क्रांतिकारी कार्य को हर्ष और विस्मय से देख रहा था। प्रबुद्ध प्रमुखो ने शीघ्र ही इस कार्य को अपना पावन दायित्व मान कर अपना तथा इन नवदीक्षित जैन बन्धुओ के धर्मपाल नामकरण को सार्थक करने के उनकी शिक्षा-संस्कार व सहयोग को कार्य योजना का निर्धारण करना कर दिया।

इन्दौर के सघ अधिवेशन के समय ही वयोवृद्ध समाज प्रमुख श्री लाल जी सेठिया और युवा समाजसेवी श्री सरदारमल जी कांकरिया के प्र पर श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति की स्थापना की गई और उसके सयोजक विद्वान, उद्योगपति, शासननिष्ठ श्री गोकुलचंद जी सूर्या (अब स्व को बनाया गया। श्री गोकुलचंद जी सूर्या ने सन् 1965 मे जावरा निवासी गेदालाल जी नाहर को प्रवृत्ति के क्रियाशील संयोजक मनोनीत किया जि 30 दिनो मे 125 गांवो का प्रवास करके प्रवृत्ति कार्य को गजब की नवीन प्रदान की। वृद्धावस्था मे भी उनकी यह कर्मण्यता देख-जवान भी दग रह गए। आज भी धर्मपाल इस वृद्ध (अब स्वर्गवासी) समाज सेवी को स्मरण करते हैं। श्री नाहर ने वृहत धर्मपाल सम्मेलन करके समाज के समक्ष धर्मपालो की सगठित शक्ति का सफल प्रदर्शन किया।

संघ के मन्दसौर अधिवेशन मे संघ ने युवा और ऊर्जावान श्री समीरमल जी काठेड (अब स्वर्गीय) को प्रवृत्ति सयोजक बनाया। समाजसेवी श्री मानव मुनिजी इन्दौर प्रारम से ही प्रवृत्ति से जुडे थे। इसी प्रकार गाधीवादी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया 'मामाजी' और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती धूरी बाई पिरोदिया 'मामीजी' भी प्रवृत्ति हेतु शीघ्र ही समर्पित सेवा देने लगे।

पाठशालाएं— सघ ने धर्मपालो की भावी पीढी को शिक्षित करने के महत्त्व को समझा और धार्मिक-नैतिक तथा साथ ही लौकिक शिक्षा प्रदान करने के लिए रात्रि कालीन पाठशालाए प्रारंभ करने का निर्णय किया। प्राथमिकता से शिक्षित धर्मपाल अन्यथा उसी ग्राम के शिक्षित व्यक्ति को अंशकालीन कार्य-आशिक भुगतान के आधार पर शिक्षक नियुक्त करने का निश्चय किया गया और प्रथम पाठशाला 8 अगस्त 1964 को नागदा मे तथा द्वितीय पाठशाला 18 अगस्त 64 को मक्सी मे प्रारम्भ की गई। इस योजना ने सस्कार निर्माण मे आशातीत



सफलता अर्जित की और पाठशालाओ की ऐसी जबरदस्त मांग उठी कि क्षेत्र मे संघ को पाठशालाओ का जाल बिछाना पडा। अपने उत्कर्ष काल मे इन पाठशालाओ की सख्या सैकडो मे पहुंच गई थी। पाठशालाओ के निरीक्षण आदि हेतु 1965 मे वैतनिक प्रचारक नियुक्त किए गए। जावरा और बाद मे माउन्ट आबू मे इन पाठशालाओ के शिक्षको/संचालको के प्रशिक्षण हेतु सघ ने शिविरो के आयोजन किए।

पाठशालाओं की बढती सख्या, उनके निरीक्षण की आवश्यकता और नैतिक-धार्मिक सस्कारो के प्रभाव को और दृढता प्रदान करने के लिए धर्मपाल क्षेत्र मे तीव्र गति से प्रयास करने की आवश्यकता सघ अनुभव कर रहा था। अत श्री गणपतराज जी बोहरा और श्री सरदारमल जी काकरिया के सहयोग पूर्वक एक जीप धर्मपाल-कार्य हेतु उपलब्ध कराई गई। गति की दिशा मे यह एक महत्वपूर्ण कदम था।

शिविर-प्रवास-कार्य योजना

धर्मपालो के शिविर-सम्मेलन तथा सघ प्रमुखो के प्रवासो से प्रवृत्ति की तेजी से प्रगति हो रही थी। इसी समय जावरा धर्मपाल सम्मेलन ने देश भर मे धर्मपाल कार्य की एक जबरदस्त छाप छोडी। इस सम्मेलन को देशनोक के श्रद्धावन सुश्रावक, उदारमना श्री चम्पालाल जी साड (अब स्वर्गीय) ने भी प्रेरणा दी। इस सम्मेलन मे 110 गावो के 900 से अधिक धर्मपाल भाई-बहनो ने भाग लिया।

जयपुर सघ अधिवेशन के बाद तत्कालीन सघ सहमन्त्री श्री भवरलाल जी कोठारी ने समयबद्ध प्रवास कार्यक्रमो की महत्त्वपूर्ण योजना तैयार की जिसे सघ प्रमुखो ने उत्साह से लागू किया। इसमे श्री समीरमल जी काठेड क्षेत्रीय सयोजक और सघ प्रमुख श्री सरदारमल जी काकरिया की संयोजनीय महत्व पूर्ण भूमिका रही।

श्री भंवरलाल जी कोठारी ने सघमंत्री बनने के बाद फिर से धर्मपाल प्रवृत्ति पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। श्री कोठारी ने सन् 1975 मे धर्मपाल प्रवृत्ति हेतु विकेन्द्रित व्यवस्था स्थापित की जिसमे प्रमुख सयोजक के अतिरिक्त पाच क्षेत्र और पाच ही क्षेत्रीय सयोजक निर्धारित किए गए। क्षेत्रीय संयोजको को अपने-अपने क्षेत्र मे प्रभावी अधिकार प्रदान किए गए। श्री कोठारी ने धर्मपाल नैतिक व धार्मिक पाठशालाओ व उनके माध्यम से सम्पर्क हो। जो



संस्कारित बनाने और प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए सर्वेक्षण, शिक्ष प्रशिक्षण, निरीक्षण और परीक्षण की 5 सूत्री योजना क्रियान्वित की। शा समर्पित सघ-प्रमुखों और व्रती धर्मपालो के सहयोग से यह योजना यशस्वी हुई। श्री पी.सी.चौपडा, रतलाम का इस कार्य में महनीय सहयोग रहा। सम्पूर्ण क्षे में सभी वर्गो के सहयोग का अनूठा उदाहरण श्री राजेन्द्र कुमार जी दलाल थे कि अजैन व परम वैष्णव थे का मक्षी क्षत्रीय धर्मपाल प्रवृत्ति का संयोजक बन था।

संघ योजनाबद्ध रीति से धर्मपाल कार्य को आगे बढा रहा था। इस कार्य का थोडा अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि बीकानेर मे धर्मपाल शिक्षकों के लिए आयोजित शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर सन् 74 मे राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष पद्मविभूषण डॉ. डी. एस. कोठारी, राजस्थान शासन के शिक्षा सचिव रहे श्री सत्यप्रसन्न सिंह भडारी और शिक्षानिदेशक श्री रणजीत सिंह जी कूमट जैसे वरेण्य शिक्षाविदो को आमत्रित किया गया। इनके अवलोकन-मार्गदर्शन-प्रेरक प्रवचन से धर्मपाल व सघ लाभाविन्त हुए। स्व आचार्य श्री नानेश ने इन्हे सबोधित किया। इन प्रशिक्षित युवको ने बाद मे "नानेश नवयुवक मंडल" का गठन करके क्षेत्र मे शिक्षा प्रसार की कमान संभाली।

चिकित्सा सेवा

इसी समय पद्मश्री डॉ नदलाल जी बोरदिया, इन्दौर के नेतृत्व मे पिछडे व दलित धर्मपाल क्षेत्रो मे चिकित्सा शिविरो के आयोजनो का दौर चला। पद्मश्री डॉ बोरदिया (अब स्वर्गीय) की सेवा और लगन से क्षेत्र को बडी उपलब्धि हुई। सघ की चिकित्सा सेवाओं मे सहयोगार्थ धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा ने अपने प्रिय अनुज स्व.श्री सम्पत राज जी बोहरा की स्मृति मे नोखा सघ अधिवेशन मे दि 25–9–76 को चल चिकित्सा वाहन अर्पित किया जिसे श्री डी. आर. मेहता सप्रत्ति अध्यक्ष सेवी ने लोकार्पित किया। डॉ बोरदिया सा और उनके सहयोग मे डॉ श्री प्रकाश जी जोशी रतलाम द्वारा इस वाहन के साथ और माध्यम से जो चिकित्सा सेवा दी. गई, वह स्वर्णक्षरो मे अकित करने योग्य है। कहना होगा कि इस वाहन के सचालन-दायित्व को श्री पी.सी.चौपडा रतलाम ने गजब की ऊर्जा के साथ निभाया।



: पदयात्रा

धर्मपाल क्षेत्रो में सघ ने सन् 75 मे प्रथम धर्म जागरण, सस्कार निर्माण र व्यसन मुक्ति पदयात्रा का आयोजन किया। इस आयोजन ने धर्मपालो और न समाज को एक-दूसरे को देखने-समझने और अनुभव करने का अनूठा सर दिया। जैन समाज अपने नए साथियो धर्मपाल जैनो के आचार-विचारो निकट से देखकर तथा उनकी शुद्धता पर अभिभूत हो उठा। फिर तो पद त्राओ का दौर ही चल पडा। इस अक मे पदयात्राओं पर पृथक से एक खड

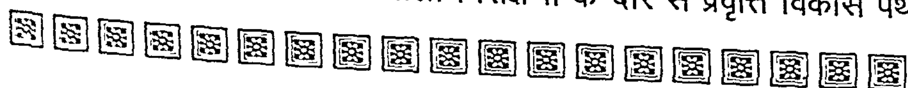
समता--भवन

सन् 1973 मे ही सघ ने सामाजिक-स्वाध्याय और धर्माराधना के लिए धर्मपाल क्षेत्रो मे समता-भवनो का निर्माण प्रारंभ किया। सन् 73 मे गुराडिया और मक्सी मे तथा सन् 74 मे रूलकी ग्राम मे समता भवनो का निर्माण और लोकार्पण किया गया।

छात्रावास

धर्मपालो की बाल पीढी को उच्च शिक्षा और जैन सस्कार प्रदान करने के लिए सघ ने श्री जैन जवाहर विद्यालय व छात्रावास कानोड मे धर्मपाल छात्रो को अन्तेवासी रहकर पढने का सुअवसर दिया। कालान्तर मे इस योजना की सफलता और इसके प्रति धर्मपालो के रूझान को देखते हुए 7–7–79 को श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीप नगर, रतलाम की श्री पी सी चौपडा के सयोजन मे स्थापना की गई जो कि आज भी क्षेत्र मे अपनी विशिष्ट पहिचान रखता है। श्री पी सी चौपडा, श्री मगनलाल जी मेहता, श्री वीरेन्द्र कुमार जी पीतलिया और श्री कोमल सिह जी कूमट ने इसके विकास मे महनीय योगदान दिया। छात्रावास के गृहपति रूप मे श्री नानालाल जी मड्डा का सघ ने अभिनदन किया। इस बीच आदर्श त्यागी श्री सम्पतमुनि जी म सा का धर्मपाल क्षेत्र मे व्यापक विहार हुआ। उनसे पूर्व महासती श्री पेपकवर जी और महासती श्री नानूकंवर जी म सा आदि ठाणा के विहार से धर्मपालो को प्रबल जैन संस्कार मिले। क्षेत्र सुधरता गया। धर्मपाल उन्नति करते गए।

नवम्बर 74 मे 200 धर्मपाल युवको को उज्जैन से जावरा रैली समाज सेवी श्री मानव मुनि और मामाजी-मामीजी आदि की सन्निधि मे निकली। इस प्रकार रैली-प्रवास-पदयात्रा तथा शाला निरीक्षणो के दौर से प्रवृत्ति विकास पथ



संस्कारित बनाने और प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए सर्वेक्षण, शिक्षा प्रशिक्षण, निरीक्षण और परीक्षण की 5 सूत्री योजना क्रियान्वित की। शास समर्पित संघ-प्रमुखों और व्रती धर्मपालो के सहयोग से यह योजना यशस्वी हु श्री पी.सी.चौपडा, रतलाम का इस कार्य मे महनीय सहयोग रहा। सम्पूर्ण क्षे मे सभी वर्गो के सहयोग का अनूठा उदाहरण श्री राजेन्द्र कुमार जी दलाल कि अजैन व परम वैष्णव थे का मक्षी क्षत्रीय धर्मपाल प्रवृत्ति का संयोजक बन था।

संघ योजनाबद्ध रीति से धर्मपाल कार्य को आगे बढा रहा था। इस क का थोडा अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि बीकानेर मे धर्मप शिक्षको के लिए आयोजित शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर सन् 74 मे राष्ट्रीय शि आयोग के अध्यक्ष पद्मविभूषण डॉ. डी. एस. कोठारी, राजस्थान शासन शिक्षा सचिव रहे श्री सत्यप्रसन्न सिंह भंडारी और शिक्षानिदेशक श्री रणज सिह जी कूमट जैसे वरेण्य शिक्षाविदो को आमंत्रित किया गया। इ अवलोकन-मार्गदर्शन-प्रेरक प्रवचन से धर्मपाल व संघ लाभाविन्त हुए। स आचार्य श्री नानेश ने इन्हे सबोधित किया। इन प्रशिक्षित युवको ने बाद "नानेश नवयुवक मंडल" का गठन करके क्षेत्र में शिक्षा प्रसार की क संभाली।

चिकित्सा सेवा

इसी समय पद्मश्री डॉ नंदलाल जी बोरदिया, इन्दौर के नेतृत्व पिछडे व दलित धर्मपाल क्षेत्रो में चिकित्सा शिविरो के आयोजनो का दौर चल पद्मश्री डॉ. बोरदिया (अब स्वर्गीय) की सेवा और लगन से क्षेत्र को ब उपलब्धि हुई। संघ की चिकित्सा सेवाओ मे सहयोगार्थ धर्मपाल पितामह गणपतराज जी बोहरा ने अपने प्रिय अनुज स्व.श्री सम्पत राज जी बोहरा स्मृति में नोखा सघ अधिवेशन मे दि 25–9–76 को चल चिकित्सा वाहन अ किया जिसे श्री डी. आर मेहता संप्रति अध्यक्ष सेवी ने लोकार्पित किया। बोरदिया सा और उनके सहयोग मे डॉ श्री प्रकाश जी जोशी रतलाम द्वारा वाहन के साथ और माध्यम से जो चिकित्सा सेवा दी. गई, वह स्वर्णाक्षरो अकित करने योग्य है। कहना होगा कि इस वाहन के सचालन-दायित्व को पी सी चौपडा रतलाम ने गजब की ऊर्जा के साथ निभाया।



पदयात्रा

धर्मपाल क्षेत्रो मे सघ ने सन् 75 मे प्रथम धर्म जागरण, संस्कार निर्माण और व्यसन मुक्ति पदयात्रा का आयोजन किया। इस आयोजन ने धर्मपालो और जैन समाज को एक-दूसरे को देखने-समझने और अनुभव करने का अनूठा अवसर दिया। जैन समाज अपने नए साथियो धर्मपाल जैनो के आचार-विचारो को निकट से देखकर तथा उनकी शुद्धता पर अभिभूत हो उठा। फिर तो पद यात्राओ का दौर ही चल पडा। इस अंक मे पदयात्राओ पर पृथक से एक खड है।

समता–भवन

सन् 1973 मे ही सघ ने सामाजिक-स्वाध्याय और धर्माराधना के लिए धर्मपाल क्षेत्रो मे समता-भवनो का निर्माण प्रारभ किया। सन् 73 मे गुराडिया और मक्सी मे तथा सन् 74 मे रूलकी ग्राम मे समता भवनो का निर्माण और लोकार्पण किया गया।

छात्रावास

धर्मपालो की बाल पीढी को उच्च शिक्षा और जैन सस्कार प्रदान करने के लिए सघ ने श्री जैन जवाहर विद्यालय व छात्रावास कानोड मे धर्मपाल छात्रो को अन्तेवासी रहकर पढने का सुअवसर दिया। कालान्तर मे इस योजना की सफलता और इसके प्रति धर्मपालो के रूझान को देखते हुए 7–7–79 को श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीप नगर, रतलाम की श्री पी सी चौपडा के सयोजन मे स्थापना की गई जो कि आज भी क्षेत्र मे अपनी विशिष्ट पहिचान रखता है। श्री पी सी चौपडा, श्री मगनलाल जी मेहता, श्री वीरेन्द्र कुमार जी पीतलिया और श्री कोमल सिह जी कूमट ने इसके विकास मे महनीय योगदान दिया। छात्रावास के गृहपति रूप मे श्री नानालाल जी मट्ठा का सघ ने अभिनदन किया। इस बीच आदर्श त्यागी श्री सम्पतमुनि जी म सा का धर्मपाल क्षेत्र मे व्यापक विहार हुआ। उनसे पूर्व महासती श्री पेपकवर जी और महासती श्री नानूकवर जी म सा. आदि ठाणा के विहार से धर्मपालो को प्रबल जैन सस्कार मिले। क्षेत्र सुधरता गया। धर्मपाल उन्नति करते गए।

नवम्बर 74 मे 200 धर्मपाल युवको को उज्जैन से जावरा रैली समाज सेवी श्री मानव मुनि और मामाजी-मामीजी आदि की सन्निधि मे निकली। इस प्रकार रैली-प्रवास-पदयात्रा तथा शाला निरीक्षणो के दौर से प्रवृत्ति विकास पथ



पर अग्रसर होती रही।

चौसला में श्री शंकर जी धर्मपाल द्वारा समता भवन हेतु सन् 79 में अपना निजी प्लाट भेंट करके प्रवृत्ति को एक नवीन आयाम प्रदान किया गया।

स्वास्थ्य शिविर

30.5.82 को स्वर्गीय पद्मश्री डॉ. नंदलाल जी बोरदिया स्मृति स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का विशाल आयोजन मध्यप्रदेश मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से किया। इस शिविर योजंना को जारी रखने मे श्री जेसराजजी भंवरलाल जी बैद गंगाशहर से विशेष प्रोत्साहन-सहयोग प्राप्त हुआ।

'धर्मपाल' उपन्यास

वर्ष 82–83 मे श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार प्रवृत्ति से निकट से जुडे और श्रमणोपासक के सम्पादन सहयोगी जानकी नारायण श्रीमाली बीकानेर ने धर्मपाल-प्रवृत्ति के आधार पर 'धर्मपाल' नामक उपन्यास लिख डाला। श्री गणपतराज जी बोहरा ने लाहोरी के क्षेत्रीय सम्मेलन मे यह उपन्यास धर्मपालो को भेट स्वरूप प्रदान किया।

पर्युषण – सेवा

सन् 83 मे धर्मपाल क्षेत्र में ही संस्कार क्राति को सबल बनाते हुए श्री समता प्रचार संघ ने पर्युषण सेवा हेतु अपने स्वाध्यायी भेजे। इस प्रयास का क्रांतिकारी प्रभाव हुआ।

पुन. आचार्य श्री धर्मपालों के बीच

दि. 18.2.84 को पुन धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानेश रतलाम पधारे और स्वाभाविक ही प्रवृत्ति मे एक नई जान सी आ गई। पुन इन्दौर सघ अधिवेशन हुआ जिसमें प्रतिवर्ष की भांति धर्मपाल सम्मेलन आयोजित किया गया। उल्लेखनीय है कि 26 9.87 के इस ऐतिहासिक सम्मेलन के समय आचार्य श्री नानेश स्वय भी चातुर्मासार्थ इन्दौर विराज रहे थे। अपने शासन नायक को अपने क्षेत्र मे पाकर धर्मपालो मे जो हर्ष व उत्साह व्याप्त होता है, वह अवर्णनीय है, केवल अनुभव योग्य है। जेठ सुदी 2 नानेश जन्म जयंती पर धर्मपाल अक्ता रखते है-धन्य है ये धर्मवीर धर्मपाल।

जल–कूप

इससे पूर्व सन् 78 मे ताजपुर मे स्व. श्री गोकुलचद जी सूर्या की स्मृति



सूर्या जलकूप शुभारभ का कल्याणकारी कार्य हुआ।

धर्मपाल समाज रचना

सन् 1979 की 26 फरवरी को आदर्श त्यागी शासन प्रभावक श्री धर्मेश नि जी ने प्रवृत्ति को अभिनव आयाम प्रदान करते हुए धर्मपाल समाज रचना ा सूत्रपात किया। जिसके मुख्य सिद्धान्त थे–

1. धर्मपाल समाज शुद्धिकरण को अपनाये और भविष्य मे उन्ही के साथ सम्बन्ध बढावे जो दुव्यर्सनो से दूर हो।
2 विवाहो, सगाई आदि मे भी दुर्व्यसनी लोगो से सबध न रखा जावे।
3 प्रतिमाह धर्मपाल दिवस पर अगता रखा जावे।
4 गाव-गाव मे धर्मपाल पचायत कायम की जावे।
5 समाज के सुन्दर भविष्य को ध्यान रखकर सब कार्य जैन विधि से किये जावे।

इस प्रकार ग्राम रठडा मे प्रकृति मे एक नये अध्याय का शुभारभ हुआ।

धर्मपाल पचायत (प्रथम)

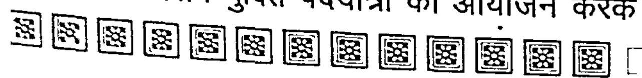
रठडा मे ही मुनि श्री की सन्निधि मे तत्काल प्रथम धर्मपाल पचायत का ठन किया गया जिसमे सर्वसम्मति से श्री शकरलाल जी जैन, उमरना अध्यक्ष, ीताराम जी नागदा मत्री व धूलजी जैन गुराडिया, कोषाध्यक्ष निर्वाचित किये ये।

धर्मपाल का कार्य प्रगति करता रहा। 31 3 88 को ग्राम हरसोदन मे मता–भवन हेतु भूमि पूजन हुआ और 15 12 88 को शिवपुर मे समता भवन ा उद्घाटन हुआ। 17 5 88 से 20 5.88 तक पुन आचार्य श्री नानेश नागदा वराजे। वर्तमान युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा भी आचार्य प्रवर के साथ थे। र्मपाल निहाल हो गए। 22 7 90 को मक्सी मे विशाल धर्मपाल सम्मेलन हुआ।

धर्मपाल रजत जयती वर्ष

20 3 1991 से धर्मपाल रजत जयती वर्ष हेतु एक वर्ष के समारोह प्रारंभ ुए जिनमे प्रवास, व्यसन मुक्ति, शिक्षा-सस्कार आदि के विशेष कार्यक्रम ायोजित किए गए। इन सभी कार्यक्रमो हेतु श्री रिखबचद जी जैन (बैद) देल्ली ने सर्वभावेन सहयोग किया।

मार्च 97 मे दस वर्ष पश्चात् पुन धर्मपाल क्षेत्रो मे धर्म-जागरण, नेर्माण और व्यसन मुक्ति पदयात्रा का आयोजन करके सघ ने धर्मपाल



के विकास हेतु अपने संकल्प को दुहराया है। इतना ही नहीं विद्वद्वर्य, प्रखर व्याख्याता, आगम-शास्त्र ज्ञाता युवाचार्य श्री राममुनि जी म सा भी अपना सवत् 2054 (वर्ष 1997) का वर्षावास धर्मपाल क्षेत्र के केन्द्र रतलाम में कर रहे है।

उज्ज्वल भविष्य

धर्मपाल प्रवृत्ति समाज रचना के दौर में प्रविष्ट हो·चुकी है और स्वय धर्मपाल अपने स्तर पर समता समाज की रचना हेतु कटिबद्ध हो चुके है। सघ द्वारा धर्मपाल क्षेत्रो मे जो समितियां गठित की जा रही है उनमे संघ तथा शेष समाज और धर्मपालो की 50–50 प्रतिशत उपस्थिति है। इस प्रकार समाज रचना का यह कार्य मूर्तरूप ग्रहण कर रहा है।

आचार्य श्री नानेश के मंगल आशीष से युवाचार्य श्री रामलाल जी म सा के युवा-ओजस्वी आगम-सम्मत मार्गदर्शन से, आज्ञानुवर्ती सत-सती वृन्द एव चतुर्विध सघ के सहयोग से गाव-गांव मे उपस्थित अहैतुकी सहयोग भावना के धनी सभी वर्गो के समाजसेवियो से, मालव क्षेत्र में, धर्मपाल ग्रामो मे समाज की पुर्नरचना का जो महाअभियान चल रहा है, वह भारत मे समता और सामाजिक समरसता युक्त स्वावलबी ग्राम के आदर्श को साकार करेगा। यह केवल प्रबल सभावना ही नही अपितु सबल विश्वास भी है।

यदि केवल अपनी ही देह को मन्दिर माना, दूसरे की देह को मन्दिर नहीं माना तो तुम पक्षपात में पड़े होने के कारण ईश्वर को नहीं जान सकते। ईश्वर ज्ञान रूप, सर्वव्यापी और सबकी शान्ति चाहनेवाला है। यदि आप भी सबकी शान्ति चाहते हैं, सबकी देह को देवालय मानते हैं तो आपी देह भी देवालय है, अन्यथा नहीं।

—श्रीमद् जवाहराचार्य



र्मपाल बन्धुओं के आध्यात्मिक विकास हेतु समता विभूति आचार्य नानेश द्वारा प्रदत्त नव सूत्र

1– धर्मपाल दिवस को समता दिवस के रूप मे मनाना चाहिये जिसके म्न सूत्र पाले जाय–

(अ) इस दिन (चैत्र सुदी 10) अगता रखे।

(ब) किसी से लडाई झगडा न करे कटु शब्द का प्रयोग न हो तथा किसी से मन मुटाव हो जाय तो क्षमा याचना कर ले।

(स) यथा शक्ति उपवास रखा जाय या एकाशन किया जाय।

(द) नशीले पदार्थ का सेवन तथा धूम्रपान नही करे।

(य) दिन भर धार्मिक क्रियाओ मे प्रवृत्ति रखी जाय।

2– प्रतिवर्ष चैत्र सुदी 10 से आगामी चैत्र सुदी 10 तक प्रत्येक सदस्य नये 5–5 धर्मपाल सदस्य बनावे।

3–प्रत्येक माह की शुक्ला 10 को सारे ग्रामवासी सामूहिक रूप से धार्मिक क्रियाओ की आराधना करे।

4– प्रत्येक धर्मपाल परस्पर भ्रातृभाव रखे और फिर भी किन्ही के बीच कोई विवाद हो जाय तो उसे शाति से सुलझा ले।

5– जब भी किसी से मिलने का प्रसग आवे तब हाथ जोड कर उनको जय जिनेन्द्र कहे।

6– प्रात काल उठते ही ग्यारह नवकार मत्र का जाप करना तथा देव गुरु धर्म का स्मरण करते हुए घुटने टेक कर वन्दन करना।

7– अपने यहा जब कभी सन्त सतियो का पधारना हो तब दर्शन व्याख्यान का लाभ लेना।

8– अपने बालको मे नैतिक एव धार्मिक सस्कारो की वृत्ति हेतु उन्हे धार्मिक शालाओ मे अध्ययन हेतु प्रेरणा देना।

9– नित्य प्रति नमस्कार महामत्र की माला जपकर निम्न सूत्रो का अन्त.करण मे चिन्तन करना।



(अ) हे आत्मन्! तुम्हारे देव अरिहंत है, गुरु निर्ग्रन्थ हैं और वीतराग भगवान द्वारा बतलाया तुम्हारा धर्म है जिन पर दृढ श्रद्धा बनी रहे

(आ) हे चैतन्य! देव जगत् मे जितनी भी आत्माएं है उन सब मे मेरे जैसा ही चैतन्य स्वरूप रहा हुआ है। अतः किसी को कष्ट न दें।

(इ) हे ज्ञान पुंज! आत्मन् तेरा स्वरूप अजर, अमर और शाश्वत है किन्तु कर्मो के संजोग से संसार मे जन्म मरण हो रहा है। यह अत्यंत दुर्लभ मनुष्य भव जो मिला है, इसमे उस मूल स्वरूप को प्राप्त करने का सत्पुरुषार्थ करता हूँ।

मात्रास्पर्शस्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदु.खद. ।
अगमापायिनोऽनित्या स्तांस्तितिक्षस्व भारत ।।
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुपं पुरुपर्प भ ।
सम दुःखसुखं धीरं सोऽमृत्वाय कल्पते ।।

–श्रीमद् भगवद्गीता २/१४-१५

हे कुन्तीपुत्र! सर्दी, गर्मी, सु.ख दुख को देने वाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो उत्पत्तिविनाशशील और अनित्य है इसलिये हे भारत! उनको तू सहन कर क्योंकि सुख-दुख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय-विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है।



खण्ड 4

धर्मपाल क्षेत्रे

- गोविन्द नारायण श्रीमाली

सामयिक मूल्यांकन

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की पहल पर धर्मपाल क्षेत्रों में स्वयं धर्मपालो से तथा वहां कार्यरत समाज एवं प्रवृत्ति प्रमुखो से बेबाक बातचीत के द्वारा प्रवृत्ति के मूल्यांकन का प्रयास किया गया। इस कार्य हेतु श्री गोविन्द नारायण श्रीमाली ने धर्मपाल क्षेत्रों का प्रवास किया और 18 प्रश्नो की संलग्न प्रश्नावली के माध्यम से समाज के विचार मंथन की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। धर्मपाल प्रवृत्ति के पाचों क्षेत्रों में प्रवास पूर्वक संकलित यह मूल्यांकन धर्मपाल प्रवृत्ति की स्वर्णिम संभावनाओं के द्वार खोलता प्रतीत होता है। समाज प्रमुखो ने जिस प्रामाणिकता और निष्ठा से प्रश्नो के उत्तर दिये है, वही प्रवृत्ति की सफलता की आधार भूमि है। धर्मपालों में आचार्य श्री नानेश और उनके शासन के प्रति जैसी अविचल निष्ठा के दर्शन इस मूल्याकन मे हुए है, वह समाज और देश के लिए हर्ष तथा गोरव की बात है।

इस प्रवास में श्री गोविन्द नारायण श्रीमाली को प्रवृत्ति के राष्ट्रीय संयोजक श्री धीरजलाल मुणत, सहयोगी श्री विनोद मेहता सहित सभी क्षेत्रों के तत्कालीन प्रमुखो का भरपूर सहयोग मिला। कहना न होगा कि श्री पी.सी. चौपड़ा सदा की भाति सहयोग की धुरी रहे। संकलन को यथाशक्य यथावत प्रकाशन का प्रयास किया जा रहा है, जिससे यह मूल्याकन समाज तथा प्रवृत्ति के लिए दर्पण का कार्य कर सके, आत्मावलोकन करा सके।

अमृतवाणी

मानवीय संस्कृति से जुड़ी प्रवृत्ति

समता विभूति आचार्य श्री नानेश

(धर्मपाल क्षेत्र से सवाद कर लौटते हुए श्री गोविन्द नारायण श्रीमाली ने मे समता विभूति आचार्य श्री नानेश एव स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य श्री ज्ञानमुनिजी के दर्शन किए और धर्मपाल विशेषाक के प्रसंग से सन्देश प्रदान करने की आचार्य से विनती की। प्राप्त ओर सम्पादित सन्देश यहा अविकल प्रकाशित है।

—सम्पाद

धर्मपाल पहले हिन्दू समाज मे ही थे। ईसाई बनने वाले थे, महावी बारे मे उनके सिद्धान्तों के बारे मे बताकर के उन्हे इस मार्ग पर लाए। ३ जितने धर्मपाल कुव्यसनों से मुक्त हो धार्मिक आचरण कर रहे हैं, उन्ही तैयार कर के धर्मपाल प्रवृत्ति को आगे बढाने मे हम लगा सकते है। जैन के पदाधिकारी भी इस कार्य मे सक्रिय रहकर कार्य करे।

व्यसन मुक्ति का अभियान किसी भी धर्म से नहीं जुडा है। देश आस्तिक प्रधान धर्मो का देश है, जहॉ पर सारे धर्मो का समावेश निर्विवाद स्वरूप किया जाता है। सारे धर्मो के अर्न्तगत मौलिक नीव अहिसा रही है। किसी किसी रूप मे सभी धर्मो ने हिसा को त्याज्य बताया है। जैन धर्म मे तो अहिं की अति सूक्ष्म व्याख्या प्राप्त होती है। जैनी बनने के लिए सात कुव्यसनो त्याग की अनिवार्यता बतलाई गई है, ये सात हैं जुआ, मास, शराब, चोरी शिकार, परस्त्रीगमन, वेश्यागंमन। जैन धर्म जन्मना जाति प्रधान न होकर कर्मण जाति प्रधान है। जैनी जन्म से नही कर्म से होता है। भगवान महावीर ने जातिवाद का बहिष्कार करके कर्मवाद को प्रधानता दे प्रतिष्ठापित किया। यही कारण था कि भगवान महावीर के धर्म मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र सभी को समान भाव से प्रवेश दिया गया और सभी के चरम उत्थान को मौलिक अधिकार दिया गया।

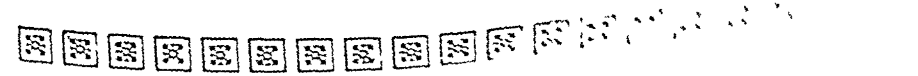
जब मुझे स्वर्गीय गुरुदेव शात क्राति के जन्मदाता आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा. ने सघ का भार सौंपा तो सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, सभी के



। एव सुखकारी स्थिति को प्रस्तुत [illegible]
ी परिप्रेक्ष में मैंने व्यक्ति से विश्व तक [illegible]
ता दर्शन का प्रस्तुतीकरण [illegible]
श्व मे शाति का सचार नहीं हो [illegible]
ए। पहला समता सिद्धान्त दर्शन है, [illegible]
ो समता के धरातल पर [illegible]
निवार्य होता है तभी समता के [illegible] दर्शन [illegible]
ी स्थिति में आ सकता है। इसे [illegible] प्रस्तुत करने
का अभियान धर्मपाल प्रवृत्ति के रूप में [illegible]। धर्मपाल प्रवृत्ति में जो
यक्ति गो-भक्षक बन गए थे, [illegible] की बोतलें
रहती थी उनके बीच पहुँच कर, उन्हें सत् संस्कारित करने के लिए भगवान
महावीर का सदेश उन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। इस प्रयास में यद्यपि
साधु जीवन की मर्यादाओं को सुरक्षित रखते हुए [illegible] में कई परिषहो की
स्थिति रही लेकिन स्वय के साधु जीवन की [illegible] के पश्चात ही यथायोग्य प्रचार
की स्थिति ही स्वरूप लेती है, वही स्थाई रह पाता है। अतएव गॉव-गॉव मे
पदयात्राएँ करके बलाई जाति के लोगों के बीच पहुँच कर उन्हे सत् संस्कारित
करने का प्रयास सफल रहा।

उस समय धर्मनाथ भगवान की स्तुति चलने के कारण से तथा सम्प्रदायवाद से अतीत उनका नाम धर्मपाल रखा गया। जो धर्म का पालन करे वही धर्मपाल है यद्यपि उन्हे जैनी भी कहा जा सकता था लेकिन इस सत् सस्कार की योजना को धर्मांधतावश अन्य परिप्रेक्ष में न ले लिया जावे, इसलिए इनका धर्मपाल नामकरण ही अधिक उचित लगा।

उस समय एक आर्य मिशनरी भी क्षेत्र में कार्य कर रही थी लेकिन उनसे यह कार्य सफल नहीं हो पा रहा था। उस समय मे इस प्रकार से कार्य करते देख कर उन लोगो ने भी इसे सराहा ओर कहा कि यह एक बहुत बढिया कार्य हुआ है, जो काम हमसे नहीं हो पा रहा था, वह आपने कर के दिखाया है। अन्य लोग हिन्दू जो मुसलमान बन चुके थे उन्हे वापस हिन्दू बनाने का प्रयास [illegible] रहा था। उन्होने भी कहा कि हम वापस हिन्दू बनने को तैयार है। इस [illegible] समता सिद्धान्त एव दर्शन अपनाने वाले व्यक्तियो को छुआछूत से [illegible] सबके साथ यथायोग्य समता का व्यवहार करना आवश्यक [illegible]



राष्ट्रीय स्तर पर भी नेहरू जी के पंचशील मे सह अस्तित्व की
का उद्घोष मिलता है। धर्मपाल प्रवृत्ति कोई सम्प्रदाय विशेष की न होकर
यह सारी मानवीय संस्कृति से जुडी प्रवृत्ति है, क्योकि जब मानव-मानव से प्
नही करेगा तो वह भगवान तक किसी भी स्थिति मे नही पहुँच सके
मानव-मानव के बीच जो एक लम्बी खाई पड चुकी है उसी को पाटने के लि
धर्मपाल प्रवृत्ति एक सुप्रयास है। हर इन्सान को चाहिए कि इन्सानी जिन्दगी
स्वर्गमय बनाने के लिए प्रवृत्ति के माध्यम से हो रहे प्रयासो को यथायोग्य
से आगे बढाकर मानवीय सभ्यता एव संस्कृति का उज्ज्वल स्वरूप प्रस्तुत क
जिस समय धर्मपाल प्रवृत्ति का इन्दौर मे करीब 34 वर्ष पूर्व सम्मेलन हो रहा
उस समय तत्कालीन गवर्नर श्री पाटस्कर जी ने भी कहा था कि विश्व को
धर्म की आवश्यकता है जो बिना किसी स्वार्थ के लोगों के अमानवीय भावो
हटाकर मानवीय भावो के साथ नैतिकता एव कुव्यसनो से मुक्ति के संस्कार
रहा है। साधुमार्गी सघ के लोग यथाशक्ति पुरुषार्थ कर ही रहे है लेकि
धर्मपाल प्रवृत्ति के इस महाअभियान को आगे बढाने के लिए संघ के लोगो
एव अन्य सभी आस्तिक धर्मो के अनुयायियो को विशेष रूप से चिन्तन करने
आवश्यकता है, जो धर्मपाल सस्कारित हो चुके हैं, उन धर्मपाल भाईयो को
चाहिए कि वे अपने भाई-बंधुओ को संस्कारित कर इस अभियान को अ
बढाऐ।

अत्ताहि अत्तनोनाथो अत्ता ही अतनो गति।
तस्मा संजमयऽत्ताणं अस्सं भद्द व वाणिजो।।

—धम्मपद—380

आत्मा ही स्वय अपना स्वामी है और आत्मा के समान हमें तारने वाला कोई दूसरा नही है। इसलिये जिस प्रकार कोई व्यापारी अपने उत्तम घोडे का सयमन करता है उसी प्रकार हमे अपना सयमन आप ही भली—भांति करना चाहिये।



[illegible]

याकंन

श्री धर्मपाल [illegible] प्रवृत्ति के मूल्यांकन हेतु पूछे गए प्रश्न–

1. धर्मपाल प्रवृत्ति के उद्भव और विकास के बारे में आप क्या [illegible]
[illegible] करने के लिए [illegible]
2. आपका धर्मपाल प्रवृत्ति से कैसे सम्पर्क हुआ ?
3 आपने धर्मपाल प्रवृत्ति में क्या [illegible] देखाई है ?
4. आपने धर्मपाल प्रवृत्ति में क्या योगदान किया ?
5 धर्मपाल प्रवृत्ति के गत 33-34 वर्षों के इतिहास में [illegible]
प्रसंग आपकी दृष्टि में कौन-कौन से है ?
6 धर्मपाल प्रवृत्ति में धार्मिक पाठशालाओं की व्यवस्था के विषय में
आपका क्या कहना है?
7. धर्मपाल-प्रवृत्ति ने चिकित्सा व्यवस्था समय-समय पर की गई आपके
क्या अनुभव और सुझाव है ?
8 धर्मपालों हेतु रतलाम मे श्री पेमराज गणपतराज बोहरा छात्रावास की
स्थापना की गई–उसका क्या लाभ हुआ ?
9 जैन समाज ने आचार्य श्री नानेश के उपदेशो का कहां तक पालन
किया और धर्मपाल भाइयो से जैन समाज का व्यवहार कैसा है ?
10 जैन संघ द्वारा समाज के अछूत बधुओ को समता प्रदान करने की जो
कोशिश चल रही है उसका-अछूतो पर, जैन समाज पर तथा शेष
समाज पर क्या प्रभाव पडा व पड रहा है?
11 क्या धर्मपालो के आचरण मे सचमुच क्रांतिकारी सुधार हुआ है ?
यदि हा तो क्या वे स्वय को जैन समाज व शेष सवर्ण समाज के
समकक्ष अनुभव करते है ?
12 धर्मपाल प्रवृत्ति का गाव के अन्य निवासियो पर क्या प्रभाव पडा?
13 क्या धर्मपाल प्रवृत्ति ने धर्मपालो को आर्थिक सामाजिक और
राजनैतिक शक्ति के रूप मे स्थापित किया है ?
14 आपकी समझ मे धर्मपाल प्रवृत्ति का भविष्य क्या है ?
15 क्या यह प्रवृत्ति शिक्षा, संस्कार और स्वावलंबन के क्षेत्र मे नई
दिशा दे पाई है ?

16. समता-समाज रचना के आचार्य श्री नानेश के आह्वान का धर्मपाल-प्रवृत्ति के संदर्भ में मूल्याकन करिये।

17 इस प्रवृत्ति ने व्यसनमुक्ति और संस्कार निर्माण मे कहां तक योगदान दिया है ?

18 आपका अभिमत।

संवाद में से निकलती हृदयाकाश से जगदाकाश तक गूंजती जय ध्वनि

रुकेगी नही, यह प्रवृत्ति बढेगी ही

—बगदीराम जी धर्मपाल, धमनार

धर्मपालो मे कोई भी निरक्षर न रहे

—प्रकाश जी सूर्या, उज्जैन

खेत पर, कूँए पर, घट्टी पर महिलाएं—
नाना गुरु के ही गीत गाती हैं

— हीरालाल मकवाना

विद्यालय-विद्यालय-विद्यालय चाहिये
छात्रावास का लाभ हुआ है

—मदन कटारिया

80 धर्मपाल सरपच बने है—
ये उनके अच्छे जीवन के प्रति सम्पूर्ण समाज का दृष्टिकोण बताता है

— मदन कटारिया

क्रांतिकारी परिवर्तन, अद्वितीय तथा ऐतिहासिक कार्य हुआ है।
गाव-गांव मे संत विहार होना चाहिये

—पी.सी.चौपडा

(और अब प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त विचार जो कि उत्तरदाता के भाव-भाषा को यथावत् रखते हुए प्रस्तुत करने के प्रयास सहित आपके समक्ष है—

— सम्पादक)

श्री पी.सी. चौपडा सा.

(1) आचार्य श्री नानालाल जी म सा. का आचार्य पद पर आसीन होने के बाद रतलाम मे प्रथम चातुर्मास 1963 में हुआ। चातुर्मास के पश्चात विहार करते हुए नागदा पहुँचे जहाँ धुलजी भाई एव सीताराम जी बलाई उनके प्रवचनो से



...ावित होकर आचार्य श्री को अपने गॉव गुराडिया ले गए जहाँ 70 गॉवो के ...ये हुए उनके समाज के 533 परिवार एक समारोह मे एकत्रित हुए थे। वह ...न था 23–3–64 का। आचार्य श्री ने सरल भाषा मे धर्मनाथ भगवान की ...र्थना से प्रवचन प्रारम्भ किया, साथ ही सप्त कुव्यसनो का विस्तार से विवेचन ...किया। उनसे होने वाली हानियों का मार्मिक चित्रण किया। जैनत्व के सस्कारो ...वं कर्म और पुरुषार्थ का जीवन में महत्त्व समझाया। सब लोग प्रवचन से इतने ...भावित हुए कि उन्होने आचार्य श्री जी से सम्यक्त्व ग्रहण की। वे जब कहने ...लगे कि बलाई जाति का कलकित टीका तो अब भी है तो आचार्य श्री ने कहा ...के आप लोगो ने कुव्यसन त्याग कर सस्कारित जीवन जीने का निर्णय लिया ...है तो अब आप स्वय को धर्मपाल जैन के नाम से संबोधित करे। उसी दिन से ...ही इस प्रवृत्ति का बीजारोपण हुआ। घोर परिश्रम सहन कर आचार्य श्री ने अनेक ...ग्रामो का दौरा कर दलितोद्धार और धर्मजागरण का अभूतपूर्व कार्य किया। ...दि. 8–10–64 को इन्दौर में अ भा. साधुमार्गी जैन सघ के अधिवेशन के समय ...धर्मपाल अधिवेशन हुआ राजपाल पाटस्कर भी आये। इन्दौर चार्तमास के बाद ...भी आचार्य श्री ने गॉघो-गॉवो मे विचरण किया। इस तरह लगभग एक वर्ष तक ...मालवा मे विहार किया जिसके चमत्कारिक परिणाम निकले और आज लगभग ...एक लाख बलाई समाज के व्यक्ति व्यसन मुक्त एव सस्कारित जीवन जी रहे ...है।

2. मै 1975 में इस प्रवृत्ति के निकट सम्पर्क मे आया जब श्री भँवरलाल जी कोठारी जो सघ के मंत्री थे और जिन्होने इस प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए इस प्रवृत्ति के कार्य क्षेत्र को 5 क्षेत्रो मे विभाजित किया। जावरा, रतलाम, नागदा, मंदसौर, एवं उज्जैन मक्सी। रतलाम क्षेत्र मे मुझे सयोजक बनाया गया।

3 दलित जाति जिसके साथ सभी छुआछूत करते थे तथा जिनको घृणा की दृष्टि से देखा जाता था उनके कुव्यसन छुड़ाकर तथा उन्हे सस्कारी बनाकर उन्हे धर्मपाल जैन बनाकर समाज मे बराबरी का दर्जा दिया। यह एक अद्वितीय तथा ऐतिहासिक कार्य हुआ।

4 मै निरन्तर रतलाम क्षेत्र का सयोजक रहा तथा सभी कार्यकर्ताओ के सहयोग से इनके गॉवो मे दौरे किये, इनके यहाँ धार्मिक स्कूलें स्थापित की। धर्मपाल सम्मेलन एव रैलियॉ आयोजित की तथा हमारे क्षेत्र मे पदयात्राऐ भी



आयोजित की।

5. धर्मपाल क्षेत्रो में अनेक पदयात्राएं निकाली गई जिनमें भारत के कोने-कोने से संघ के अनेक लोगो ने भाग लिया जिनमें ऐसे-ऐसे धनाढ्य व्यक्ति भी थे जो कभी पैदल नही चलते थे तथा अपने एंयरकंडीशन आफिसों मे काम करते थे। वे भी अपने परिवारो के साथ पदयात्रा मे पैदल चलते थे तथा धर्मपाल भाई बहनो के साथ ऐसे घुल मिल गए कि कोई फर्क नजर नही आता था।

6. धार्मिक शिक्षकों की कमी रही, इन्ही के लोगों को प्रशिक्षण दे कर शिक्षक बनाया। शालाएं कुछ समय तक चलती हैं, खेती के समय पर बंद हो जाती है। ये लोग बीकानेर बोर्ड की परीक्षाएँ देते है, पाठशालाओ में पढते हैं जैन धर्म की प्रारम्भिक बाते बताते हैं तो फर्क पडता है, साफ सफाई रखते हैं हिसा नही करते। इनके लिए अलग से पाठयक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए। इसके अभाव में वे ज्यादा आगे नही बढ पाते। हम निरीक्षण नही कर पाते। वर्षा के दिनों के अलावा निरीक्षण निरन्तर किए जाने चाहिए।

7. डॉ. बोर्दिया जी के समय सन् 76 में चल चिकित्सालय बोहरा जी ने दिया था। डॉ. साहब ने बहुत कार्य किया। बाद मे डॉ. प्रकाश ने काफी समय काम किया फिर कोई डॉक्टर मिला नही तब से व्यवस्था बंद हो गई। अब सेवाभावी ड़ॉक्टर एवं वाहन चाहिए तभी प्रवृत्ति लाभदायक हो पाएगी। इस प्रवृत्ति से हमें बहुत लाभ होगा। गॉव के सभी लोगो को देखते तो वे चिकित्सा समय पर होने से प्रसन्न होते।

8. जुलाई 79 मे बोहरा सा. ने जमीन व भवन संघ को दिया। 20-25 छात्रों के लिए सभी प्रकार की व्यवस्थाए है। नवी से बी. ए., एम. ए तक के छात्र रहते है। आवास, भोजन, शिक्षा सब की व्यवस्था रहती है। जितना लाभ होना चाहिए था उतना नही हुआ। छात्र मन लगाकर पढते नही है। अच्छा गृहपति नही मिलता, इसलिए इस हेतु अच्छा कार्य नहीं होता, इसलिए ज्यादा लाभ नही हो पाता। पहले तो कानोड भेजते थे, दांता भेजते थे, जहा अपने विद्यालय थे। यहॉ स्वतत्र छात्रावास बन गया तो वहॉ भेजने बंद कर दिए।

9 कुछ सेवाभावी लोग ही जुडते हैं, यहां आते है तो कोई भेदभाव नही करते, समाज ने धर्मपालो को आत्मसात कर लिया है।



10. गॉवो मे अच्छा असर पडा, धर्मपालो का सम्मान बढा, पहले घृणा करते थे रहन–सहन सुधरा, व्यसन छूटने से सम्पन्न हुए।

11. क्रांतिकारी सुधार हुआ। सरकारी नौकरियो मे फायदा मिला तो यह स्वयं को बलाई लिखाने लगे। सरकारी स्तर पर धर्मपालो को भी पिछडे वर्ग मे शामिल किया जाना चाहिए। इनकी कुछ बहनें दीक्षा के लिए तैयार थी, लेकिन वह भी मामला लटक गया। जहॉ धर्मपाल व्यसन मुक्त हो गए वहॉ गोचरी को जाना चाहिए। हम लोग जाते है तो साथ बैठकर भोजन करते है बाकी शेष समाज बराबर स्वीकार नही कर पाता।

12. इज्जत बढी।

13 आर्थिक सम्पन्नता आई। राजनीति मे, पचायत चुनावो में पूछ हुई दो चार विधायक भी बने है, एक आध एम पी. भी बना। श्री सत्यनारायण जाटिया सासद के पिताजी पूरी तरह से जैन धर्म से जुडे थे।

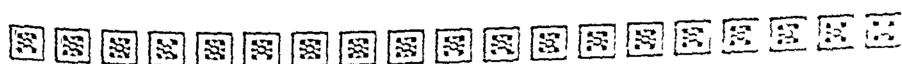
14 इसका भविष्य और अच्छा हो सकता है, जब साधु इनके गावो मे विचरण करे। सम्पतमुनि जी म सा, धर्मेश मुनि जी म सा ने विचरण किया भी कुछ साधुओ का मन है इस ओर। सत जाऐगे तो समाज के लोग भी जाऐगे तो काम पक्का होगा।

15 सस्कार अच्छे हो गए, स्वावलम्बन बढा है, धर्मपाल सम्मेलन भी वे स्वयं ही करने लगे है, शिक्षा बढी खेत-खलिहान हो गए।

16. आशिक रूप से समाज ने स्वीकारा, 34 वर्षो की यह उपलब्धि कम है। इनके समाज के कार्यकर्ता बनाने चाहिए तभी अच्छा एव प्रभावकारी काम हो पाएगा। समीरमल जी ने बहुत काम किया। उनको कार्यकर्त्ताओ को साथ रखने का बहुत कहा लेकिन वे एकला चलो अभियान ही रखते। इस कारण आगे की पीढी तैयार नही हो पाई। इस प्रवृत्ति हेतु कुछ कार्यकर्ता तैयार करने चाहिए। पॉचों क्षेत्रो के सयोजकों को "एक्टिव" करना होगा। पदयात्रा, चलचिकित्सा चालू करनी चाहिए, सतो का विहार होना चाहिए।

17 व्यसन मुक्त तो हो गए, क्षेत्र मे 700 गाव है। इतनो मे भ्रमण एव कार्य करने को बहुत बडी संख्या मे कार्यकर्ता चाहिए जो नही है। पूर्व की पीढी तो समाप्ति की ओर है, नई पीढी से पूरी तरह सम्पर्क किया जाना चाहिए।

काम अच्छा है बढाना चाहिए, कार्यकताओ की फौज हो, उनके समाज



के कार्यकर्ता बनाए, शासन से भी सहयोग कैसे ले इस पर विचार हो। शासन का रूख इनके साथ सकारात्मक हो मेरठ से लोग आए धर्मपालो को पकड कर ले गये। जंगलों मे बंधुआ बना रखा। बाद में समीरमलजी के प्रयासो से छूट सके। धर्मपालो को समाज का पूरा फीडबैक मिले इसका भी प्रयास हो।

—पूर्व संघ अध्यक्ष एवं प्रवृत्ति प्रमुख, रतलाम

मगनलाल जी मेहता—प्रमुख विचारक

रहन सहन आचार-विचार में फर्क आया है आर्थिक स्थिति से फायदा हुआ है। लेकिन सख्या की दृष्टि से अधिक लाभ नही हो पाया है। इन्हे जैन समाज मे जितना अपनत्व मिलना चाहिए था, उतना नहीं मिल पा रहा है। छात्रावास से जुडा है लेकिन "कैलीबर" पैदा नहीं हो पा रहा है। उच्च शिक्षा जरूर प्राप्त हो रही है। लगातार चलने वाली पाठशालाएँ एक भी नही है। आर्थिक रूप से ज्यादा लाभ अपन नही दे पाये। वास्तव में यदि हम धर्मपाल प्रवृत्ति को सुचारू रूप से चलाने चाहते है तो दो -चार-प्रीपैड प्रचारक होने चाहिए। वे ही इस व्यवस्था को सही तरीके से लागू कर सकते हैं। समर्पित व्यक्ति तो उनको चैक कर सकते हैं। 25 वर्षो से सम्पर्क में हूँ, व्यसन मुक्ति एवं संस्कार निर्माण के क्षेत्र में कार्य हुआ है। हम अपने समाज के लोगो को अधिक जोड नही पाए। शुरू से कुछ ही लोगो के भरोसे यह प्रवृत्ति चलती रही। इसलिए जितना विकास होना चाहिए था, वह नही हो पाया। प्रवृत्ति को सीमित गॉवो तक रखते हुए व्यसन मुक्ति कार्यक्रम चलाए तभी यह प्रवृत्ति पूरी तरह से लागू हो पाएगी। प्रभूत आर्थिक स्रोतो के होने पर ही इतना बडा कार्य हो सकता है।

प्रवृत्ति अच्छी है, महावीर स्वामी का मूल .उपदेश है, सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से तो यह बहुत अच्छा था, हमारी कमी रही कि हम उसे सही रूप में लागू नही कर पाए। आपने समीरमल जी की सेवाओ को याद किया। गणपतराज जी ने पैसे से, समय से योगदान दिया। क्षेत्र के समाज के लोग इस कार्य से जुडे या पेड व्यक्ति रखे। यदि धर्मपालो को ही समाजोत्थान के कार्य मे लगा दे तो वह अधिक उपयोगी होगा।

यात्राएँ गाडियो से की जाए 8-10 लोगो की टोलियॉ बनाकर व्यक्तिगत सम्पर्क कर सकेगे तो अधिक लाभ हो पाएगा और खर्च भी कम पडेगा।



प्रेमलता जी पिरोदिया, रतलाम

प्रवृत्ति से शुरू से जुडाव। चल चिकित्सा के क्षेत्र में सतत सक्रिय कार्य , यात्राओ, शिविरो मे सक्रिय सहयोग। धर्मपालों मे प्रवृत्ति से बदलाव आया जीवन शुद्ध हुआ। महिलाओ मे जागृति के लिए शाता बहन, धूडी बहिन आदि के साथ कार्य किया। प्रवृत्ति का बटवारा हो जाने से काम ढीला हो गया। धर्मपालों और गॉव के अन्य लोगो को चल चिकित्सालय से अधिक लाभ हो पाया।

समिति की पूर्व अध्यक्षा शांता बहिन मेहता, रतलाम

गेदालाल जी नाहर के समय से प्रवृत्ति से जुडाव। वे महिलाओ को क्षेत्र मे नही ले जाते थे। बाद में समीरमल जी के साथ जाने लगे। बलाई एकत्रित होते, हम समझाते, शराब, मांस मदिरा आदि कुव्यसनो को छोडने का आह्वान करते । एक बार धनतेरस के दिन क्षेत्र मे गए। मोसर मे एक हजार व्यक्ति एकत्र हुए थे। समझाईस की तो 400 (चार सौ) लोगो ने सप्त कुव्यसनो के त्याग की सौगध ली। हम महिलाऍ घर-घर जाने लगी। पानी छानने, बच्चो के बारे मे उनके स्वास्थ्य, टीकाकरण, कपडे, साफ सफाई आदि की जानकारी देते थे। महिलाऍ शराब पीकर आने के बाद के व्यवहार बताती हम समझाती। पैसे बचाओ तो बच्चो को खाना मिल सकेगा।

धर्मपाल महिलाओ के शिविर लगाए, सालाना जिसमे 35-40 महिलाए आ जाती थी। अक्षर ज्ञान एव धार्मिक ज्ञान देते थे। विद्वानो से भाषण दिलवाते थे। स्वावलम्बन पर जोर दिया जाता था। समापन पर माईक मे बुलवाते थे। ग्रामीणो पर जल्दी असर हुआ। वे सीखाते और बताते थे, धार्मिक नैतिक शिक्षा देते । बाद मे पदयात्राए की। सभा करते, महिलाओ को समझाते, वे स्वय बोलती भजन करती, गुराडिया, रूलकी गॉवो मे लगन से धर्मपाल महिलाए होशियार हुई। नागदा-मक्सी मे भी सिलाई मशीने दी, सिखाई।

3 सही तरह से सहयोग करे तो वे लाभान्वित होगे शिक्षा मिल पाएगी। अभी हम कम जा पा रहे है, तो मदी आ गई है। बार-बार प्रेरित करे तो स्थिति सुधर सकती है। अभी ठडा पड रहा है। मेरे विचार से प्रवृत्ति उन पर ही नही छोडे ताकि हम उसे लम्बे समय तक चला पायेगी और अधिक व्यसन मुक्त बनावे तो अधिक लाभप्रद हो सकते है।

6 पैसे एव व्यवस्था नही होने से पाठशालाऍ नही चल पाई, वैतनिक



कार्यकर्ता रखे तो यह चल पाएगा और अवैतनिक कार्यकर्त्ता उसे उन्हे संभाल पाऐगे।

12. अच्छा प्रभाव पड रहा है।

13 आर्थिक लाभ हुआ, छुआछूत मे फर्क पडा है। पढ लिख रहे हैं।

14 कार्यकर्ता रखकर इसको चलाऐगे तो यह प्रवृत्ति बढ सकती है।

आचार्य श्री की भावनानुसार नही चल पाई। समाज ने अपनाने में सकीर्णता रखी। जैसे एकाकार होना चाहिए था वैसे नही है, समाज के लोग जोडे या तो पूरा जोडे या फिर सिर्फ व्यसन मुक्त करके छोड दे।

श्री राजेश जी सिंघवी, क्षेत्रीय सयोजक धर्मपाल प्रवृत्ति, जावरा

गत पदयात्रा से प्रवृत्ति के सम्पर्क मे। सस्कार निर्माण कार्य अच्छा है। धार्मिक भावनाओ मे वे लोग सख्त है, कडाई से पालन करते हैं। समाज के अधिकतर लोग इनमे मिल नही पाए जो सक्रिय हैं वे ही जुडे है, बाकी समाज का उन्हे सहयोग नही मिला। व्यक्ति विशेष ही जिम्मेवारी से कार्य करते हैं बाकी लोग ध्यान नही देते। गत यात्रा मे 100-150 धर्मपाल आए थे जबकि जैन समाज से कम ही लोग आए थे। बाकी समाज पर उनकी व्यसन मुक्ति से फर्क पडा है, दृष्टि मे अन्तर आया है। सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव पडा है, सब सक्रिय रहे तो प्रवृत्ति का भविष्य उज्जवल है। धर्मपाल भी सक्रिय रहे तो भविष्य सुरक्षित होगा। पूरा समाज इसमें योगदान दे। निमंत्रित कर धर्मपालों को बुलाए तो वे स्वयं को जुडा महसूस कर सके। शिक्षक प्रशिक्षण शिविर मे गए तो धर्मपालो ने सम्मान दिया । सहयोग भी किया जिसने अभिभूत किया।

श्री विनोद जी मेहता, रतलाम

1 प्रवृत्ति की जितनी प्रोग्रेस होनी चाहिए थी नही हुई, समय अधिक हो गया है, धर्मपाल कितने है यह जानकारी आवश्यक है। कितने गॉव है। विकास के लिए पूरा सभाज इस प्रवृत्ति को अपनाए तभी विकास सभव है। संयोजक ही कार्य कर रहे है। जवाबदारी वालों पर ही सारा भार है। अपनापन समाज दे तो वे अपने को जुडा महसूस करेगे।

2 92-93 की पदयात्रा में शामिल हुआ। धर्मपालो से वर्षों से सम्पर्क है। पदयात्रा अच्छी लगी। बाद मे समीरमल जी के साथ गए तब क्षेत्र से और धर्मपालो से सम्पर्क हो पाया। इनसे जुड कर कार्य करेगे तो उन्हे लाभ मिल



पाएगा। धर्म की ओर मोड पाए, व्यसन मुक्त करेगे तो पुण्य मिलेगा।

3. व्यसन मुक्ति, धर्म जागरण शिक्षण सस्थाएँ परिणाम भी आए है कई धर्मपालो के कम समय मे आर्थिक स्थिति मे व्यापक सुधार हुआ है, कुव्यसन छुट गए। समाज के सम्पर्क से जागृत हो आगे बढ पाए। एक ने तो सिर्फ व्यसन मुक्ति से मोटर साईकिल खरीद ली। यदि प्रवृत्ति बराबर चलती रहे तो और लोगो को और धर्मपालो को भी लाभ हो सकता है। प्रवास हो, सम्पर्क हो तभी यह संभव है। वे अपने यहां नही आ पाते, गाव मे जाकर जागृत करना होगा। धर्मपाल शिक्षण शिविर तीन दिन का, आठ दिन का भी लगाया वे लोग ट्रेंड हो, क्षेत्र के धर्मपालो को जोड पाए इसके लिए आर्थिक मदद दी जानी चाहिए।

6 पाठशालाएँ जारी रहनी चाहिए।

7 चलचिकित्सालय के बजाय चिकित्सा शिविर लगाने चाहिए, स्पेशलिस्टो को साथ ले जाना चाहिए।

8 शैक्षणिक शिक्षा तो मिलती है। धर्म के प्रति जागरूक करना चाहिए। नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। जो पढ कर गए है उनका वापस सम्पर्क नही है।

9 अच्छा है लेकिन जिस स्तर तक स्वीकारना चाहिए उतना सभव नही हो पाया है।

10 वे अच्छा मानते है।

15 शिक्षा एव सस्कारो मे तो असर है लेकिन स्वावलम्बन के बारे मे अभी अपनी और से कोई विशेष कार्य नही हो पाया है।

17 धर्म जागरण हुआ है, व्यसन मुक्त हुए है, प्रतिक्रमण आदि कराते है। लेकिन वे लगातार इसका पालन करते है या नही यह पता नही है लेकिंन इसको समय-समय पर चैक करना अनिवार्य है।

14 अधिक जोडे, अधिक सजगता से कार्य हो स्वावलम्बन की योजना चलाई जावे तो अधिक कारगर हो पाएगा। पूरा समाज जोडे, यह अति आवश्यक है। सर्वे हो, लिस्टे तैयार हो, विशेषाक मे चाहे न निकल पाए, कितने गॉवो मे प्रवृत्ति है, प्रत्येक गाव मे कितने धर्मपाल है, पहले क्या पोजिशन थी, क्या अब है, दोनो मे कितना फर्क है । सुविधाएँ बढाएँ।



राजेश जी बोर्दिया, जावरा

1. जितने गांव है उनमे विद्यालय प्रारम्भ हो, समय-समय पर प्रवास हे, सभी गॉवो के प्रतिनिधियो को बुलाकर वर्ष भर मे एक आध सम्मेलन आयोजित हो, संत-सतिया जी महाराज का विचरण हो ऐसी धर्मपालों में भी भावना रहती है। संघ अधिवेशन मे अधिकाधिक धर्मपालो को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

2. चार वर्ष पूर्व यहा आया तो समीरमल जी के साथ गॉवो मे जाने लगा। पदयात्राएँ हर वर्ष निकले और अलग-अलग क्षेत्रो मे निकले।

3. पिछडा समाज सरकारित हो रहा है, दुर्व्यसनो से दूर होकर आर्थिक दृष्टि से मजबूत हो रहा है। युवा पीढी में नई चेतना का विकास देखने को मिला। प्रवृत्ति गॉवों मे अधिक सक्रियता से चलेगी तो परिणाम अधिक मिल सकेगे। समीरमल जी के देहांत के बाद 5-7 गांवो मे घूमा समस्याओं को दूर करने मे सहयोग, आपसी विवादो का हल, बैंक लोन दिलाने मे मदद की।

6. बजट कम होने के कारण हर गांव में विद्यालय खोलना, अध्यापक लगाना संभव नही था। हर गांव मे मास्टर लगाएं जो कि विधिवत शिक्षण चला सके। धार्मिक परीक्षाओ का आयोजन हो, जिससे उत्साह बना रहे एव परीक्षण भी होता रहे।

7 चिकित्सा वाहन के समय में डॉ. के सहयोग से सेमीनार लगाए जाएं जहां वे जानकारी दें एवं देख रेख कर सके।

8. राजकीय सेवाओ मे गए है, कुछ ने स्वयं का व्यापार शुरू किया है, और सुविधाएँ बढाई जावें ताकि अधिक लोग लाभ ले सके।

9. समाज के लोगों को अधिक जोडा जावे, पदाधिकारी प्रवास करे। संतसतियॉ जी म. सा. विचरण करे। काफी सफलताएँ मिली है लाख-डेढ लाख धर्मपाल व्यसन मुक्त हुए। अपने समाज द्वारा पूरा सम्मान दिया जा रहा है। व्याख्यान, सत सतियॉ जी भ.सा के दर्शनो मे इन भाईयो को पूरी तरजीह दी जानी चाहिए, जब वे दर्शनार्थ जाते हैं तो इन पर विशेष ध्यान नही दिया जाता। बराबर महसूस करते हैं। इन्हे देखकर अपने युवा भी व्यसनो से मुक्त होने मे सक्रिय हुए है। धार्मिक क्रियाकलापों से जुड रहे है। यह धर्मपालो के व्यवहार के कारण चल रहे है। कई गॉवो मे दूसरे लोग भी प्रवृत्ति से जुडकर व्यसन मुक्त हुए है, मन्दिरो मे जाना, सामाजिक कार्यो मे शामिल करना, राजनैतिक दृष्टि से



वैठने लगे, गांव के तालाब मे मच्छी मारने पर रोक लगवाई। मामाजी ने पर्यू मनाया। बिना साधनो के मामा-मामीजी आए। मरमया गांव में वर्षा के लिए ब की बली दे रहे थे, मामाजी से प्रेरित हो बलि रूकवाई।

6 स्थानीय व्यक्ति पढाए, पढे लिखे लडके है। मै एक रविवार को सेवाएं देने के लिये जा सकता हूं। गांव मे पाठशालाओ को लाभ हुआ है।

7 चल चिकित्सालय से लाभ हुआ। कम खर्च मे गांवो मे काफी लाभ पहुंचा। टी बी. मरीजों को बोर्दिया जी ने ठीक किया। माह मे पन्द्रह दिन मे स्कूल पचायत के माध्यम से आयोजन हो तो चार-पाच सौ को लाभ हो सकेगा।

9 इनका व्यवहार ठीक है, इन्ही के भरोसे चल रहा है। गुरुदेव के आदेशो से सेवा कार्य कर रहे है हमारा तो उपकार ही कर रहे हैं। अच्छा व्यवहार करते है।

10 कई जगह तो व्यवहार ठीक है लेकिन अधिकतर स्थानों पर ऐसा व्यवहार नही हैं, दृष्टिकोण मे फर्क आया है। जैन समाज से तो लाभ मिला, गांव मे जैनो के साथ जो व्यवहार होता है वैसा ही हम रखते है। लेकिन हम मे से जो सुधरे नही है उनके साथ भेदभाव रहता है और वह वाजिब भी है।

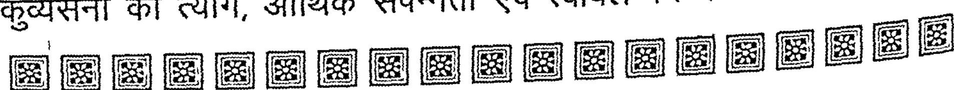
पुजारी, ठाकुर आदि ने भी धर्मपालो की तरह कुव्यसनो का त्याग किया। दूसरे समाजों से तालमेल बढा। आर्थिक रूप से लाभ हुआ। साधु सतो के संपर्क से हिचकिचाहट दूर हुई, भावनाएं बार-बार आने से जागृत हुई।

शिक्षा मे लाभ हुआ। नही तो सुविधाओ से वंचित रह जाते, शासन की सुविधाएँ नही मिल पाती, कुए के लिये लोन मिलना चाहिए, नही मिला। मिल पाता, पढ लिख लिए तो शासकीय योजनाओ का लाभ लेने लगे। ओसवाल-वीरवाल समाज निकले हैं इसी तरह धीरे-धीरे उत्थान होगा। कुव्यसनो को त्यागने वालो का एकीकरण होना चाहिए। पारिवारिक संबध बढे, सामाजिक नींव मजबूत हो जाए तो खानपान आदि की स्थिति बन जाए।

श्रीमती शकुतला कांठेड धर्मपत्नी स्व श्री समीरमल जी काठेड

1 मन्दसौर चातुर्मास के समय से जुडे हैं। गेदालाल जी नाहर, काठेड जी के साथ भी सतत सक्रिय रहे।

3 बदलाव आ गया, खानपान बदला, सफाई शिक्षा, धार्मिक शिक्षा कुव्यसनो का त्याग, आर्थिक सपन्नता एव स्वावलम्बन के क्षेत्र मे विशेष लाभ



ा। शुरू मे गांवो मे पैदल जाने मे तकलीफ हुई। बाद मे अच्छा लगने लगा, ांति मिली इसलिये तन्मयता से लगकर काम करता। सघ मे जाता आता हिलाए, महिलाओ मे काम करती उन्हे समझाती धार्मिक कार्यो के बारे मे ानकारी देती।

एक बार गांवो मे गए तो कजरो ने मक्सी के उधर रोक लिया, हालाकि र्मपालो ने मना किया था, तब भी गए। उनके अड्डे के पास ही गाडी खराब ो गई। वे आ गए काठेड जी को अड्डे पर ले गए, मैने कहा मै भी चलूगी। ो उन्होने मना किया—कहा मैं अभी आता हूँ। मै सुनसान जगल मे जीप मे बैठी ाशकित हो रही थी। कजर लूट कर मार देते थे। मन मे डर बैठा था। गुरुदेव ो याद करती, नवकार मंत्र जाप कर रही थी। उधर वे अड्डे मे कजरो को मझा रहे थे, रात भर वही रूके। रात भर मे फर्क पडा वे विनम्र हुए हाथ जोडे हे। मन बदल चुका था। चमत्कार सा लगा। ऐसी घटनाए कई बार हुई। ुरुदेव की शक्ति से ही सब ठीक होता, कुछ नहीं होगा—यह विश्वास था।

माऊ मे हरिजनो की बारात मे दुल्हा घोडे पर चढा था। कुछ लोगो ने थराव किया, फसाद हो गया। काठेड जी ने गृहमत्री से सपर्क किया। गाव मे मझाइश की और शादी को शातिपूर्वक सम्पन्न करवाया।

पाठशालाओ से धर्मपालो को लाभ मिला, मक्सी के बच्चे गाना-भजन ादि करते थे। भजन आदि का मक्सी मे ज्यादा मजा आता था, चार-पाच दिन ुकते काम करते। मक्सी मे शिक्षा का अत्यधिक प्रचार-प्रसार हुआ। कुछ ाक्टर, इजीनियर बने। चल चिकित्सालय थोडे दिन चला फिर बद हो गया। ूरा योगदान दे तो काम चल सकता है। लोग तो बहुत बीमार रहते है। बहुत ाभ हुआ। शिक्षा मे उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ। प्रोग्रेस बहुत हुई। यदि ुरुदेव पहल नही करते तो वे कुछ और बनते। नवकार मत्र आदि से सब ठीक ो.जाता था। व्यसन छोडकर पैसा बचाया और स्वय का उत्थान किया। कुछ ोगो का तो इनके साथ व्यवहार ठीक था, कुछ का अच्छा नही था। लोग कहते घूमने-फिरने जाते है, अब सब समझने लगे हैं, शुरू मे परेशानी रही। सर्विस, खानपान आर्थिक स्थिति सुदृढ हुई फर्क पडा।

अच्छा काम करने वाले होगे तो बढेगी। तन-मन-धन से काम करने वाले होगे तो प्रवृत्ति बढेगी। अब समालते रहेगे तो ठीक रहेगा।



हम जाते तो सिलाई सिखाते लडकियो को पढाते थे, कुछ अच्छी पढ पाई स्कूल चलाती है, कई अध्यापिकाएं लगी है। शुरू में और अब मे फर्क पड गया है। बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। गांव तिलावद गोविन्द में अध्यापक की पुत्री ने स्वय का रेडीमेड का कार्य शुरू किया है। कुछ देवास मे अध्यापिकाए बनी है।

श्री सुरेन्द्र जी श्रीमाल (अध्यापक) रिगनोद

1. गेदालाल जी नाहर के समय से पढा रहे हैं। नंन्दावता एवं वणोलू गांवो मे पढाया। पूरा परिवार पढाने मे लगा है।

2. अहिसा का प्रचार-प्रसार ज्यादा है, सस्कार मिटाता है, इन लोगो मे जैनो से "इन्टरेस्ट" ज्यादा है। कुव्यसनो से छुटकारा करने मे दो जातिया है मालवी बलाई व गुजराती बलाई। मालवी बलाई अधिक जागरूक है, मालवी कबीर पंथी है पहले से कुछ संस्कार है।

4 पढाया शिविरों में, मन्दसौर, रतलाम, उदयपुर शिविरों में भाग लिया। समीरमल जी के कार्य सराहनीय थे।

साक्षरता मे धर्मपाल मौहल्ले मे कार्य कर रहा था, कुत्ते को बिच्छु ने काटा कुत्ता चिल्लाने लगा नीला पड गया। बच्चो ने कहा गुरुजी इसे नवकार मत्र सुना दो, सभी बच्चे खडे हो गए। तेरह बार नवकार मत्र पढा। बिच्छु का जहर उतर गया।

6 पाठशालाएं चलाई जानी चाहिए। बच्चे आए तो उपयोगी होगी। अगली पीढी सुधरेगी, सर्वे करके पाठशालाएं शुरू करवाएं। चल चिकित्सालय बद हो गया। पैसे हों तो चलाएं, नही तो शुरू मत करो, छात्रावास से लाभ हुआ है, हो रहा है।

9 कम मात्रा मे स्वीकार किया एक साथ रहते है, उठते बैठते रहते तो महसूस करते है।

12. फर्क हुआ है, सुधार हुआ है सस्कार आ रहे है इसलिये फर्क पडा है। त्याग का असर तो होता ही है। भुवान रूपाजी रिंगनोद ने 30 सालों से सब कुछ छोड रखा है प्रतिशत कम ज्यादा हो सकता है लेकिन जागृति तो आई है। पैसा अधिक लगा हो, काम कम हो पाया हो यह समव हो सकता है।



भविष्य – उज्जवल है, खर्च करे, सहयोग करेगे तो वे जुडेगे, अर्थ
। दे तो जुडेगे, सत, सतिया जी म. सा को क्षेत्र मे जाना चाहिए।
ग्रा जी के आने से श्री धर्मेश मुनि जी म सा आए तो मोहल्ले मोहल्ले मे
हुई।

आशाराम जी धर्मपाल, धमनार

जब से सस्था शुरू हुई है तबसे जुडे है। परिवार सहित पूर्व से व्यसन
;, किसी न किसी के साथ तो लगना था सो जैन समाज की धर्मपाल
से जुडे। परिवर्तन मे साफ सफाई जमीन जायदाद शिक्षा एव सस्कार
। माता-पिता खाते पीते थे। मैने समझ पकडने के बाद से कुव्यसन नही
पर्यूषण, प्रार्थना, सामायिक करते है प्रवृत्ति को जारी करना है, बढाना है।
लेगा जब तक हम जीवित है, तब तक इससे जुडे रहेगे। दूसरी जगह
; तो इसकी चर्चा करते है। अगली पीढी मे सुधार मे लगे है।

धर्म ध्यान करते है। सामायिक मे 30-35 बच्चे आते है, बडे भी आते है
ानते है पढे लिखे नही है पर सीखते है, बढिया लग रहा है जीवन
है। दूसरो को सुधारे। स्कूल चल रहा है 20-25 लडके लडकिया आ
;। बगदीराम जी नवकार मत्र, सामायिक, 24 तीर्थकर के नाम, 16 सतिया
नाम बताते है। अन्य लोग थोडी दुर्भावना रख कर ही बाते करते है, कुछ
छी भावना से रखते है।

ग्राम धमनार की सोहन, ललिता एव रामकुवर ने "महावीर तुम्हारे चरणो
। के फूल चढाये हम" गीत प्रस्तुत किया।

बगदीराम जी, धमनार

गगाशहर, भीनासर चातुर्मास के समय अन्दाजन 10-12 साल से सम्पर्क
हले तो धर्मपाल प्रवृत्ति की जानकारी नही थी, ज्यादातर साथ अपने ही
का रहा। नौकरी उन्ही के प्रभाव से लगी, बचपन से कुव्यसन से दूर रहे।
भी न खाये, ऐसे प्रयास करता रहता हूँ। काठेड साहब से तो सपर्क था
आने पर लोग एकत्रित हो जाते थे वही मीटिग हो जाती थी। रूकेगी
ाह प्रवृति बढेगी ही, खान-पान तो सभी बच्चो को ठीक करवा दिया है।
त पाठशाला की तनख्वाह दो तीन साल से नही मिल रही है। सबसे
पाठशालाए चलनी चाहिए। बच्चो को धार्मिक शिक्षा देगे तो मा-बाप भी



प्रभावित होगे, जवाबदारी हमारी है। व्यवहार तो एक समान है। कभी हमें महसूस नही हुआ। नाम सुणो तो धर्मपाल से पहचान हो जाती है। जैन, मास्टर मिल गये बाबरा गांव के रहने वाले हैं। वहां हमेशा भजन होता है। जानवरो को डेढ क्विंटल अनाज डालते हैं, लोगो को प्रेरित करते

श्री प्रकाश जी सूंर्या; उज्जैन

1. गेदालाल जी के समय से जुडे हैं, गुरुदेव के आगमन से जुड़ा पदयात्रा में प्रवास में गया, उस समय लगातार कई सालों तक गया था। 86 बाद कोई ज्यादा सम्पर्क नही रहा।

3. संस्कारों की विशेषता है, स्कूले बराबर चलनी चाहिए लगातार सम्पर्क मे नही रहेगे तो वे नाम के धर्मपाल रहेगे जो जुडे थे वे लगातार हैं। नये जुड़े वाले थोडे अधकचरे से है।

5. उनमे भावनाएं अधिक रहती है। पोषण करते हैं तो यह कार्य काफी बढ सकता है। धर्मपाल शराब की दुकानो को हटाने के लिये सत्याग्रह करने को तैयार है, मध्यप्रदेश सरकार का आदेश भी आ गया हम लोग भी गये, हम यदि साथ नही लगेंगे तो वे लोग मायूस हो जायेगे, उनको फीडबैक की कमी है। गाइडैन्स, टीचर, पुस्तके, पानी की व्यवस्था कर दे तो प्रवृत्ति अच्छी चले।

6. कोई पाठशाला चलाओ, निरीक्षण न हो तो वे चल नहीं पायेगी, कोर्स कम है, सस्कार कक्षाएं चालू करें बच्चियो महिलाओ को आर्थिक सामाजिक एवं धार्मिक शिक्षण मे सहयोग करें। दस साल कक्षाऐ चलाए तो कोर्स क्या है ? साक्षरता करे तो शासन का सहयोग मिले। धर्मपालो मे कोई भी निरक्षर नही रहे।

7. निरन्तर करना चाहिए, चल चिकित्सा के दो लाभ है। आपका निरीक्षण भी हो जाता है, वे जुडाव महसूस करेगे, एक गांव मे माह मे एक बार चल चिकित्सालय आवश्यक पहुचना चाहिए। पीने के पानी की भी व्यवस्था होनी चाहिए। नलकूप हेतु दस बारह हजार खर्च आता है। सात हजार मेम्बरो से ले ले, कुछ संघ से ले तो बीस-पच्चीस नलकूप खुद जाये तो उनकी अपेक्षाओ की पूर्ति होगी उनका जुडाव बढेगा। इसे प्रायोजित भी किया जा सकता है।

9 जितना जुडना चाहिए था संघ के लोग नही जुड पाए। यात्रा वगैरहा



ो रहते है सक्रियता का सहयोग न होने के कारण पूरा लाभ नही हो पाता 35 वर्षो मे जो लाभ होना चाहिए था नही हो पाया है। 10 प्रतिशत ही लाभ ना है। कुछ परिवार लगातार सपर्क के अभावो मे वापिस टूट जाते है अपने दाय के लोग तो सहयोग करते है। व्यवहार मे समानता रखते है।

10. 100 प्रतिशत जुडाव की चाह है। जुडाव की भावना अच्छे सस्कार त करने की है। 100 मे से 90 जुड सकते है जो उनके सम्पर्क मे आता है र स्वयं व्यसनी है तो ग्लानी आती है और व्यसन छोडने का मानस बनता है।

12 राजनीतिक भावनाओ को उभारने की कोशिश होती है। धर्म परिवर्तन बात कहते है जबकि यह संस्कारो के परिवर्तन का कार्य है जीवन स्तर ठेगा, परिवार का स्तर उठेगा, तीस साल पहले जैसी वैर भाव की बाते नही ो फर्क पडा है सम्मान मे फर्क आया है।

13 नौकरिया मिली है, रतलाम छात्रावास का प्राथमिक विद्यालयो को र्क पडा है सामाजिक रूप से आत्मविश्वास आया है।

15 कितने हो सकते थे कितने हुये है, अधिक हो सकते थे लेकिन कम क्षित हुए है। चार लोगो के बीच सम्मान के साथ जा सकते है। 34 साल मे ो होना चाहिए था वह हम नही कर पाए। स्वावलम्बन के क्षेत्र मे कोई ल्लेखनीय कार्य नही हुआ है। रतलाम महिला समिति मे सिलाई की, खिलौने नाने की, परम्परा गत उद्योगो मे मदद करने की योजना थी लेकिन अपेक्षित गति नही हुई।

भविष्य युवको के हाथ मे है, वे ज्यादा से ज्यादा कार्य करे, स्थानीय घ एक क्षेत्र को गोद लेकर उसमे जिम्मदारी तय करके कार्य करे। बेसिक ीजे जैसे स्कूल, अध्यापक, पुस्तके, आदि उपलब्ध कराये ताकि धर्मपाल उसका ाभ ले पाये। धार्मिक परीक्षाए हो, प्रोत्साहित करे, पुरस्कृत करे, महिलाओ को साक्षर करे, बच्चे, वृद्ध महिलाओ को सिखाये, धार्मिक शिक्षा देवे। धर्मपाल बहिने ी यह कार्य नि शुल्क भी कर सकती है। आवश्यकता प्रेरित करने की है।

श्री वीरेन्द्र जी कोठारी, उज्जैन

विशेषाक के पक्ष मे नही हूँ, प्रवृत्ति अधिक क्रियात्मक हो, यह व्यसन मुक्ति का श्रेष्ठतम आन्दोलन है। इससे पिछडे समाज ने मुक्ति पायी, वे आचार्य श्री नानेश की प्रेरणा उपदेशो से स्वय को खुश महसूस करते है। धर्मपाल व्यसन



मुक्त हुए है, संस्कारों का निर्माण शनैः शनैः होता गया। धार्मिक पाठशालाओं माध्यम से जैन धर्म का अध्ययन परिवार में पहुचा। इससे गति जरूर मिली लेकिन नानेश की प्रेरणा से इस वर्ग की जो सार संभाल होनी चाहिए थी यह कहते तनिक भी संकोच नही है उस तरह से संभाल नही हो पायी। की भावना से तनिक जोडने का प्रयास किया और आचार्य श्री ने मंगल मे कई बार इस पर चिंता प्रकट की, धर्मपाल सम्मेलनो मे, अधिवेशनो या में हम उन्हें नजदीक लाते है स्नेह देते है, गेदालाल जी ने संपर्क बढाया, को बढाया। उपलब्धि हम जितनी मानते हैं वैसी नही है। प्रयास आदि जागरण अवश्य आया है लेकिन संपूर्ण समाज को इस प्रवृत्ति के विस्तारीकरण मे हम नहीं जोड पाये हैं।

भविष्य :– मेरा मत है कि गत 20 वर्ष का कार्य आत्मचिंतन का विषय है। यह कहते भी गर्व होता है कि जिन परिवारो ने व्यसन मुक्ति, सस्कारयुक्ति से नानेश की प्रेरणा ले कदम आगे बढाये वे परिवार स्वय को सुखद महसूस करते हैं। इसका सम्पूर्ण श्रेय एकमेव आचार्य श्री की प्रेरणा को ही मानते हैं।

श्री अनिल बरखेडावाला, क्षेत्रीय संयोजक, नागदा

थोडा समय हुआ है, प्रवृत्ति के बारे मे जानकारी थी, पिताजी जाते थे। व्यसनमुक्त होना वर्तमान परिस्थितियो में बडा काम है, यह मुख्य चीज है, धार्मिक संस्कारो का निर्माण। वर्तमान मे देश कुसंस्कारो के कारण भटक रहा है, आज देश में सस्कारो के जागरण की महती आवश्यकता है। अपने "ऐक्टिव" हो तो सफलता मिल सकती है, हम जुडे तो व्यसन मुक्त समाज की रचना कर सकते है। समाज का सामान्य व्यवहार है। उतना काम नही हुआ जितना कि 34 वर्षो मे होना चाहिए था, राष्ट्रीय से स्थानीय स्तर तक की ईकाईया इससे जुडे, दस-बीस की ईकाई बनाने मात्र से काम नही चलेगा। आचार्य श्री, युवाचार्य श्री पर भाव रखने वालो को इसे बढाना चाहिए। प्रवृत्ति का भविष्य अच्छा है, हम सक्रिय रहे तो अच्छा ही है, जाति बधन नही होना चाहिए। पूरे गांव को व्यसन मुक्त करने के प्रयास हो तो अच्छा हो, रचनात्मक कार्यो मे सहभागिता होनी चाहिए, धर्मपालो को भी आगे आना चाहिए।

श्री रामचन्द्र जी धर्मपाल, हरसोदन

गत 12 वर्षो से जुडे है, शिक्षा शुरू से नि.शुल्क दी, समता भवन बनवाया। सोनानी, दतोतर, कामया, ताजपुर, बाडकुमैन, हरतिया खोडी, निमनवासा,



ोंकरपुरा आदि गांवो मे पढाये। धार्मिक शिक्षा दी व्यसन मुक्त किया, करवाया। हले धर्मपाल बिगडे हुए थे, बलि चढाते थे, बद करवा दी, कुव्यसन छुडवा देए, अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। कईयो ने सै कै, हा. सै की है, अच्छे सस्कार ने हुए है। अन्य गावो मे शालाऍ खोली जाए ताकि और सुधार हो सके, बच्चे ढ सके। शिविर लगाए जावे ताकि उसमे आसपास के गाव वाले भी आए। ह-छह माह से शिविर लगने चाहिए। धार्मिक शिक्षा, कुव्यसनो का त्याग, ामायिक, नवकार मत्र, भजन करे। गाव मे सभी जैन साहब के नाम से जानते खुदबखुद मेरा यह परिचय हो गया। इस प्रवृत्ति से जुडने के बाद समाज के न्य तबको से सम्मान मिला सब गुरुदेव की कृपा से ही सभव हो सका। चल ाकित्सालय समय समय पर क्षेत्र मे आनी चाहिए। रतलाम के छात्रावास से हुत छात्र लाभान्वित हुए है।

धर्मपाल श्री हीरालाल जी मकवाना, मक्सी (उज्जैन)

सघ से इन्दौर चार्तुमास के समय जुडाव हुआ। आचार्य श्री मक्सी आए । पानी आ गया तो गुरुदेव यहॉ दो रोज विराजे। गेदालाल जी नाहर से म्पर्क कर चातुर्मास मे आने को कहा मक्सी से हम 25 लोग गए। स्कूल खुला, ठशाला अच्छी चली, समता भवन बना, मान सम्मान मिला, धर्म की जानकारी ई, शिक्षा के क्षेत्र मे प्रगति हुई, सामाजिक कुरूतियो मे कमी आई, कुव्यसनो छुटकारा मिलना इसकी विशेषता रही। गेंदालाल जी को लेकर करीब पचास वो मे सपर्क करवाया एव व्यसन मुक्त करवाया। कोस गाव, सरूलिया, डकी, सामग्री, हाथया खोडी आदि मे इस अभियान के तहत काम किया। ीरमल जी क्षेत्र मे लगातार काम कर रहे थे। उन के काम से सतोष आया। त्र मे श्री सम्पतमुनि जी म सा आदि सतगण भी आए थे।

क्षेत्र मे दो सौ लोगो (धर्मपालो) की रैली निकाली। सौ की जिम्मेवारी मुझ थी। सामगी गाव गया, कनार भी गया बच्चो को लेने, बस खराब हो गई। दूडकी गाव से पैदल गया नाले और नदी के बीच फस गया। सारी रात भर टका रहा।

धर्मपाल क्षेत्र की रैली निकली। जीप मेरे पास थी विरोधियो ने चोरी का ल्जाम लगाया। टेलीफोन के तारो की चोरी का आरोप लगाया, मक्सी मे नेदार ने रोक लिया। बताया मै तो काम मे लगा हू लेकिन नही माना। बाद किसी तरह मामला हल हो सका। चल चिकित्सालय से काफी लाभ हुआ।



डॉ. बोर्दिया जी, डॉ. प्रकाश जी थे। उस समय नसबंदी का कार्यक्रम चल रहा था, बुलाया तो लोग पत्थर मारने लगे गाली गलौच की। बाद मे समझाईश के बाद पूर्णत मिल गए। छात्रावास का धर्मपाल बालको को अच्छा लाभ हुआ है। जैन बंधुओ का व्यवहार अच्छा है, अब तो मन्दिरमार्गी भी बुलाते हैं, बराबर का व्यवहार करते हैं। धर्मपालो में प्रवृत्ति का फर्क पडा है, खानपान बोल-चाल विवेक मे फर्क आ गया है। आर्थिक दृष्टि से सम्बल मिला है। व्यसनों मे खर्च होने वाला पैसा बचा है। समृद्धि आई है।

धर्मपाल नाम समाज को जमा नही मुझे भी नही जंच रहा है। धर्मपालते है तभी धर्मपाल है, नाम व जात में फर्क महसूस न हो ऐसा कुछ होना चाहिए। महापुरुषो ने नाम दिया तो कुछ सोच कर ही दिया होगा। अब पहले से काफी ढिलाई आई है, उस समय जैसा चले तो दूसरे समाज के लोग भी जय जिनेन्द्र करने लगे। व्यसन छूट गए, धार्मिक क्रिया याद नहीं यह ठीक नही है। धर्मपाल चातुर्मास मे जाए तो कुछ सीख पाएगा। साधु-संतियॉ जी म. सा. के सम्पर्क मे जब तक नही आएगा तब तक प्रवृत्ति मे तेजी नही आएगी। धर्मपाल खेत पर कुए पर, घट्टी पंर महिलाएं नाना गुरु के ही गीत गाती है।

प्रवृत्ति मे प्रचारक की तरह व्यक्ति घूमे और बार-बार जानकारी दे तो उनमे धार्मिकता की भावना प्रबल होगी।

श्री मणिलाल घोटा, रतलाम

प्रवृत्ति से व्यक्ति का खुद का उद्धार होता है, कुव्यसनो से छुटकारा पाता है तो परिवार की सुविधाओ को जुटा पाता है।. धर्मपाल व्यर्थ के काम मे अज्ञानवश लगे हुए थे। प्रवृत्ति से जुडे लोगो ने समझाया तो उन्होने सीखा और जीवन मे उतारने का प्रयास किया जिससे जीवन स्तर सुधरा। युवा पीढ़ी इस क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य कर सकती है। वे क्षेत्र मे जाकर समर्पित भाव से काम करे तो प्रवृत्ति मे क्रातिकारी परिणाम सामने आ सकते है। पुराने धर्मपाल बधु शिक्षक का कार्य करे और बाकीं बधुओ का मार्गदर्शन दे तो सघ का कार्य आसान हो जाएगा।

चल चिकित्सालय का कार्य डॉ. बोर्दिया जी व प्रकाश जी ने बढिया चलाया। प्रवृत्ति वापस शुरू हो तो बहुत लोगो को लाभ हो पाएगा। व्यक्ति को लाभ होगा तो वह प्रवृत्ति की ओर आकर्षित होगा। प्रवृत्ति का यदि और विस्तार करेगे तो उसकी गुजाइश है। दुर्व्यसनो के इस युग मे इस प्रवृत्ति की प्रासंगिकता

बढ गई है।

श्री मदन जी कटारिया, रतलाम

करीब बीस वर्षो से प्रवृत्ति से जुडाव। काफी लोगो ने प्रवृत्ति को अच्छा मानते हुए जीवन को सुधारने का प्रयास किया। चर्चा की, समझाया तो समझने मे, स्वीकारने मे लोग सक्रिय दिखे। असंस्कारित जीवन था, आचार्यश्री नानेश ने सस्कारित करने के लिये जो मार्गदर्शन किया, इतने वर्षो के संस्कार सामान्य रूप से एवं जल्दी छूट जाना मुश्किल होता है। सघ के त्यागी विद्वानजनो, संतो से परिचय होता है तो आदर्श को देख कर वे प्रेरणा लेते है और उससे स्वय के जीवन को संवारने को कृत सकल्पित होते हैं।

व्यसन मुक्त जीवन की उन लोगो को राह दिखाई गई है जो घोर कुव्यसनो में लिप्त थे। जीवन जीने की कला, आपसी सामजस्य एव सौहार्द का वातावरण बना अगला चरण समृद्धि, शाति, आपसी वैमनस्य से दूरी, शिक्षा के प्रति रूझान हो। लोगो ने इस प्रवृत्ति को जीवन मे ढालने की कोशिश की, वे शिक्षणशालाओ के माध्यम से सस्कारित हुए। नवकार मत्र, सामायिक, अष्ठमी, चतुर्दशी का व्रत करते हैं। प्रतिक्रमण तक याद किया हुआ है। इस राह पर लाने के लिए नानेश का बहुत-बहुत उपकार मानते हैं।

शिक्षण के लिये सभी जगह विद्यालय रखे जाए तो काफी लाभ मिलेगा। सस्कारित पाठ्य सामग्री, व्यवहारिक रूपो मे पाठ्य सामग्री दी जाए पूर्व मे दी जाती थी वैसे कुछ पाठ्यक्रम निर्धारित हो जाए तो लाभप्रद हो सकती है। चिकित्सा सेवा का माध्यम अच्छा है लेकिन यह प्रवृति बोर्दिया जी के समर्पण के आधार पर ही हो पाती थी और उसी से अधिक लाभ मिला था। समर्पित कार्यकर्त्ता यदि इससे जुडे तो लाभ है, सरकारी अस्पतालो जैसी ढिलाई व्यवस्था से काम नही चलने वाला। यदि प्रवृत्ति को आगे बढाना है तो इनके समर्पित युवक हैं, जो जीवन बना सके, अच्छी पोस्टो, महकमो मे लगे हैं। उन धर्मपालो से सहयोग लेकर इसे बढाया जावे, अनुदान दिया जावे तो प्रवृत्ति कई गुना आगे बढ सकती है। आवश्यकता कुशल एव समर्पित सचालन करने वालो की हैं। छात्रावास का लाभ हुआ है। अपना धर्मपाल समाज का विकास करें। इन को वापस सभाल कर समाज को सुदृढ करने की भावना पैदा की जाए तो वे काफी काम कर सकते है।



34 वर्षो की उपलब्धि पूर्ण संतोषजनक नही कही जा सकती, गुरुदेव की भावना के अनुरूप काम नही हो पाया। समाज इन के लिये कुछ बुनियादी सुविधाएं जुटाए। इनमे जितनी घृणा थी वह समाप्त हुई है। दुव्यसनों, असाध्य पदार्थो के सेवन से घृणा थी, वे छोडी और स्वयं को संस्कारित किया। इससे आपस मे लोगो की इनके प्रति भावना अच्छी हुई है। जैन समाज इनसे स्वधर्मी तुल्य व्यवहार करता है।

व्यसनो से बुद्धि भ्रष्ट होती है। विकास रूक जाता है। बुद्धि भ्रष्ट नही हुई तो विकास की ओर प्रवृत्त हुए। सभ्य कहे जाने की मन में उत्कंठा ने इन्हे आगे बढने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। 80 क्षेत्रों में धर्मपाल गांवों के सरपंच चुने गए है जो उनके अच्छे जीवन के प्रति समाज के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। यह इनके जीवन के परिवर्तन की उपलब्धि है। जो जुडे है वे तो लगे है लेकिन यदि समाज इस प्रवृत्ति को एक दौर मे पूरा सपोर्ट दे दे तो ये इनके भविष्य के लिये अच्छा होगा। वर्तमान परिस्थिति मे चलने से प्रवृत्ति मे गिरावट आ सकती है।

जाउ अस्साविणी नावा न स पारस्सगामिणी।
जा निरस्साविणी नावा सा उ पारस्सगामिणी।।

—उत्तराध्ययन सूत्र 23/71

छिद्रों वाली नौका पार नही पहुंच सकती किन्तु जिस नौका में छिद्र नही है वह पार पहुंच सकती है। असंयम छिद्र है उन छिद्रो को रोकना संयम है अर्थात् संयमी आत्मा ही संसार सागर को पार कर सकती है।



क्रान्तिकारी सुधार

श्री चम्पालाल पिरोदिया,
वरिष्ठ सर्वोदयी कार्यकर्त्ता, रतलाम

मामाजी – नागदा के लकडी के व्यापारी श्री सीताराम जी पचास वर्षो से मेरे पास आ रहे थे। एक दिन आए व्यथित थे। लोगो के व्यवहार के कारण कहने लगे इससे तो अच्छा है धर्म परिवर्तन ही कर लें। मैने सीताराम जी की नागदा मे आचार्य श्री जी से बात करवाई, गुरुदेव गुराडिया गए। वही से इस प्रवृत्ति की शुरूआत हुई और आचार्य श्री ने इन्हें धर्मपाल नाम दिया।

धर्मपाल प्रवृत्ति मे बलाई गरीब थे, उपदेशो के बाद व्यसन छोडे तो प्यार, प्रेम बढा, आर्थिक स्थिति में सुधार आया।

मैं गत 30 वर्षो से धर्मपालो के बीच सेवा एव मार्गदर्शन का कार्य निरन्तर कर रहा हूँ सर्वोदयी विचारक था। गाधी का काम गुरुदेव ने किया, इसलिये इस प्रवृत्ति से जुडे। यात्राए की, पदयात्राएं की, व्यसनमुक्ति के हजारो फार्म भरवाकर डा बोर्दिया के साथ मिलकर कार्य किया, शिविर लगाए।

गुराडिया गाव मे पहला पर्युषण पर्व मनाया जिसमे ठाकुर परिवार एव चर्मकारो से व्यसन मुक्ति के सकल्प पत्र भरवाए। मागलोद मे 160 लोगो को शराब-मास सहित कुव्यसनो से छुटकारा दिलवाया।

धमनार – तिलावद गोविन्द मे जुलूस निकाल एव विचारो को व्यक्त कर अभिमत निर्माण किया और लोगो को कुव्यसनो के त्याग हेतु प्रेरित किया। भडका गाव मे गणपतलाल जी मास्टर आए। पर्युषण मनाने को 8 दिन कहा। मच्छीमार लोगो एव दारूबाजो से एक साथ सकल्प करवा उन्हे व्यसन मुक्त करवाया। उन्हे दिगम्बर मन्दिर मे प्रवेश करवा कर सह अस्तित्व एव सहिष्णुता का परिचय कराया। भरम्या गाव मे चालीस लोगो ने सकल्प लिया कि बली वध नही करेगे। 125 एव 127 दिनो की पदयात्राए पूरे धर्मपाल क्षेत्रो मे की और 25 हजार दोस्त बनाए उन्हे कुव्यसनो से मुक्ति हेतु प्रेरित किया। 25 सौ लोगो को व्यसनमुक्त बनाया। इन पदयात्राओ मे 550 गावो मे गए। गाव-गाव मे धार्मिक पाठशालाए खोली। थोडे दिन चलती, फिर वद हो जाती। स्कूल,



34 वर्षो की उपलब्धि पूर्ण संतोषजनक नही कही जा सकती, गुरुदेव । भावना के अनुरूप काम नही हो पाया। समाज इन के लिये कुछ बुनिया सुविधाएं जुटाए। इनमे जितनी घृणा थी वह समाप्त हुई है। दुव्यसनो, असाध्य पदार्थो के सेवन से घृणा थी, वे छोडी और स्वयं को संस्कारित किया। इससे आपस मे लोगो की इनके प्रति भावना अच्छी हुई है। जैन समाज इनसे स्वधर्मी तुल्य व्यवहार करता है।

व्यसनो से बुद्धि भ्रष्ट होती है। विकास रूक जाता है। बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई तो विकास की ओर प्रवृत्त हुए। सभ्य कहे जाने की मन मे उत्कंठा ने इन्हे आगे बढने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 80 क्षेत्रो मे धर्मपाल गांवों के सरपंच चुने गए है जो उनके अच्छे जीवन के प्रति समाज के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। यह इनके जीवन के परिवर्तन की उपलब्धि है। जो जुडे है वे तो लगे है लेकिन यदि समाज इस प्रवृत्ति को एक दौर मे पूरा सपोर्ट दे दे तो ये इनके भविष्य के लिये अच्छा होगा। वर्तमान परिस्थिति में चलने से प्रवृत्ति मे गिरावट आ सकती है।

जाउ अस्साविणी नावा न स पारस्सगामिणी।
जा निरस्साविणी नावा सा उ पारस्सगामिणी।।

—उत्तराध्ययन सूत्र 23/71

छिद्रो वाली नौका पार नही पहुंच सकती किन्तु जिस नौका मे छिद्र नही है वह पार पहुच सकती है। असयम छिद्र है उन छिद्रो को रोकना संयम है अर्थात् सयमी आत्मा ही संसार सागर को पार कर सकती है।



क्रान्तिकारी सुधार

श्री चम्पालाल पिरोदिया,
वरिष्ठ सर्वोदयी कार्यकर्त्ता, रतलाम

मामाजी – नागदा के लकडी के व्यापारी श्री सीताराम जी पचास वर्षो से मेरे पास आ रहे थे। एक दिन आए व्यथित थे। लोगो के व्यवहार के कारण कहने लगे इससे तो अच्छा है धर्म परिवर्तन ही कर ले। मैने सीताराम जी की नागदा मे आचार्य श्री जी से बात करवाई, गुरुदेव गुराडिया गए। वही से इस प्रवृत्ति की शुरूआत हुई और आचार्य श्री ने इन्हे धर्मपाल नाम दिया।

धर्मपाल प्रवृत्ति मे बलाई गरीब थे, उपदेशो के बाद व्यसन छोडे तो प्यार, प्रेम बढा, आर्थिक स्थिति मे सुधार आया।

मैं गत 30 वर्षो से धर्मपालो के बीच सेवा एवं मार्गदर्शन का कार्य निरन्तर कर रहा हूँ सर्वोदयी विचारक था। गाधी का काम गुरुदेव ने किया, इसलिये इस प्रवृत्ति से जुडे। यात्राए की, पदयात्राएं की, व्यसनमुक्ति के हजारो फार्म भरवाकर डा बोर्दिया के साथ मिलकर कार्य किया, शिविर लगाए।

गुराडिया गाव मे पहला पर्युषण पर्व मनाया जिसमे ठाकुर परिवार एव चर्मकारो से व्यसन मुक्ति के सकल्प पत्र भरवाए। मागलोद मे 160 लोगो को शराब-मास सहित कुव्यसनो से छुटकारा दिलवाया।

धमनार – तिलावद गोविन्द मे जुलूस निकाल एव विचारो को व्यक्त कर अभिमत निर्माण किया और लोगो को कुव्यसनो के त्याग हेतु प्रेरित किया। भडका गाव मे गणपतलाल जी मास्टर आए। पर्युषण मनाने को 8 दिन कहा। मच्छीमार लोगो एव दारूबाजो से एक साथ सकल्प करवा उन्हे व्यसन मुक्त करवाया। उन्हे दिगम्बर मन्दिर मे प्रवेश करवा कर सह अस्तित्व एव सहिष्णुता का परिचय कराया। भरम्या गाव मे चालीस लोगो ने सकल्प लिया कि बली वध नही करेगे। 125 एव 127 दिनो की पदयात्राए पूरे धर्मपाल क्षेत्रो मे की और 25 हजार दोस्त बनाए उन्हे कुव्यसनो से मुक्ति हेतु प्रेरित किया। 25 सौ लोगो को व्यसनमुक्त बनाया। इन पदयात्राओ मे 550 गावो मे गए। गाव-गाव मे धार्मिक पाठशालाए खोली। थोडे दिन चलती, फिर बद हो जाती। स्कूल,



छात्रावास, समता भवन निर्माण फिर वापस शुरू हुए हैं। अभी पाठशालाओ की व्यवस्था ठीक है चौपडा जी ध्यान रखते हैं।

गांव के लोगों को काफी लाभ मिला है। अगर चिकित्सालय चलाया जावे तो उसका ग्रामीणों को अच्छा लाभ मिल सकता है। चलता-फिरता अस्पताल फिर चालू करे।

धर्मपाल इंजीनियर, डाक्टर, ऑफिसर आदि बन गए, सरकारी नौकरियो में पहुंचे हैं। शिक्षा से लाभान्वित हुए है। धर्मपाल समाज के उत्थान मे छात्रावास का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

व्यवहार साधारण है। बहुंत अच्छा होना चाहिए। समाज के लोगो द्वारा गुरुदेव के उपदेशो का पालन किया जाना जरूरी है।

लोग समानता का व्यवहार कम देते है। गुरुदेव का हुकुम है इसलिए चला रहे है। इस शासनादेश मे हार्दिकता का प्रयास धीरे-धीरे बढता है।

हॉ बहुत क्रान्तिकारी सुधार हुआ है, जो आगे बढ पाए हैं वे स्वय को बराबर का महसूस करते है।

मखला गाव के भैरूलालजी मन्दाजी ने व्यसनमुक्ति का सकल्प लिया। पहले विकी खरीदी, अब तीन लाख का ट्रैक्टर खरीद लाया। कहता है धर्मपाल बनने के बाद तरक्की हुई, व्यसनो से भी छुटकारा मिल गया। बहुत अच्छा पडा, गुरुदेव ने 'जाजम, पगत दे दी। बहुत बडा कार्य किया है।

आर्थिक उन्नति हुई, सरपच बने, कमेटियो के मैम्बर बने, विधायक बने, छुआछूत मे कमी आई है, सरकार भी मदद करती है। अब वे उठ गए हैं अब इनका भविष्य उज्ज्वल है यद्यपि कुछ समय प्रवृति उतार-चढाव मे रहेगी। प्रवृत्ति मे यदि सक्रिय लोग जाते-जाते तो यह 'प्रवृत्ति बढेगी लेकिन अभी जाना-आना कम ही है।

लोग सैकडो व्यसन मुक्त हुए है। दूसरे दौर मे इनमे सस्कारो के निर्माण का कार्य त्वरित गति से चल रहा है। कुव्यसनो के छूट जाने से आर्थिक स्थिति भी सुदृढ हुई है और स्वावलम्बी जीवन की और इनका झुकाव हुआ है। लोग सक्रिय रह कर आए-जाए तो धर्मपाल प्रवृत्ति का वास्तविक स्वरूप निखर कर उभर सकता है, जैसा की आचार्य श्री का आह्वान था।



स्थायी कार्य की जरूरत

श्री कचरमल जी जैन, नगरी

नगरी – नगरी के पत्रकार जैन का मानना था कि गुरुदेव की कृपा से धर्मपाल प्रवृत्ति के माध्यम से उल्लेखनीय कार्य हुआ है तथापि इस कार्य मे गत कुछ समय से शिथिलता आ गई है जिसमे तेजी आनी आवश्यक है। आपके सुझाव थे कि धर्मपाल घरो मे नवकार मन्त्र के कलैण्डर लगे। भगवान महावीर की तस्वीर हो। धर्मपाल क्षेत्रो मे पर्यवेक्षक हर माह सम्पर्क कर चर्चा करें। सत सतिया जी म सा का विहार प्रवचन हो ताकि प्रवृत्ति में दीर्घकालीन एव स्थाई कार्य हो सके।

जरा जावण पीडेई,
वाही जावण वड्ढई।
जाविदिया णहायति,
ताव धम्म समायरे।।

दशवैकालिक सूत्र 8/36

जब तलक आये बुढापा, देह का कचन गलाये,
व्याधियो की फौज चढकर, शक्ति सारी लील जाये।
जब तलक है इन्द्रियो मे, शक्ति विषयो के ग्रहण की,
जब तलक ही जमा करले, सम्पदा धर्माचरण की।।



धर्मपाल क्षेत्र का प्रकाश दीप:
श्री गणेश जैन छात्रावास, दिलीपनगर, रतलाम

श्री गोविन्दनारायण श्रीमाली

मै सहसा छात्रावास पहुचा, जो देखा–समझा वह यथावत प्रस्तुत है

छात्र विवरण		छात्रावास दिनचर्या	
		प्रात	साय
नवी	06	4 45 शय्या त्याग	4.30 से 5 30 खेलकूद
दसवी	05	5 00 से 5 30 प्रार्थना	5 30 से 7 30 श्रम,भोजन भ्रमण
ग्यारहवी	03	5 30 से 9 00 अध्ययन	7 30 से 9 00 अध्ययन
बारहवी	05	7 से 8 शौच, स्नान,चाय	9 से 10 प्रार्थना, विचार, अनुभूति
प्रथम वर्ष	01	8 से 9 सामायिक	10 से 11 स्वाध्याय
द्वितीय वर्ष	06	9 से 10 श्रम व भोजन	11 से 4.45 शयन
बी एससी	01	10 से 11.30 अध्ययन	
कुल छात्र	27	11 30 से 4.30 विद्यालय प्रस्थान	

गृहपति डॉ श्री प्रकाशजी जोशी, रिटायर्ड, प्र अ व होम्योपैथी डॉक्टर

धर्मपाल छात्रो द्वारा निर्मित व्यवस्था और व्यवस्था–प्रमुख

छात्रावास प्रमुख	– श्री धूलचन्द्र मालवीय
उप प्रमुख एव अनुशासन	–श्री पूनमचन्द राठौर
भोजन व्यवस्था	–श्री पूनमचन्द, श्री गोविन्द
स्वच्छता	–श्री बालाराम, श्री राधेश्याम
सास्कृतिक	–श्री शोभाराम, श्री राधेश्याम परमार
क्रीडा	–श्री लकेश चौहान, अमरलाल राठौर
स्वास्थ्य	–श्री राधेश्याम सोलकी, श्री दिनेश सोलकी



राधेश्याम परमार, शिवपुर

बी.ए. प्रथम वर्ष मे पढते हैं। भाई सी. आर पी. मे है। आसाम में नियुक्त हैं। स्वयं पढकर टीचर बनना चाहते हैं। गांव मे कुल 50 धर्मपाल परिवार है। 18 पूर्णतः व्यसन मुक्त एवं धार्मिक आचरण करने वाले है। चित्रो से व्यसनमुक्ति के बारे मे समझाते है, व्यसन-मनुष्य के लिये ठीक नही है। छात्रावास अच्छा है, सभी "रेसपॉस" देते है। आते-जाते है। व्यवहार अच्छा है। छात्रावास जारी रहेगा तो आगे आने वाले अपना जीवन बना सकेंगे। इसलिये यह जरूरी है कि छात्रावास लगातार चलता रहे।

श्री धूलचद जी छात्रावास के चौकीदार है।

(मुझे छात्रावास के आकस्मिक प्रवास मे एक झलक देखने का सुअवसर मिला। छात्रो मे अनुशासन, विनय नैतिकता, धार्मिकता और लौकिक शिक्षा के सस्कारो का प्रभाव देख कर हर्ष हुआ। यह छात्रावास धर्मपाल क्षेत्र का प्रकाश दीप है।

— ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर)

आचरण

एक बार भगवान महावीर को एक-चाण्डाल ने छू लिया तो उपस्थित जनसमूह चाण्डाल को गालियां देने लगा। इस पर महावीर ने कहा, "सज्जनों! जन्म से न कोई व्यक्ति ब्राह्मण है और न कोई चाण्डाल। मैं तो उसी व्यक्ति को चाण्डाल समझता हूं जो बुरे कर्म करता है भले ही वह ब्राह्मण जाति का क्यों न हो। जो अच्छा कार्य करता है, वही सच्चा ब्राह्मण है। चाण्डाल या ब्राह्मण सभी में एक आत्मा है। फिर घृणा कैसी ?" और भगवान ने उस चाण्डाल को गले लगा लिया।



सयोजक —श्री पी सी जोशी गृहपति

कुछ छात्रो से बरसात की मधुर ध्वनि के बीच प्राकृतिक परिवेश मे ठकर बात की जो निम्न प्रकार है —

शोभाराम राठौड–नारायण खेडी गाव

तीन साल से छात्रावास मे रह रहे ह, सामायिक एव प्रतिक्रमण आता है। ोए करके शिक्षक बनने की आकाक्षा है। पिता वागू जी राठोड धर्मपाल प्रवृत्ति े जुडे हैं उन्ही की वजह से यहा छात्रावास मे पढने आए हैं। यहा के नुशासित जीवन से बुरी आदते नही पडती, हिसा नही होती, सामायिक, तिक्रमण, नवकार मत्र जाप से धर्म का लाभ होता है। कुव्यसनो के त्याग एव र्म से जुडाव के बाद लोग अच्छी निगाह से देखते हे, बात करते हे। हम ात्रावास मे अनुशासन मे रहेगे तो ओरो को भी इसका लाभ मिल सकेगा।

धूलचद मालवीय, बनावर

छात्रावास मे गत वर्ष से है। बी ए कला मे द्वितीय वर्ष मे 6 छात्र रह रहे हैं। पिताजी शकरलाल जी मालवीय धर्मपाल प्रवृत्ति से जुडे है। 5–7 साल पहले मामाजी गाव मे आए थे। सभा की, सबको गीतो के माध्यम से कुव्यसनो की, हिसा की बुराईया बताई। मैने सामायिक नवकार मत्र याद कर लिया। आगे पढने के लिये छात्रावास मे आ गया। कुव्यसनो को न अपनाना, सत्य पर चलना, बुरी नजर से नही देखना, स्वच्छता पर ध्यान देना, समयबद्ध कार्य करना, इन सबके बारे मे मामाजी की प्रेरणा मिली। भारतीय फौज मे जाने का मानस है, नही तो एल एल बी करना चाहेगे। यहा घर का जैसा माहौल है। समय का पूरा सदुपयोग होता है। छात्रावास जारी रहना चाहिए। मै धार्मिक परीक्षा मे प्रथम आया हूँ। धर्मपाल बनने के बाद लोगो का व्यवहार बदला है। हम अच्छे है तो दूसरो का व्यवहार भी अच्छा रहता है। बराबरी का व्यवहार रखते हैं। जैन समाज के लोगो का व्यवहार भी अच्छा रहता है। जो लोग व्यसन मुक्ति का सकल्प लेते है, वे अडिग रहते है, पहले से बहुत अधिक लोग अब बच्चो को पढाने पर ध्यान देते है। अच्छे सस्कार बनाते है, झूठ नही बोलते, बुरा कार्य नही करते, जीवन मे सस्कारो का निर्माण करते है।

अमरलाल राठौड, पीर हिगोरिया

बी एस सी प्रथम वर्ष मे है, डाक्टर बनना चाहते है, जन स्वास्थ्य रक्षक योजना मे सटीर्फिकेट लिया है। पिताजी रतनलाल जी राठौड है। गाव मे तीस परिवार है। सभी व्यसन मुक्त है। समीरमलजी के कार्य, सहयोग, समर्पण एव धर्मपालो के लिये किए कार्यो की बहुत याद आती है।






खण्ड 5

धर्म जागरण-संस्कार निर्माण एवं व्यसन मुक्ति पदयात्रा

- डॉ. आदर्श सक्सेना
- गोविन्द नारायण श्रीमाली

राधेश्याम परमार, शिवपुर

बी.ए. प्रथम वर्ष मे पढते हैं। भाई सी. आर. पी. में है। आसाम मे नियुक्त हैं। स्वय पढकर टीचर बनना चाहते हैं। गांव में कुल 50 धर्मपाल परिवार है। 18 पूर्णतः व्यसन मुक्त एवं धार्मिक आचरण करने वाले है। चित्रों से व्यसनमुक्ति के बारे में समझाते है, व्यसन मनुष्य के लिये ठीक नही है। छात्रावास अच्छा है, सभी "रेसपॉस" देते है। आते-जाते है। व्यवहार अच्छा है। छात्रावास जारी रहेगा तो आगे आने वाले अपना जीवन बना सकेंगे। इसलिये यह जरूरी है कि छात्रावास लगातार चलता रहे।

श्री धूलचद जी छात्रावास के चौकीदार हैं।

(मुझे छात्रावास के आकस्मिक प्रवास मे एक झलक देखने का सुअवसर मिला। छात्रों में अनुशासन, विनय नैतिकता, धार्मिकता और लौकिक शिक्षा के संस्कारो का प्रभाव देख कर हर्ष हुआ। यह छात्रावास धर्मपाल क्षेत्र का प्रकाश दीप है।

— ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर)

आचरण

एक बार भगवान महावीर को एक चाण्डाल ने छू लिया तो उपस्थित जनसमूह चाण्डाल को गालियां देने लगा। इस पर महावीर ने कहा, "सज्जनों! जन्म से न कोई व्यक्ति ब्राह्मण है और न कोई चाण्डाल। मैं तो उसी व्यक्ति को चाण्डाल समझता हूं जो बुरे कर्म करता है भले ही वह ब्राह्मण जाति का क्यों न हो। जो अच्छा कार्य करता है, वही सच्चा ब्राह्मण है। चाण्डाल या ब्राह्मण सभी में एक आत्मा है। फिर घृणा कैसी ?" और भगवान ने उस चाण्डाल को गले लगा लिया।



खण्ड 5

धर्म जागरण-संस्कार निर्माण एवं व्यसन मुक्ति पदयात्रा

- डॉ. आदर्श सक्सेना
- गोविन्द नारायण श्रीमाली

पदयात्राओं की सामाजिक भूमिका

इन्दरचंद बैद

भारतीय जीवनचर्या मे साधु-सतो तथा उनके शिष्यो एव अनुयायियो द्वारा पदयात्रा करने की सुदीर्घ एव लोकप्रिय परम्परा रही है। तीर्थयात्राओ हेतु तो वाहनो का प्रयोग सर्वथा त्याज्य माना जाता था। आज भी अपनी श्रद्धा एव क्षमता के अनुरूप भक्तजन पैदल ही नही दण्डवत करते हुए भी पवित्र स्थानो तक पहुचते हैं। निश्चय ही इस प्रकार की यात्राऐं किसी कामना अथवा सकल्प की पूर्ति हेतु अथवा उनके पूर्ण होने पर की जाती रही है इसलिये वे मनोबल को बढाने वाली तथा सामाजिक सहयोग एव सद्भाव आकर्षित करने वाली होती हैं। यद्यपि सरकार की पर्यटन को प्रोत्साहन देने की नीति ने तथा बढते टूरिस्ट व्यवसाय ने तीर्थयात्राओ से जुडी मर्यादाए खण्डित की है एव उनसे सबधित पवित्रता की भावना भग की है तथा राजनीतिक, सामाजिक आदि उद्देश्यो से आयोजित की जाने वाली रैलियो, मोर्चो एव पैदल यात्राओ ने उनका रूप विकृत किया है फिर भी धार्मिक उद्देश्यो की पूर्ति की दृष्टि से उनकी महिमा कम नही हुई है। श्रमण परम्परा मे तो पदयात्रा को प्रमुख महत्त्व प्राप्त है। इस दृष्टि से जैन धर्म के साधु वर्ग की जीवन पद्धति इस रूप मे विशिष्ट है कि उसमे यात्रा हेतु किसी भी प्रकार के वाहन के उपयोग का विधान ही नही है और यात्रा भले ही वह सैकडो-हजारो मीलो की हो, पैदल ही पूर्ण की जाती है।

पदयात्राएँ चाहे किसी भी उद्देश्य से की जाये उनके कुछ निश्चित लाभ तो है ही। प्रथम, वे व्यवस्थित एव अनुशासित जीवन शैली के विकास को प्रोत्साहित करती है, द्वितीय वे स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करने मे सहायक होती है, तृतीय वे व्यापक मानव समाज तथा वैविध्यपूर्ण प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ परिचय के अवसर प्रदान कर अनुभव एवं ज्ञान के कोष मे वृद्धि करती है, चतुर्थ, वे त्याग और तप के माध्यम से जन-जागरण के अपने अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समाज मे चेतना उत्पन्न कर व्यापक जन-सहयोग की स्थितियाँ निर्मित करती है और अतिम, वे व्यक्तियो की अपनी स्वय की क्षमताओ, शक्तियो एव गुणो के प्रदर्शन द्वारा उनमे मनोबल विकसित कर अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित बनने मे उनकी सहायता करती है।



धर्म-जागरण पद-यात्राएँ : पूर्व इतिहास

डॉ. आदर्श सक्सेना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ द्वारा विगत 22 वर्षो मे धर्मपा क्षेत्र मे आयोजित की जाने वाली धर्मजागरण एवं समाज जागरण पदयात्रा वास्तव मे मानव-मानव को गले लगाने का ऐसा सामाजिक अभियान रही जिनकी ऐतिहासिक भूमिका को नकारा नही जा सकता। इनके माध्यम से उ धार्मिक-अध्यात्मिक चिन्तन को क्रिया रूप मे परिणित करने का प्रयास किया गर है जिसके सबंध मे उत्तराध्ययन सूत्र मे कहा गया है – "कम्मुणा बम्मणो होः कम्मुणा होई खत्तियो। बइसो कम्मुणा होई, सुद्दो हवई कम्मुणा।" इन पदयात्राउ की सामाजिक-सास्कृतिक भूमिका के सही आकलन के लिये विविध सदर्भो मे क गई उन सभी पदयात्राओ पर विहगम दृष्टिपात करना अपेक्षित है जिनके क्रम 1997 की पदयात्रा आयोजित की गई।

इस श्रृंखला की प्रथम पदयात्रा धर्मजागरण पद यात्रा थी जो 2 अप्रैल 1975 से 8 अप्रेल 1975 तक मालव प्रदेश के खाचरौद कस्बे मे आयोजित की गई थी। यात्रा मे संघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा, सघ प्राण श्री सरदारमल जी काकरिया, मत्री श्री भवरलाल जी कोठारी, पद्मश्री डॉ. नदलाल जी बोरदिया, धर्मपाल माता श्रीमती यशोदा देवी बोहरा, श्रीमती धनकुंवर बाई कांकरिया एव श्रीमती विजयादेवी सुराणा सहित 88 पदयात्रियो ने भाग लिया। प्रभात फेरी व नगर परिक्रमा के उपरान्त पदयात्रा प्रारभ हुई जो चौकी ग्राम, बुडावन, उमरना, नागदा, मक्षी, गाडोली, बरण्डवा, झोकर, सिरोलिया, बेरछा आदि स्थानो से होती हुई उज्जैन पहुची जहा उसका समापन हुआ। समापन समारोह मे मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी भी सम्मिलित हुए। शिक्षाप्रसार, चरित्र निर्माण, पिछडे वर्गो का विकास, पशुवलि का विरोध तथा शाति और अहिसा की महती आवश्यकता को इस पदयात्रा के द्वारा रेखाकित किया गया।

द्वितीय धर्मजागरण पद यात्रा 22 मार्च से 28 मार्च 1976 तक मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक नगर जावरा से रत्नपुरी रतलाम तक आयोजित की गई। प्रमुख



पदयात्री थे श्री गुमानमल जी चोरडिया, श्री [illegible] जी [illegible], श्री [illegible] जी नाहटा, श्री मदनलाल जी कोठारी, श्री मोतीलाल जी मूथा, श्री [illegible]लाल जी पिरोदिया, श्री चम्पालाल जी [illegible], श्री नरेन्द्र भानावत, श्री मानवमुनि, श्रीकृष्ण राज मेहता, श्रीमती [illegible] कवर मेहता, श्रीमती गुलाब [illegible] मूथा एव श्रीमती रतन डेडिया दिया। जावरा के स्थानक मे विराजित चारित्र आत्माओ के दर्शन कर तथा मागलिक श्रवण कर, नगर के प्रमुख मार्गो से होता हुआ पदयात्री दल अपने गतव्य की ओर बढा। प्रथम पडाव ग्राम [illegible] मे कर यात्री दल उकेडिया, करवासा, सरसी, रघुनाथगढ, गुणावद, सेमलिया, नामली, पचेड, पलसोडा एव डेलपुर होता हुआ रतलाम पहुचा जहा यात्रा का समापन हुआ। धर्मपालो से निकट सम्पर्क, धर्मचर्चा, स्वाध्याय आदि का लाभ तथा मासाहार एव नशाखोरी जैसे कुव्यसनो के त्याग के सकल्प पदयात्रा की विशेष उपलब्धि रहे।

तृतीय जीवन साधना, सस्कार निर्माण एव धर्म जागरण पदयात्रा 31 मार्च से 6 अप्रैल 1978 तक मध्यप्रदेश के दलोदा ग्राम से जावरा नगर तक आयोजित की गई। यात्रा प्रमुख थे श्री गुमानमल जी चोरडिया तथा श्रीमती फूलकुवर कांकरिया। मदसौर के विधायक बसतीलाल जी शर्मा की प्रेरणादायी शुभकामनाओ के साथ पदयात्रा प्रारभ हुई तथा धुधडका, धमनार, आकिया, नगरी, पेटलावद, धतरावदा, माडवी, नेतावली, रिंगनोद, बनवाडा आदि स्थानो से होती हुई सभा जावरा नगरी पहुची। श्री पी सी चौपडा के सभापतित्व एव श्री जवाहरलाल जी मूणत के प्रमुख आतिथ्य मे समापन समारोह सम्पन्न हुआ जिसमे धर्मपाल प्रवृत्ति को एक नयी क्रान्ति बता कर उसकी प्रमुख दिशाओ एव उपलब्धियो पर सार्थक चर्चा की गई।

चतुर्थ जीवन साधना, सस्कार निर्माण एव धर्म जागरण पदयात्रा 20 मार्च 1979 मे मध्यप्रदेश के बेरछामडी कस्बे से मक्सी तक आयोजित की गई थी। प्रथम पडाव तिलावद गोविन्द ग्राम था। इसके उपरान्त पदयात्रीगण रूलकी, चौसला, साजोद, सामगी, रोजवास, गोलवा, बडवा और गडोली ग्रामो के धर्मपालो से सपर्क करते हुए मक्सी पहुचे। रास्ते के प्रत्येक पडाव पर स्वाध्याय, स्वास्थ्यसेवा और शैक्षिक–सास्कृतिक कार्यक्रमो की धूम मची रही। श्री गणपतराज जी बोहरा, श्री गुमानमल जी चोरडिया, मानवमुनि जी, चम्पालाल जी पिरोदिया, श्रीमती फूलकुवर काकरिया, डॉ प्रेमसुमन जैन, डॉ नदलाल बोरदिया जैसे पदयात्रियो ने अपने भाषणो, ज्ञानचर्चा सबोधनो एव विविध प्रकार के सस्कार निर्माण कार्यक्रमो से सामाजिक चेतना एव व्यक्ति चेतना जाग्रत करने के प्रयास किये। यात्रा के अत मे यह अनुभव किया गया कि ऐसी यात्राऍ धर्म के वास्तविक



स्वरूप को हृदयंगम करने-कराने का अच्छा साधन होती है।

पंचम धर्म जागरण एवं संस्कार निर्माण पदयात्रा 9 मार्च से 13 मार्च 1980 तक नागदा से गुराडिया ग्राम तक आयोजित की गई। मोहिना में प्रथम रात्रि पडाव कर पदयात्रा बोरखेडा पहुंची जहां महिला सम्मेलन व ग्राम सभा का आयोजन किया गया। बोरखेडा से नारायण खेडी और हिरडी होता हुआ पैदल यात्रियो का दल भटेरा ग्राम पहुंचा जहां धर्मपाल सम्मेलन आयोजित किया गया। श्री गणपतराज जी बोहरा, श्री भंवरलाल जी कोठारी, श्री कुन्दनलाल जी जैन, मानवमुनि जी, संघमत्री श्री कांकरिया जी, डॉ. नंदलाल जी बोर्दिया, श्री समीरमल जी कांठेड, पडित रत्न श्री सम्पतमुनि जी व श्रीमती यशोदा देवी बोहरा ने अपने उद्‌बोधनो से निद्रामग्न लोगो को जगाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा धर्मपाल प्रवृत्ति की अब तक प्रगति का आकलन प्रस्तुत किया। सम्मेलन के उपरान्त पदयात्री रठडा ग्राम पहुंचे जहा रात्रि पडाव था। रठडा से घुमायडा ग्राम होते हुए पदयात्री 'धर्मपाल गांव', गुराडिया गांव में पहुंचे जहां से धर्मपाल प्रवृत्ति का शुभारम हुआ था। इस स्थान पर ग्राम सभा उपरान्त सस्मरण सभा हुई जिसमें पदयात्रियो ने अपने हृदय की भावनाओं को मार्मिक अभिव्यक्ति दी। समापन समारोह नागदा नगरी में ही सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध कवि एव साहित्यकार डॉ. शिवमंगल सिह सुमन ने की।

सप्तम जीवन साधना, संस्कार-निर्माण एवं धर्मजागरण पदयात्रा पुन धर्मपाल क्षेत्र मे 16 मार्च 1982 से 27 मार्च 1982 तक आयोजित की गई। इसके लिये बेरछा से शाजापुर के आसपास के 50 किलोमीटर के ग्रामीण क्षेत्र का चयन किया गया था। श्री गुमानमल जी चोरडिया, श्री जुगराज जी सेठिया, श्रीगणपतराज जी बोहरा, श्री पी. सी. चौपडा, श्री भवरलाल जी कोठारी, श्री समीरमल जी कांठेड, समाज सेवी श्रीमानव मुनि जी, श्रीमती यशोदा माताजी एव श्रीमती शंकुतलोखी कांठेड प्रमुख पदयात्रियो मे सम्मिलित थी। 11–11 नवकार मत्रों के जाप तथा अरिहंत देव के ध्यान के उपरान्त श्री मानवमुनि जी के पथ संचालन में यात्रा आरंभ हुई तथा रणथमवर ग्राम से होती हुई रात्रि विश्राम हेत घुसी ग्राम पहुंची। घुंसी मे ही यह हृदयविदारक समाचार मिलने पर कि श्रीगणपतराज जी बोहरा के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारसराज बोहरा का कार दुर्घटना मे निघन हो गया था, पदयात्रा भारी मन से स्थगित कर दी गई। पदयात्रा के लक्ष्यो की पूर्ति हेतु श्री चम्पालाल जी पिरोदिया एवं श्रीमती धूरीवहिन पिरोदिया ने लडावद, पचोला, खेडा, आदि पडाव स्थलो की पदयात्रा की तथा धर्मपाल प्रवृत्ति के महत्व से सभी को अवगत कराया।



पदयात्राओ के इस सस्कार निर्माण अभियान मे छठी ओर आठवी पदयात्राएं मेवाड के स्वधर्मी क्षेत्र मे आयोजित की गई जिनमे एक नवीन स्फूर्ति ओर ताजगी का पूरे इलाके मे सचरण हुआ। धर्म-ध्यान, साधना, सामायिक ओर समीक्षण ध्यानपूर्वक आत्म साधना का वातावरण बना। सम्पूर्ण समाज ने एक नवीन ओज की अनुभूति की।

इसी प्रकार नवी पदयात्रा की रचना आयोजन क्रम, पडावो की दृष्टि तथा समय सीमा की दृष्टि से पदयात्रा की ही भाति की गई थी किन्तु इसमे वाहनो का प्रयोग किया गया। पूरे क्षेत्र मे इससे सम्पर्क ओर सामयिक सहयोग तथा मूल्याकन कार्यो मे गति आई, इसी प्रकार मार्च 95 मे धर्मपाल युवको की रैली ने पदयात्रा की अपेक्षाओ को अधिकाश मे पूर्ण किया।

दसवी पदयात्रा पुन दिनाक 16 3 97 से 20 3 97 तक धर्मपाल क्षेत्र मे आयोजित की गई। वस्तुत मार्च 82 के बाद अपने सही अर्थो मे यह पुन आयोजित धर्मजागरण सस्कार निर्माण एव व्यसन मुक्ति पदयात्रा थी और लगभग 15 वर्षो के बाद आयोजित होने से इस पदयात्रा मे पुन विशेष उत्साह अनुभव किया गया। इस पदयात्रा का विवरण और चित्र इसी अक मे सलग्न है।

धर्मपाल क्षेत्रो मे एक प्रवास 25 दिसम्बर 1994 को जावरा के काठेड निवास से प्रारभ हुआ। प्रवासी दल मे समता युवा सघ अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरदिया, श्री पारसजी नागौरी, श्री अरूण भानावत, श्री मुकेश पगारिया, श्री भूपेन्द्र जी आदि समाज सेवी सम्मिलित हुए। चौकी ग्राम के धर्मपालो से सपर्क कर यह यात्री दल नागदा जक्शन पहुचा जहा से उसने जीपो और कारो द्वारा गुराडिया ग्राम की ओर प्रस्थान किया। यद्यपि पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जेल सिह के निधन के समाचार के कारण कार्यक्रम बाधित हुआ था तथापि प्रवृत्ति परिस्कार एव सस्कार सुधार के कार्यक्रम आयोजित किये गये। गुराडिया से रठडा ग्राम होता हुआ प्रवासी दल यात्रा के अतिम पडाव भटेरा ग्राम पहुचा। सभी स्थानो पर धर्मपाल बधुओ एव समाज के अन्य वर्ग के लोगो ने प्रवासियो का हार्दिक स्वागत किया और सस्कार सुधार हेतु नवीन प्रेरणा प्राप्त की। भटेरा से नागदा और खाचरोद होता हुआ प्रवासी दल जावरा पहुचा जहा से अतिथि अपने-अपने स्थानो की ओर रवाना हो गये।

दसवा धर्मजागरण एव सस्कार निर्माण कार्यक्रम 25 दिसम्बर 1995 से 30 दिसम्बर 1995 तक विशाल धर्मपाल युवक पदयात्रा रैली के रूप मे आयोजित किया गया। जावरा के गीता भवन से 121 युवाओ ने श्री मानवमुनि के नेतृत्व मे धर्मध्वज तथा शराबबदी एव जीवदया के बैनर हाथ मे लेकर गुरु की जय तथा



स्वरूप को हृदयंगम करने-कराने का अच्छा साधन होती हैं।

पंचम धर्म जागरण एवं संस्कार निर्माण पदयात्रा 9 मार्च से 13 मार्च 19[illegible] तक नागदा से गुराड़िया ग्राम तक आयोजित की गई। मोहिना में प्रथम रात्रि पडाव कर पदयात्रा बोरखेड़ा पहुंची जहां महिला सम्मेलन व ग्राम सभा का आयोजन किया गया। बोरखेड़ा से नारायण खेड़ी और हिरडी होता हुआ पैदल यात्रियो का दल मटेरा ग्राम पहुंचा जहां धर्मपाल सम्मेलन आयोजित किया गया। श्री गणपतराज जी बोहरा, श्री भंवरलाल जी कोठारी, श्री कुन्दनलाल जी जैन, मानवमुनि जी, संघमंत्री श्री काकरिया जी, डॉ. नंदलाल जी बोर्दिया, श्री समीरमल जी कांठेड़, पंडित रत्न श्री सम्पतमुनि जी व श्रीमती यशोदा देवी बोहरा ने अपने उद्‌बोधनो से निद्रामग्न लोगो को जगाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा धर्मपाल प्रवृत्ति की अब तक प्रगति का आकलन प्रस्तुत किया। सम्मेलन के उपरान्त पदयात्री रठडा ग्राम पहुंचे जहां रात्रि पड़ाव था। रठडा से घुमायडा ग्राम होते हुए पदयात्री 'धर्मपाल गांव', गुराडिया गांव मे पहुंचे जहा से धर्मपाल प्रवृत्ति का शुभारंभ हुआ था। इस स्थान पर ग्राम सभा उपरान्त संस्मरण सभा हुई जिसमें पदयात्रियो ने अपने हृदय की भावनाओ को मार्मिक अभिव्यक्ति दी। समापन समारोह नागदा नगरी में ही सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार डॉ शिवमगल सिह सुमन ने की।

सप्तम जीवन साधना, संस्कार-निर्माण एव धर्मजागरण पदयात्रा पुनः धर्मपाल क्षेत्र मे 16 मार्च 1982 से 27 मार्च 1982 तक आयोजित की गई। इसके लिये बेरछा से शाजापुर के आसपास के 50 किलोमीटर के ग्रामीण क्षेत्र का चयन किया गया था। श्री गुमानमल जी चोरडिया, श्री जुगराज जी सेठिया, श्रीगणपतराज जी बोहरा, श्री पी. सी. चौपड़ा, श्री भंवरलाल जी कोठारी, श्री समीरमल जी काठेड, समाज सेवी श्रीमानव मुनि जी, श्रीमती यशोदा माताजी एवं श्रीमती शंकुतलोखी काठेड प्रमुख पदयात्रियो मे सम्मिलित थी। 11–11 नवकार मंत्रो के जाप तथा अरिहंत देव के ध्यान के उपरान्त श्री मानवमुनि जी के पथ संचालन में यात्रा आरंभ हुई तथा रणथमंवर ग्राम से होती हुई रात्रि विश्राम हेत घुंसी ग्राम पहुंची। घुंसी मे ही यह हृदयविदारक समाचार मिलने पर कि श्रीगणपतराज जी बोहरा के ज्येष्ठ पुत्र श्री पारसराज बोहरा का कार दुर्घटना मे निधन हो गया था, पदयात्रा भारी मन से स्थगित कर दी गई। पदयात्रा के लक्ष्यो की पूर्ति हेतु श्री चम्पालाल जी पिरोदिया एवं श्रीमती धूरीबहिन पिरोदिया ने लड़ावद, पचोला खेड़ा, आदि पडाव स्थलो की पदयात्रा की तथा धर्मपाल प्रवृत्ति के महत्व से सर्व को अवगत कराया।



संस्कार सुधार संबंधी नारे लगाते हुए नगर के प्रमुख मार्गों पर पद मार्च किया। यह मार्च "गीता भवन" पहुंच कर सभा मे परिवर्तित हो गया जिसमे श्री पी सी चौपडा, श्री समीरमल जी कांठेड एवं विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक सस्थाओ के पदाधिकारियो ने भाग लिया। दूसरे दिन अर्थात् 26 दिसम्बर को प्रात 6.30 बजे नगर परिक्रमा एवं महाश्रमणीरत्ना श्री पानकवर जी म सा से मागलिक श्रवण कर धर्मपाल युवकों की इस रैली ने ग्रामो की ओर प्रस्थान किया। प्रथम पडाव ग्राम मामटखेडी में हुआ जहां बडी सख्या मे ग्रामीणो ने धर्मसभा मे भाग लेकर अपनी जिज्ञासाओ का समाधान पाया। तत्पश्चात यात्रियो का दल कालूखेडा और रियामन होता हुआ मायता ग्राम पहुचा जहा धर्म सभा आयोजित की गई जिसे श्री शिवनारायण जी, मानव मुनि जी, श्री समीरमल जी, सुखदेव जी मालवीय एव श्री पी सी चौपडा जैसे समाज सेवियो ने सबोधित किया। ग्राम मायता से पदयात्रा आरंभ हुई जो घनघोर वर्षा झेलती हुई भी ग्राम बेहपुर पहुची। 29 तारीख को यात्रीगण खजूरिया पहुचे जहा से रिंछालाल मुहा होते हुए पदयात्रा समापन स्थान रालयी पहुचे। इस स्थान पर एक रात्रि सभा हुई जिसमे पदयात्रा की उपलब्धियो एवं आगामी योजनाओ पर विचार किया गया।

विगत लगभग 22 वर्षो से आयोजित की जा रही धर्म जागरण पद यात्राओ का यह संक्षिप्तीकृत विवरण धर्मपाल प्रवृत्ति के अब तक के विकास का जो लेखा प्रस्तुत करता है वह इस बात के प्रति आश्वस्त करता है कि आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रेरित समाज सुधार एव सस्कार सुधार का यह कार्य अधिक व्यापक एव बहुआयामी रूप प्राप्त कर एक ऐसी सस्कार क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा जिसकी संस्कार भ्रष्ट वर्तमान पीढी को सर्वाधिक आवश्यकता है। सामाजिक पुनर्निर्माण के इस अभियान को जो समर्पित जन-सहयोग प्राप्त हो रहा है वह अत्यन्त सौभाग्य का विषय है।

—बीकानेर

लोभ कलि-कसाय-महक्खंधो।
चिंतासयनिचय विपुलसालो।।

-प्रश्न व्याकरण १/५

परिग्रह रूप एक विशाल वृक्ष है जिसके स्कध है, क्लेश और कषाय। उस परिग्रह के वृक्ष की बडी ही सघन एव विशाल शाखाएं है—अनके प्रकार की चिन्ताए।



धर्मपाल एवं पद-यात्रा

श्री गुमानमल चोरडिया

युगदृष्टा, युगस्रष्टा युग धर्मोपदेष्टा महान क्रान्तिकारी, ज्योतिर्धर स्व आचार्य श्री जवाहर के अछूतोद्धार के स्वप्न को साकार करने वाले उन्ही के पात्र शिष्य आचार्य श्री नानेश अपने प्रथम चातुर्मास रतलाम के समापन पर बलाई जाति के लोगो से सपर्क होने पर भी उनकी दारुण कथा सुनकर भाव विह्वल हो उठे। केवल शाब्दिक सवेदना नही पर मन मे एक ज्योति प्रज्ज्वलित हुई, मर्यादा मे रहते हुए उनके उत्थान के लिये सकल्पित हुये।

आचार्य प्रवर बिना आहार-पानी की परवाह किये उनके ग्रामो मे गये, कुव्यसन छोडने का प्रभावशाली उपदेश दिया, जिन्होने बुराईयां छोडी उन्हे धर्मपाल (यानी धर्म की पालना करने वाले) नाम से सबोधित किया, फलस्वरूप आज लाखो लोग व्यसनमुक्त हुए, हजारो धर्मपाल बने।

धर्मपाल प्रवृत्ति मे सघ सदस्यो ने काफी योगदान किया। रतलाम, नागदा, उज्जैन, मक्सी आदि जिलो के ग्रामो मे, ढाणियो मे इन लोगो के पास पहुचकर इन्हे व्यसन मुक्त कराने के लिये काफी प्रयास भी किए गये। एक बार हम प्रवास मे थे तब नागदा के पास रेलवे क्रासिग पर फाटक बद होने के कारण आपस मे वार्तालाप कर रहे थे कि क्यो नही यहा पदयात्राये आयोजित की जावे, उसमे हमारी साधना भी होगी और उसे धर्मपाल भाई देखकर साधना करने लगेगे।

पहली पदयात्रा जब प्रारभ हुई तब बगाल के उपमुख्यमत्री श्री विजयसिह जी नाहर पधारे थे, बहुत अच्छा माहौल था लगभग 100 पदयात्री थे। धर्मपालो मे विशेष उत्साह था। नाहर साहब ने फरमाया कि ऐसा लगता है कि यह महान् धार्मिक क्रान्ति की पूर्व सूचना है। यह उनका निश्चय ही सार्थक सकेत था। इस पदयात्रा के दूसरे दिन के पडाव पर एक विशेष घटना घटित हुई थी कि उस ग्राम मे एक मौत हो गई, गाव वालो ने सभी पदयात्रियो से उधर जहा मौत हुई थी, जाने के लिये निषेध किया, जहा निषेध होता है वहा ज्यादा उत्सुकता रहती है। फिर गॉव वालो ने बतलाया कि हमारे गॉव मे यह धर्म गगा आई है, आपकी पदयात्रा यहा से जाने के बाद हम दाह सस्कार करेगे, ऐसी धर्मपाल भाईयो मे पदयात्रियो के प्रति विशेष श्रद्धा थी। इस प्रकार पाच पदयात्राऐ धर्मपाल क्षेत्र मे सपन्न हुई, दो पदयात्राए अपने क्षेत्रो मे सपन्न हुई। सभी पदयात्राए, यात्रियो को



सस्कार सुधार संबधी नारे लगाते हुए नगर के प्रमुख मार्गो पर पद मार्च किया। यह मार्च "गीता भवन" पहुंच कर सभा मे परिवर्तित हो गया जिसमें श्री पी. सी चौपडा, श्री समीरमल जी कांठेड एवं विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओ के पदाधिकारियों ने भाग लिया। दूसरे दिन अर्थात् 26 दिसम्बर को प्रात. 6 30 बजे नगर परिक्रमा एवं महाश्रमणीरत्ना श्री पानकवर जी म. सा. से मागलिक श्रवण कर धर्मपाल युवकों की इस रैली ने ग्रामो की ओर प्रस्थान किया। प्रथम पडाव ग्राम मामटखेडी मे हुआ जहां बडी सख्या मे ग्रामीणो ने धर्मसभा मे भाग लेकर अपनी जिज्ञासाओ का समाधान पाया। तत्पश्चात यात्रियो का दल कालूखेडा और रियामन होता हुआ मायता ग्राम पहुचा जहा धर्म सभा आयोजित की गई जिसे श्री शिवनारायण जी, मानव मुनि जी, श्री समीरमल जी, सुखदेव जी मालवीय एव श्री पी.सी चौपडा जैसे समाज सेवियो ने सबोधित किया। ग्राम मायता से पदयात्रा आरभ हुई जो घनघोर वर्षा झेलती हुई भी ग्राम बेहपुर पहुची। 29 तारीख को यात्रीगण खजूरिया पहुचे जहा से रिंछालाल मुहा होते हुए पदयात्रा समापन स्थान रालयी पहुचे। इस स्थान पर एक रात्रि सभा हुई जिसमे पदयात्रा की उपलब्धियो एवं आगामी योजनाओ पर विचार किया गया।

विगत लगभग 22 वर्षो से आयोजित की जा रही धर्म जागरण पद यात्राओ का यह सक्षिप्तीकृत विवरण धर्मपाल प्रवृत्ति के अब तक के विकास का जो लेखा प्रस्तुत करता है वह इस बात के प्रति आश्वस्त करता है कि आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रेरित समाज सुधार एवं सस्कार सुधार का यह कार्य अधिक व्यापक एव बहुआयामी रूप प्राप्त कर एक ऐसी सस्कार क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा जिसकी सस्कार भ्रष्ट वर्तमान पीढी को सर्वाधिक आवश्यकता है। सामाजिक पुनर्निर्माण के इस अभियान को जो समर्पित जन-सहयोग प्राप्त हो रहा है वह अत्यन्त सौभाग्य का विषय है।

—बीकानेर

लोभ कलि-कसाय-महक्खंधो।
चिंतासयनिचय विपुलसालो।।

-प्रश्न व्याकरण १/५

परिग्रह रूप एक विशाल वृक्ष है जिसके स्कध है, क्लेश और कषाय। उस परिग्रह के वृक्ष की बडी ही सघन एव विशाल शाखाए है—अनके प्रकार की चिन्ताए।



धर्मपाल एवं पद-यात्रा

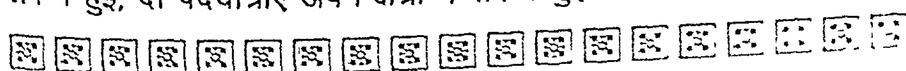
श्री गुमानमल चोरडिया

युगदृष्टा, युगसृष्टा, युग धर्मोपदेष्टा, महान क्रान्तिकारी, ज्योर्तिधर स्व. आचार्य श्री जवाहर के अछूतोद्धार के स्वप्न को साकार करने वाले उन्ही के पात्र शिष्य आचार्य श्री नानेश अपने प्रथम चातुर्मास रतलाम के समापन पर बलाई जाति के लोगो से सपर्क होने पर भी उनकी दारुण कथा सुनकर भाव विह्वल हो उठे। केवल शाब्दिक समवेदना नही पर मन मे एक ज्योति प्रज्जवलित हुई, मर्यादा मे रहते हुए उनके उत्थान के लिये सकल्पित हुये।

आचार्य प्रवर बिना आहार-पानी की परवाह किये उनके ग्रामो मे गये, कुव्यसन छोडने का प्रभावशाली उपदेश दिया, जिन्होने बुराईयॉ छोडी उन्हे धर्मपाल (यानी धर्म की पालना करने वाले) नाम से सबोधित किया, फलस्वरूप आज लाखो लोग व्यसनमुक्त हुए, हजारो धर्मपाल बने।

धर्मपाल प्रवृत्ति मे सघ सदस्यो ने काफी योगदान किया। रतलाम, नागदा, उज्जैन, मक्सी आदि जिलो के ग्रामो मे, ढाणियो मे इन लोगो के पास पहुचकर इन्हे व्यसन मुक्त कराने के लिये काफी प्रयास भी किए गये। एक बार हम प्रवास मे थे तब नागदा के पास रेलवे क्रासिग पर फाटक बद होने के कारण आपस मे वार्तालाप कर रहे थे कि क्यो नही यहा पदयात्राये आयोजित की जावे, उसमे हमारी साधना भी होगी और उसे धर्मपाल भाई देखकर साधना करने लगेगे।

पहली पदयात्रा जब प्रारभ हुई तब बगाल के उपमुख्यमत्री श्री विजयसिह जी नाहर पधारे थे, बहुत अच्छा माहौल था लगभग 100 पदयात्री थे। धर्मपालो मे विशेष उत्साह था। नाहर साहब ने फरमाया कि ऐसा लगता है कि यह महान् धार्मिक क्रान्ति की पूर्व सूचना है। यह उनका निश्चय ही सार्थक सकेत था। इस पदयात्रा के दूसरे दिन के पडाव पर एक विशेष घटना घटित हुई थी कि उस ग्राम मे एक मौत हो गई, गाव वालो ने सभी पदयात्रियो से उधर जहा मौत हुई थी, जाने के लिये निषेध किया, जहा निषेध होता है वहा ज्यादा उत्सुकता रहती है। फिर गॉव वालो ने बतलाया कि हमारे गॉव मे यह धर्म गगा आई है, आपकी पदयात्रा यहा से जाने के बाद हम दाह सस्कार करेगे, ऐसी धर्मपाल भाईयो मे पदयात्रियो के प्रति विशेष श्रद्धा थी। इस प्रकार पाच पदयात्राए धर्मपाल क्षेत्र मे सपन्न हुई, दो पदयात्राए अपने क्षेत्रो मे सपन्न हुई। सभी पदयात्राए, यात्रियो को



सयम, नियम, मर्यादापूर्वक, अनुशासन का पालन कराते हुए जीवन साधना क अभ्यास कराते हुए नियमित स्वाध्याय के माध्यम से अन्तरावलोकन के लिये सहज ही प्रेरित करती थी।

इस बारी हमारी यह पदयात्रा पच दिवसीय (16 मार्च से 20 मार्च 97 तक) व्यसनमुक्ति, धर्मजागरण, जीवन साधना एवं संस्कार निर्माण पद यात्रा थी। यह आयोजन मन्दसौर एवं रत्नलाम जिलों के गांवो में किया गया।

इस अवधि मे दस ग्रामो में प्रातः एव सांयकाल धर्मसभाओ के आयोजन एव मर्मस्पर्शी उद्‌बोधनो द्वारा ग्रामीणो को जहा व्यसनो से मुक्त होकर जीवन स्तर सुधारने एवं संस्कारित होने के लिये प्रेरित किया गया वही पदयात्री साधकों की साधनामय दिनचर्या उनके लिये काफी प्रेरणास्पद रही। कई धर्मपाल भाई भी साधना मे सहयोगी बने। आज स्थिति यह है कि इतने वर्षो तक सतत प्रेरणा से व्यसनमुक्त होने से धर्मपालो मे आर्थिक सम्पन्नता आई है। सम्पन्नता के साथ साथ वे लोग लोकसभा, विधानसभाओ, नगरपालिकाओ एवं पंचायतो में भी पहुंचे हैं।

जहां पदयात्रा का उद्‌देश्य सादगी युक्त श्रमनिष्ठ, स्वावलंबी शिविर जीवन की अनुभूति करते हुए नि:स्वार्थ सेवा भावना को जीवन का सहज स्वभाव बनाती है, वहा जीवन उन दिनो मे निश्चल सा प्रतीत होता है। प्रात.काल साढे चार बजे से कार्यक्रम प्रारंभ होता। रात्रि के साढे नौ दस बजे तक चलता, एक समय भोजन, दो समय नाश्ता, सवेरे प्रार्थना के पश्चात् एव तीसरे पहर पश्चात् अगले पडाव पर जाना बडा ही मनमोहक रहता, स्वाध्याय मे अलग-अलग दिन अलग-अलग विद्वानो के सारगर्भित प्रवचन सभी के लिए विशेष आकर्षक रहते। श्री नेमिचंद जी जैन संपादक तीर्थकर का उद्‌बोधन भी सरल पर अति प्रेरणास्पद रहा।

पदयात्राओं मे सबसे ह्रदयस्पर्शी दृश्य होता है अतिम दिन प्रायश्चित का जहां पदयात्री अपनी-अपनी सारी भूलो को निश्चल ह्रदय से प्रकट कर प्रायश्चित मागते है। अपने संस्मरण सुनाते है एवं कितनी ही असुविधा हो, फिर भी अगली पदयात्रा के लिये अपनी इच्छा प्रकट करते है।

उपलब्धि की दृष्टि से यदि देखा जावे तो पदयात्रा की उपलब्धिया अविस्मरणीय एवं अनूठी होती है। शहरो मे सुख-सुविधाओ को भोगने वाले भाई बहिन तपते हुए तबुओ मे भी दोपहर मे रहते है, तो पेड़ो के नीचे प्राकृतिक छटा का भी आनद उठाते है। जब स्वाध्याय का क्रम चलता है तब समोशरण जैसी रचना लगती है हालाकि उसमे 2 ही तीर्थ श्रावक-श्राविका ही होते हैं। पदयात्रा के दौरान सभी पदयात्री पूर्ण स्वस्थ रहते हैं। सममाव की साधना, प्रतिक्रमण एवं



स्वाध्याय की साधना में मग्न पदयात्री भविष्य मे गुणदृष्टि को जगाने एव दोष दृष्टि को छोडने का भाव संजोये हुए अपूर्व आनंद की अनुभूति मे मग्न हो जाते हैं। धर्मपाल भाई भी पदयात्रियो की चर्या से काफी प्रभावित होते है।

धर्मपाल प्रवृत्ति मे बोहरा दंपति भामाशाह आदरणीय गणपतराज जी सा बोहरा एवं यशोदा माताजी जहा तन, मन, धन से समर्पित है। वही भाई समीरमल जी सा काठेड जिन्होने सवत् 2030 से लेकर 2053 तक धर्मपाल क्षेत्र में जो सेवाये दी वे अविस्मरणीय है। कांठेड साहब के मृत्यु का वरण करने के 20–25 मिनट पूर्व ही धर्मपाल प्रवृत्ति के बारे मे मुझसे वार्ता हुई थी, आप उस क्षेत्र मे सेवाओ के कारण धर्मपाल गाधी के नाम से जाने जाते थे। जहा श्रृद्धास्पद मानवमुनि जो अलख जगाये हुए है, वही श्री पी सी चौपडा सा भी इस कार्य को सुचारू रूप से चलाने मे त्वरित गति देने मे सिद्वहस्त है। भाई समीरमल जी के स्वर्गवास के पश्चात् इस पदयात्रा के जावरा समापन पर स्थानीय एव रतलाम के युवकों के उत्साह को देखकर लगता है कि यह प्रवृत्ति जहा व्यसनमुक्त करने मे सफल हुई है, वहा अब दूसरे चरण मे सभी धर्मपालो को सुश्रावक बनाने मे उल्लेखनीय सफलता हासिल करेगी। नव निर्वाचित सयोजक श्री धीरज जी मुणोत एवं उनके सहयोगी भी इस दिशा मे कुछ कर दिखाने के लिये कृत सकल्प हैं। रतलाम के पास दिलीपनगर मे श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास धर्मपालो को जहा व्यवहारिक अध्ययन मे उनका सहयोगी है वही उन्हे धार्मिक सस्कारो से ओतप्रोत करने मे सक्षमता से अपनी भूमिका निर्वाह कर रहा है।

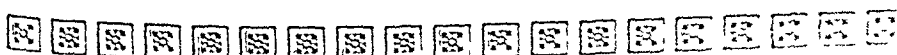
सभी धर्मपालो का उत्थान हो, इसी प्रशस्त भावना के साथ।

—अध्यक्ष,

श्री अ भा सा जैन सघ

समभावो समाइय, तण कचण सत्तुमित्तविसओत्ति।
निरभिंसगमचित्त, उचियपवित्तिपहाण च।।

समभाव ही सामयिक है। तृण हो या कचन, शत्रु हो या मित्र, उसका चित्त निरभिश्वग हो, उचित प्रवृत्तिप्रधान हो जाता है।



दसवीं धर्म जागरण, संस्कार निर्माण एवं व्यसन मुक्ति पदयात्रा

(दिनांक 16.3.97 से 20.3.97 तक)

धर्मपाल क्षेत्र

पदयात्रा - विवरण

—संकलन व प्रस्तुति—श्री गोविन्द नारायण श्रीमाली



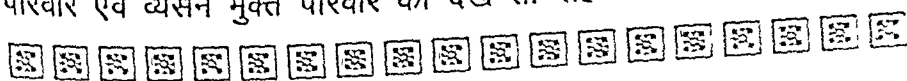
नगरी, 16 मार्च। यह नगरी है, धर्म नगरी है, तपस्वियो की नगरी है। गन्ने के उत्पादन मे देश भर मे अग्रणी नगरी है। आज यहा एक और नया अध्याय शुरू होने जा रहा है। करीब 40 कि.मी की पदयात्रा का शुभारभ यहां से हो रहा है। जिसका लक्ष्य देश एवं समाज को व्यसन मुक्त कर धर्म जागरण से जीवन को साधते हुए सस्कारो का निर्माण करना है।

यह पदयात्रा अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर के तत्वाधान मे आयोजित है। शुभारभ नगरी की प्राथमिक पाठशाला के प्रागण से हो रहा है। इस अवसर पर बोलते हुए सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया ने कहा कि समाज मे बुराईया युगो से, मानव कुव्यसनो मे आदिकाल से फसा है यदि हम बुराईयो से छुटकारा पा लेगे तो पूर्ण मानव बन पायेगे। नर से नारायण बनना है तो बुराईयो से दूर होना होगा। आपने कहा कि महिलाएँ बालको का जितनी अच्छी तरह से सस्कारित कर सकती है वैसे दूसरे नही कर सकते। इसलिए सस्कार निर्माण के कार्य मे महिलाओ का दायित्व अधिक है वे आगे आकर इसमे कार्य करे।

सघ उपाध्यक्ष श्री कालूराम जी नाहर ने कहा किं नगरी हर क्षेत्र मे आगे है इसलिए वह व्यसन मुक्ति के कार्य मे भी अग्रणी बने। सघ महामत्री सागरमल जी चपलोत ने कहा कि पदयात्रा जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जागरण की वेला मे चेतना पैदा हो तो सतोष, स्वाध्याय एव सत्सग से जीवन निर्माण होता है। यदि हम जीवन का सच्चा आनन्द लेना चाहते है तो वह सत्सग से ही सभव है। पूर्व राष्ट्रीय सघ उपाध्यक्ष श्री मनोहरलाल जी जैन ने कहा कि मानव जीवन की सार्थकता को व्यक्ति प्राप्त कर ले यही इस कार्यक्रम का एक मात्र लक्ष्य है। आपने कहा कि स्वभाव ही धर्म है। हमारा धर्म यही है कि हम व्यवहार, काम से दुःख दे नही, दुःख देखे नही।

महिला सघ अध्यक्षा श्रीमती निर्मलादेवी चोरडिया ने अपने उद्बोधन मे कहा कि हमारी कामना यही रहती है कि जीवन मे मोक्ष मिले। लेकिन यह मोक्ष हमे तब मिल सकेगा जब हम व्यसन मुक्त हो। पदयात्रा मे जाने से पहले सभी सोचे कि क्या हम लोग व्यसन मुक्त है ? आपने कहा कि मन कभी भी पथरीले रास्तो पर नही जाना चाहेगा। सयम का रास्ता पथरीला है, सयम की साधना करे।

प्रतापगढ नगर पालिका अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोर्दिया ने कहा कि व्यसनयुक्त परिवार एव व्यसन मुक्त परिवार को देखे तो सहज ही पता चल जाएगा कि



व्यसन हमारे जीवन के लिये कितने घातक है । दोनो परिवारो में दिन-रात क फर्क दिखाई देगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यसन मुक्त हों तभी आगे बढ सकेंगे।

महिला संघ की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती शांता देवी मेहता ने कहा कि यदि देश मे नैतिक व्यवहारिक एवं व्यसनमुक्त नवयवुक नही होगा तो देश कैसे चलेगा महिलाओ का आह्वान करते हुए आपने कहा कि वे जागरूक होकर बच्चो वं जीवन निर्माण मे अपनी महती भूमिका निभाएं और कुव्यसनो से बालको को दू रखते हुए संस्कारो का निर्माण करे। मन्दसौर पालिका के पार्षद श्री रविन्द्र रांक ने कहा कि आज धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों मे गिरावट आई है, हम संस्कार को भूल रहे है। ऐसे मे पदयात्रा सस्कारो के पुनर्स्थापना मे सहयोगी होगी

श्री धीरज मुणोत ने कहा कि हम जीवन को कैसे सुधारें बात यही प आती है, मुडकर के देखने की प्रवृत्ति बनाएं तो यात्रा का सही अर्थ निकल सकत है। नगरी सघ अध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जैन ने कहा कि पदयात्रा नगरी से शुरू ह रही है यह गौरव की बात है। व्यसन मुक्ति के 250 फार्म नगरी से भरे गए हैं आपने सेवा का मौका देने पर आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत मे कुमारी प्रियंका जैन, अजुबाला जैन मगलाचरण एव स्वागत गीत प्रस्तुत किए। शाला प्रधान चन्द्रशेखर शिंदे विद्यालय के सौ वर्षो के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि पदयात्रा युग क मांग के अनुरूप विद्यालय प्रागण से शुरू हो रही है यह गौरव का विषय है। आ स्वय तीस वर्षो से तम्बाकू का सेवन कर रहे थे जो आठ दिन के प्रयासो से छो दिया। उन्होंने कहा कि व्यसन मनुष्य को पतन की ओर ले जाते हैं पैसा बचाई बच्चो का भविष्य बनाइए।

पदयात्रा समन्वयक गाधीवादी समाजसेवी मानवमुनिजी ने अपने उदबोधन में कहा कि जैन दर्शन-जीवन दर्शन है। आचरण एव व्यवहार मे फर्क नही आना चाहिए। व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म का है उसमे अहकार व्याप्त है, स्वयं को बदले यही इस यात्रा का उद्‌देश्य है। कार्यक्रम का संचालन श्री मनोहर लाल झेलावत ने किया। नगरी सघ सचिव श्री किशोर जैन ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम समापन के बाद पदयात्रा प्रारंभ होती है। नगरी के बाजारो के घुमावदार रास्ता से चलते हुए पदयात्रा धर्मपाल क्षेत्र मे पहुंचती है। यहां पर परम्परागत रूप से स्वागत के पश्चात् आयोजित कार्यक्रम मे "समता भवन" का शिलान्यास सघ के उपाध्यक्ष श्री भँवरलाल जी कोठारी, पूर्व संघ अध्यक्ष श्री पी. सी चौपडा तथा महिला सघ अध्यक्षा श्रीमती निर्मला देवी चोरडिया के कर कमलो



से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी सा चोरडिया ने कहा कि ज्ञान का महत्व है। व्यवहारिक एवं धार्मिक शिक्षण में रुचि रखे। आज शिलान्यास हुआ है जल्दी ही भवन बन जाएगा संत-सतियां जी म. सा. का आगमन होगा। सतो के सम्पर्क से जीवन परिमार्जित होगा। सप्त कुव्यसनों का त्याग करे तो व्यसन मुक्ति से जीवन सफल होगा।

सघ उपाध्यक्ष एव राजस्थान गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री भँवरलालजी कोठारी ने कहा कि समभाव की साधना के भवन का शिलान्यास आज आपके ग्राम मे हुआ है। जिसमे साधना कर हम शुद्ध और स्वावलम्बी समाज का निर्माण करे। आज वातावरण विकृत है, स्वयं और समाज को सुधारे इसीलिये पदयात्रा है, पांच दिन मे धर्म को जीवन मे उतारने का प्रयास करें। आज धर्मपाल समाज शिक्षित एवं संस्कारयुक्त है। अब यह दूसरे चरण मे प्रवेश कर जीवन साधना मे लग रहा है।

महिला सघ अध्यक्षा श्रीमती निर्मला देवी चोरडिया ने धर्मपालो मे आई जागृति को महत्वपूर्ण बताते हुए शिक्षा की ओर ध्यान देने का आग्रह किया। साथ ही बहनो को आगे आकर कार्य करने के लिये प्रेरित किया।

इस अवसर पर धर्मपाल संघ नगरी के अध्यक्ष श्री देवीलाल जी ने कहा कि धर्मपाल समाज व्यसन मुक्त है, अब हम साधना की ओर बढ रहे है। सुशीला ने "महावीर तुम्हारे चरणो मे श्रद्धा के फूल चढाए हम" गीत प्रस्तुत किया। मुन्नी, सुमित्रा, पार्वती, लक्ष्मी ने "महावीर भगवान तुमको लाखो प्रणाम" गीत गाया। ढाई वर्ष की वीणा ने एकदम शुद्ध उच्चारण करते हुए "नवकार मत्र" सुनाया।

यहा से यात्रा आगे चल पडी है उबड-खाबड पगडडी होते हुए हम खेतो की लहराती गेहूँ, रायडा, मक्की एवं अफीम की खेती के बीच से "जय गुरु नाना, जयश्री राम", हु शि उ चौ श्री जग नाना, राम चमकसी भानु समाना" आदि नारे लगाते चलते जा रहे हैं। पदयात्रा का अगला पडाव लामगरा है जो इस यात्रा मे सबसे अधिक दूरी पर है। नगरी से लामगरा की दूरी छह किलोमीटर है। सामने लामगरा दिखाई देने लगा है। गाव के बाहर महिलाएँ, पुरुष एव बच्चे स्वागत मे खडे हैं। पारम्परिक तरीके से स्वागत के पश्चात यात्रा गाव के विभिन्न मार्गो से होते हुए समता भवन के प्रागण मे पहुचती है। रात्रि विश्राम एव धर्म सभा यही है।

रात्रि 8 बजे सभा शुरू होती है। नृसिह एव साथियो द्वारा आरती एवं भजन प्रस्तुत किए जाते हैं। यहा पर बोलते हुए सघ के अध्यक्ष श्री चोरडिया ने कहा कि लामगरा व्यसन मुक्त गाव है। यहाँ धर्मपाल इच्छानुसार गाव चल रहा है, प्रसन्नता है। धर्म साधना मे सतत (क्र

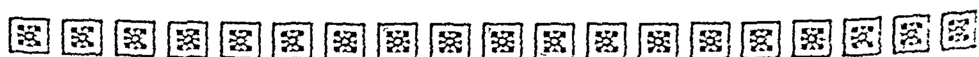


जाएं, गॉव की गरिमा को बताते हुए दूसरे गॉवो को आदर्श गॉव बनाने का प्रयास करे। सघ उपाध्यक्ष श्री भंवरलाल जी कोठारी ने कहा कि पदयात्रा मे हमे जैन जीवन पद्धति की झलक मिलती है। पदयात्रा मे दूसरो की अच्छाईयॉ एवं स्वय की गलतियो को देखकर उनका निवारण करे।

श्री उदयलाल जी जारोली ने कहा कि मनुष्य वृत्ति में दु.ख होते हुए भी उसका निदान है। आपनें कहा कि मनुष्य जन्म दूसरे जन्मो से उत्कृष्ट है। जहां पर शरीर नहीं आत्मा कीमती है। अन्य गतियों से बचकर ससार मे आने जाने के इस चक्र से बचकर हम मोक्ष को कैसे प्राप्त करें यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। पूर्व महिला मंत्री श्रीमती कमला बैद ने कहा कि इस आदर्श गाव को छोडकर जाने को जी नही करता, इसने बहुत प्रेरणा दी है। आपने आग्रह किया कि शिक्षा एवं धर्म का ज्ञान करे एवं बच्चों को पढाई की ओर अग्रसर करे। चम्पालाल जी पिरोदिया "मामाजी" ने कहा कि मुझे व्यसन मुक्ति के कार्य मे आनन्द आता है। बडो और बालको के साथ बैठने, उनसे चर्चा कर कुव्यसनो की हानि एवं इसके बचाव से होने वाले उत्थान की जानकारी देने से मन हर्षित होता है।

धमनार के श्री बगदीराम जी धर्मपाल ने कहा कि धर्म गगा की शुरूआत नगरी से हुई है, जिसमे स्नान का हमे अवसर प्राप्त हुआ है, यह गुरु की कृपा है। आज इस गंगा का प्रवाह जैनाचार्य पूज्य नानालाल जी म. सा ने सभव करवाया। उन्होने कहा कि समता भवन एक घाट है जहां सत सतियॉ जी महाराज आएगे तो हमे इस घाट से ज्ञान का स्नान मिलेगा, जिससे आत्मा पवित्र होगी।

लामगरा के सरपच श्री रघुनाथ जी ने कहा कि हमारा गाव पूर्णरूपेण एक आदर्श गांव है, गांव के तालाब मे मछलिया पकडी जाती थी गांव के लोगो के प्रयास से उसे भी हमने बंद करवा दिया है। आज लामगरा मे कोई भी व्यक्ति व्यसनी एव हिंसक नही है। रघुनाथ जी इस सबके लिए गुरु महाराज (आचार्य श्री नानालालजी म.सा.) की कृपा से हुआ मानते है जिन्होने व्यसनो से मुक्ति दिलाई। गाव के बुजुर्ग श्री नन्दराम जी ने नृसिह की प्रशसा करते हुए कहा कि यह युवक तन्मयता से समता भवन के कार्य मे लगा रहता है इसके प्रयासो से ध्यान, स्वाध्याय का कार्य चलता रहता है। शामूबाई, सम्पतलाल जी ने भी अपने विचार रखे। नृसिह ने नानेश आचार्य महान है, तप सयम गुण खान, जग मे सुन्दर है दो नाम, चाहे नाना कहो या राम" तथा मेवाडी सांवरियो, नाना गुरु प्यारो लागे" गीत प्रस्तुत किए। महिलाओ ने श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो– जय हो – गीत प्रस्तुत किया। ललिता ने टूट ना जाए ना माला कही प्रेम की एवं शारदा



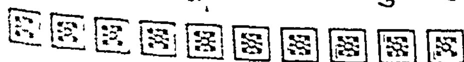
श्यामलता ने "दुखियो की सेवा कर सबसे बाटू प्यार और बालक सुखदेव ने "हे प्रभु अन्नदाता" गीत प्रस्तुत किए।

सभा की समाप्ति के बाद रात्रि विश्राम लामगरा मे ही है। प्रात पुन यात्रा अगले पडाव भोलिया के लिए चल पडती है। भोलिया यहा से तीन किलोमीटर है। दूर क्षितिज पर भगवान भुवन भास्कर धरती की गोद मे लालिमा लिये प्रगट हो रहे है। प्रात. के सूर्योदय का अप्रतिम दृश्य, प्रात का वातावरण, पक्षियो की चहक के बीच ,खेतो से गुजरता कारवा, खेतो मे काम कर रहे ग्रामीणो को बरबस ही आकर्षित करते हैं। दो क्षण रूक कर वे इस अनूठे दृश्य को देखते है। चलते-चलते ये लो सामने भोलिया आ गया। वही स्वागत ढोल की थाप के साथ हाथो मे हार-मालाएँ लिए ग्राम बालाएँ स्वागत करती है। हम निर्धारित स्थान प्राथमिक विद्यालय परिसर मे पहुँचते हैं। प्रात. के अल्पाहार के पश्चात सभा शुरू होती है। ग्राम के बालाराम जी द्वारा यात्रा के आगमन पर सभी का स्वागत किया जाता है। बालको द्वारा "गुरुवर स्वीकारो, म्हारी वदना" गीत प्रस्तुत किया जाता है। समता समाज प्रवृत्ति के सयोजक एव सघ मत्री श्री इन्दचद जी बैद ने कहा कि हमारा खानपान नियमित हो, विचार सात्विक हो तभी जीवन सफल हो सकता है। आपने बच्चो की पढाई पर ध्यान देने पर जोर देते हुए कहा कि कोई भी मा अपने बच्चो को जैसा चाहे वैसा बना सकती है। श्री बैद ने कहा कि व्यसन मुक्ति तो काफी हद तक हो चुकी है अब सस्कार किसे और कैसे दिए जाए यह सोचने का विषय है।

कार्यालय प्रमुख श्री नानालाल जी पितलिया ने कहा कि मनुष्य तो दिखाई देते हैं लेकिन मानवता होनी चाहिए तभी मानव होने की सार्थकता है। नीमच की श्रीमती सरला बहन ने कहा कि क्रीम पाउडर के उपयोग से तन की सुन्दरता तो बढ सकती है, मन की सुन्दरता नही बढती। दूदू की श्रीमती चन्द्रलता गेहलोत ने कहा कि बालको की पहली पाठशाला उनका घर है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बच्चो मे धार्मिक सस्कारो का निर्माण करे। आपने ' दिन मगल हो, जिन मगल हो, जीवन का हर क्षण मगल किया।

सघ महामत्री श्री सागरमल जी चपलोत ने कहा को अपनाया है वह शरीर से आत्मा की ओर बढता एव सहकार की भावना को बढावे यह आवश्यक है

भोलिया मे धर्मपाल के तीस परिवारो के है सभी धर्मपाल पूर्णरूपेण व्यसन मुक्त है।



जी, नाथूलाल जी एवं भवरलाल जी मास्टर जी है। पदयात्रा भोलिया से साय के अल्पाहार के बाद काकरवा के लिए प्रारंभ हो चुकी है। गांव की छोटी घुमावदार गलियो से होते हुए हम आगे बढते हैं। चलते-चलते मन्दसौर जिले से रतलाम जिले मे प्रवेश कर जाते है। हमारा गंतव्य भोलिया से चार कि.मी है जो सामने ही दिखाई दे रहा है ऊंचे टीले पर बसा यह ग्राम काकरवा अफीम की खेती के लिये प्रसिद्ध है। फलो मे तीसरा कट लग रहा है। ग्रामीणों द्वारा परम्परा के स्वागत के बाद हम प्राथमिक विद्यालय भवन में आ ठहरे है। यही हमारा रात्रि विश्राम व धर्मसभा है। यात्री सुस्ता रहे है लेकिन नृसिंह एव मामाजी कहां रूकने वाले है वे अपने काम मे लग गए है। नृसिंह उत्सुकतावश हमे देखने आए बालको को जोडता है और मामाजी उनके बीच बैठ कर गीतो, चित्रो के द्वारा हिसा, कुव्यसनो एव उनसे होने वाली विकृतियो के बारे मे बताते है और दो-दो लाईन बना नारे लगाते, बैनर लिए बडों और बालको की रैली गॉव मे निकालते हैं।

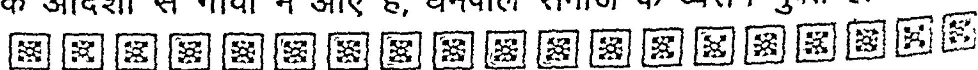
धर्मसभा के आरंभ में रामप्रसाद जी "वदना मेरी प्रथम महावीर को "वंदना के पश्चात सुमित्रा, रामकन्या एवं अनसूया द्वारा "हम स्वागत करते हैं, अभिनन्दन करते है" गीत प्रस्तुत किया। बशीलाल व श्री मोहनलाल जी श्रीश्रीमाल ब्यावर द्वारा "होवे धर्म प्रचार प्यारे भारत मे" तथा "महावीर का शासन भाई, गुरुवर नाना चाले ओ" गाया।

नीमच के श्री पारसमल जी सांखला ने कहा कि व्यसनों को छोडना एक बडा कार्य है जो आप लोगो ने कर दिखाया है, अब जीवन साधना की ओर आप अग्रसर होवे। समता युवा संघ के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र बोर्दिया ने कहा कि आप लोग तो व्यसनमुक्त हो गए है दूसरों को भी व्यसन मुक्त करे। जहा लडके-लडकी का सबध करे, वहा देखे की सामने वाले कुव्यसनी तो नही है, हो तो उनसे सबध न करे।

श्री उदयलाल जी जारोली ने कहा कि यदि मानव मे करूणा का भाव है तो वह धर्मपाल है फिर चाहे वह किसी भी धर्म एवं समाज का क्यो न हो, जो धर्म की पालना करे, वही धर्मपाल है।

महिला संघ अध्यक्षा श्रीमती निर्मला देवी चोरडिया ने संत-संतियो जी म सा. के आने पर आयोजित की जाने वाली विधियो पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उनके महत्त्व को प्रतिपादित किया।

पूर्व सघ अध्यक्ष श्री पी. सी. चौपडा ने गत दो दिनो की उपलब्धियो की चर्चा करते हुए आगामी दिनो की यात्रा का विवरण दिया। आपने कहा कि गुरुवर के आदेशो से गॉवो मे आए हैं, धर्मपाल समाज के व्यसन मुक्त होने से उसमें



सम्पन्नता आई है, उनका जीवन बदल गया है। धर्मपालो से अपील है कि बाकी गाव वालो को भी व्यसन मुक्त बनाने का प्रयास करे।

सघ उपाध्यक्ष श्री भवरलाल जी कोठारी ने अपने सबोधन मे कहा कि जब गॉव के लोग शहरो की ओर भाग रहे है तब हम गॉव की ओर आए है। शहरो मे विकृति है, वहॉ से दूर हम प्रकृति मे आए है। पहले गॉव स्वावलम्बी थे, अब ऐसा नही है। आपने कहा कि गॉव सम्पन्न था, इसलिए भारत सम्पन्न् था। व्यसनो के कारण गॉव पिछड गए है, कुव्यसनो को छोडेगे तो गॉवो मे समृद्धि आएगी। महिला मत्री श्रीमती इन्द्रा जी बैद ने कहा कि बहने स्वय पहले सस्कारित हो, फिर बच्चो को सस्कार, लोक व्यवहार सिखाएँ।

सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी सा. चोरडिया ने कहा कि मशीनीकरण की होड मे मे गो धन, पशु धन की क्षति हो रही है। आपने कहा कि आत्मा ही परमात्मा है लेकिन हम काम, क्रोध, मद, मोह लोभ के आवरणो को पुरुषार्थ से नही हटाएगे तब तक हम परमात्मा नही बन सकते, आपने कहा कि पुरुषार्थ के जागरण हेतु गुरु भगवतो से प्रेरणा ले रहे है, उनकी प्रेरणा से व्यसन मुक्ति हेतु पदयात्रा कर रहे है।

श्री चोरडिया जी ने धर्मपालो से आह्वान किया कि आप साधना का दूसरा चरण आरभ करे। पदयात्रा मे साथ बैठकर समीक्षण ध्यान, स्वाध्याय एव प्रतिक्रमण करे। लौ जलाकर प्रकाश पा जन्म को सफल बनावे।

आभार व्यक्त करते हुए गॉव के बालकराम जी ने कहा कि गॉव मे दूसरी जातियो के लोग भी रहते है लेकिन उनमे भी कम ही लोग हैं जो कि व्यसनी है। काकरवा मे 25 व्यक्तियो ने आजीवन व्यसन मुक्त रहने की शपथ ले सकल्प पत्र भरे।

रात्रि विश्राम काकरवा मे ही है। प्रात हम अगले पडाव के लिए चल पडते है। हमारा अगला पडाव यहा से पाच कि.मी दूर धतरावदा है। दूर कही से महाबली हनुमान के भजन सुनाई दे रहे हैं। जैसे-जैसे आगे बढते है गीत के बोल स्पष्ट होते जाते हैं। सामने बालाजी का मन्दिर है सभी दर्शन करते है यहा की व्यवस्था महत उद्दवदास जी देखते है। बाहर कुआ है सामने पेड-पौधे हरियाली है। प्रकृति की गोद मे "नाना गुरु ने क्या दिया, समता का सदेश दिया।" "होवे धर्म प्रचार प्यारे भारत मे" आदि गीतो की गूज के साथ पदयात्रा धतरावदा के मुहाने पर है। परम्परा से स्वागत के बाद हम धतरावदा मे हैं। यहॉ धर्मपाल महिला सरपच है। पचायत भवन परिसर मे ठहरने एव सभा करने को पाडाल लगा है।



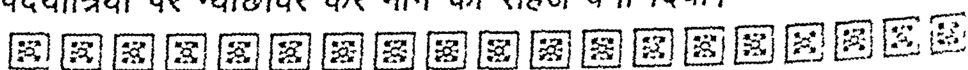
ग्यारह बजे सभा शुरू होती है। लामगरा के श्यामलाल, ओम प्रकाश, राधेश्याम आदि ने "महावीर तुम्हारे चरणो मे श्रद्धा के फूल चढाएँ हम" गीत गाया। धमनार के बगदीराम जी ने कहा कि धर्म की गंगा उत्तर भारत से प्रवाह कर रही है, ग्रामीणो को अपना जीवन सार्थक बनाने के लिये इसमे आना चाहिए, यात्रा का जितना ज्यादा लाभ ले सकें लेवे। आपने कहा कि "सतगुरु के घर जाना है, गुरु मुख गगा निर्मल वाणी, जा मै मलमल नहाना है, ज्ञानी जनो के मेले जाना है।" दूदू की चन्द्रा देवी ने कहा कि पैदल यांत्रा से अनोखा आनन्द मिला है। यहा मोह–माया से दूर, मन शांत चित है। यात्रा में समीक्षण ध्यान की कला सिखाई इसमे आनन्द आया। धर्मपाल भाइयो से कहा कि वे व्यसनो को न स्वीकारे। आपने एक गीत भी गाया जिसे सर्वत्र प्रशंसा मिली। बोल थे –

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं,
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।
कभी गिरते हुए को उठाया नही,
बाद ऑसू बहाने से क्या फायदा।।

समता युवा सघ के श्री मुकेश पागरिया ने कहा कि 34 वर्ष पूर्व गुरुदेव ने संस्कृति के विकृत स्वरूप को देखा तो मन मे करूणा उत्पन्न हुई, करूणा ने आन्दोलन का रूप लिया और आज के इस धर्मपाल स्वरूप को प्राप्त किया। आज कायाकल्प हो चुका है, सभी व्यसन मुक्त हो चुके है। उन्होने कहा कि जीने के लिये न जीए, निर्वाण के लिये जीएं वही जैनी है। आपने जैन समाज मे आ रहे व्यसनों की चर्चा करते हुए, उनकी रोकथाम कर सुधार किए जाने पर जोर दिया। दुर्ग के डालचद जी बाघमार ने कहा कि व्यसन मुक्ति का कार्य महत्त्व का कार्य है। छत्तीसगढ मे भी सकल्प पत्रो के माध्यम से यह कार्य किया जा रहा है।

धतरावदा पचायत समिति के पच श्री शकरलाल जी ने सभी आगन्तुको का आभार जताया। समाज सेवी श्री मानव मुनि जी ने कहा कि सिद्धान्तो एव आचरण मे हमेशा फर्क देखने मे आता है। व्यक्ति की कथनी और करनी मे फर्क नहीं होना चाहिए। अगर हम अनुशासन मे नही रह सकते तो जीवन दिखावा है, इसलिए अनुशासन की पालना करे। यहां पर 12 ग्रामीणों ने आजीवन व्यसन मुक्त रहने की शपथ ली और सकल्प पत्र भरे।

साय का हमारा पडाव माडवी है। जो यहां से पांच कि.मी. है। जोश और उत्साह के साथ पदयात्री चल पडते हैं। दोपहर तक धूप चिलमिला रही थी लेकिन यात्रा की रवानगी के समय इन्द्र देव ने उपस्थित हो अपना स्नेह पदयात्रियो पर न्यौछावर कर मार्ग को सहज बना दिया।



पथरीले टीलो पर चढते उतरते हम चले जा रहे है। सामने टीलो के मध्य माडवी गॉव दिखाई देने लगा है। यहा हरियाली दूसरे स्थानों से कही अधिक है। खेत तो है ही साथ साथ पेड-पौधे एव फूलो की भी बहार है। स्वागत के बाद गाव मे प्रवेश करते है। माडवी की गलियो से गुजरते समय बरबस ही वहां की झौपडियो की बनावट आगन्तुको को आकर्षित करने वाली है। झौपडियो की खासियत यह है कि वे बहुत ही चौडी है साथ ही दो मजिल झौपडियो है जिनमे बांसो के माध्यम से दूसरी मंजिल का निर्माण किया हुआ है। शहरों मे बालकानी निकालने का प्रचलन है जो माडवी मे भी दिखाई देता है। सभी घरो मे तीन-साढे तीन फुट की कलात्मक बालकानिया लकडी से बनाई हुई है। ऊपर के कमरो मे छोटी लेकिन सुन्दर खिडकियॉ भी बनी है जिसमे से पदयात्रियो के काफिले का गाव की महिलाए पुरुष अवलोकन कर रहे है। पदयात्री जय-जयकार व नारे लगाते "पशु पक्षी भी प्रेम से रहते, क्यो मानव तुम नही समझते"। "युवाचार्य जी ने ठाना है, व्यसन मुक्त बनाना है"। चले जा रहे है सामने ही गाव के मध्य मे हमारा गतव्य है यही रात्रि सभा है।

सभा का प्रारंभ चन्द्रबाई दूदू के बोल "मनवा बोल नमो अरिहताण, अडसठ तीर्थ धाम नमो अरिहताण्" गीत से हुआ। ब्यावर के श्री मोहनलाल जी श्रीमाल ने "लेलो शाति प्रभु रो नाम, जिनवर शाति-शाति रो नाम। धो लो दिल रा पाप तमाम, बेगी मुक्ति मिलसी" गीत प्रस्तुत किया।

श्रीमती प्रेमलता जी ने कहा कि मनुष्य किस तरह से जीवन को उच्च बनाए। विचार बनाने सही राह दिखाने यह धर्म गगा माडवी मे आई है। आप सकल्प करे कि आपका गाव व्यसन मुक्त होकर आदर्श गाव बने। अपनी आने वाली पीढियो को सुधारने का प्रयास करे। आपकी अपील पर डेढ सौ से भी अधिक बालको ने खडे होकर सप्त कुव्यसनो के त्याग का संकल्प लिया। श्री चोरडिया ने सभी को त्याग करवाया। साथ ही सभी ने बडो का आदर करने की प्रतिज्ञा ली।

विश्व अहिसा मानव ट्रस्ट के मध्यप्रदेश प्रातीय अध्यक्ष महन्त कुमार जी बम्ब ने अपने विचारो की अभिव्यक्ति मे कहा कि आज देश की सस्कृति और सस्कार विश्व अपना रहा है और हमे इन सस्कारो के बारे मे जागृति लाने के लिये पदयात्रा निकालनी पड रही है। इसका मुख्य कारण मैकाले की शिक्षा पद्धति है। आज गुरुकुल टूटे हैं तो सस्कारो का ह्रास हुआ है। घर-घर मे पाश्चात्य सभ्यता प्रवेश कर चुकी है। ऐसे मे यदि हमे सस्कार चाहिए तो शिक्षण सस्थाओ को बद करना होगा। यदि शिक्षा पैसे से मिलेगी तो उद्धार नही होगा। आज आवश्यकता



इस बात की है कि हम वापस गुरुकुल पद्धति की और लौटें।

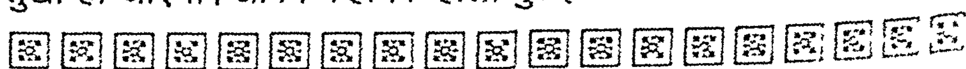
उन्होने कहा कि पदयात्रा अच्छा कार्य है। संस्कृति और सस्कारो मे व्यक्ति रहेगा तो देश विकास करेगा।

महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती निर्मला देवी चोरडिया ने कहा कि बच्चो के लिए संस्कार जरूरी है। स्कूलों की होड है संस्कारों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं है। आपने कहा कि यात्रा के माध्यम से आपसी प्रेम सौहार्द बढा है। उन्होंने कहा कि भावना ही धर्म है। इसलिये सभी के प्रति शुद्ध सात्विक भावना रखें। रायपुर से आई महिला समिति मंत्री श्रीमती इन्द्रा जी बैद ने बच्चो को बुरी आदतों से दूर रहने के लिये प्रेरित करते हुए कभी भी झूठ नही बोलने को कहा। चम्पालाल जी पिरोदिया "मामाजी" ने आपसी प्रेम और सौहार्द से आपसी झगडो को निपटाने के बारे में बताते हुए अपने संस्मरणो को सुनाया। उन्होने कहा कि यदि हम दूसरा न माने तब भी आगे बढ कर मामला सुलझाने का प्रयास करेगे तो समस्या तो हमेशा के लिये सुलझेगी ही प्रेम भी बढेगा।

स्वाध्यायी श्री नानालाल जी पितलिया ने कहा कि व्यसन नही होगे तो शरीर स्वस्थ रहेगा। परिवार मे उन्नति होगी। नही तो जो कमाऍगे वह व्यसनो मे चला जाएगा। परिवार तबाह होगा। इसलिये आवश्यक यह है कि हम पहले व्यसनो का त्याग करें।

सघ उपाध्यक्ष श्री भँवरलाल जी कोठारी ने कहा कि जिस गॉव मे गरीब, बेकार, अशिक्षित, दीन-दु.खी न हो और वह सम्पन्न हो तो वह गॉव आदर्श होता है। आपने कहा कि हम जीवन की साधना करने कराने आए हैं। चरित्र के पतन को न होने दे। यह तभी सभव होगा जब हम लोग व्यसन मुक्त होगे। श्री उदयलाल जी जारोली ने कहा कि 84 लाख योनियो मे आने जाने से पीछा छुडाना चाहते है तो धर्मजीवी बने तभी मोक्ष की प्राप्ति संभव हो सकेगी।

महिलाओ ने गीत प्रस्तुत किया। वैद्य कंवरलाल जी राठौड ने कहा कि धर्म किसी का नही पालने वाले का धर्म है, जागरण के बारे मे आप लोगो ने बताया है इसलिए आपका आभार है। झूँझारमल जी ने भी अपने विचार रखे। यहाँ सभा काफी अच्छी हुई और देर रात तक चली। समाज सेवी एव गॉधीवादी समाजसेवी श्री मानवमुनि जी ने कहा कि गुरुदेव के आर्शीवाद से तीन लाख से भी अधिक लोगो ने शराब, मांस आदि कुव्यसन छोडे है। आपने कहा कि जन्म से जीवन सफल नही होता राम की मर्यादा के बिना जीवन सफल नहीं हो सकता। राम ने त्याग किया वनवास चले गए। मांडवी वाले बुराईयो को त्याग दे तो जीवन सुखी हो जाएगा। आपने कहा कि होली बुराईयो को जला देने के लिए आती है।



यहा पर एक जोडे ने शीलव्रत धारण किया।

यहा पर महिला समिति सघ अध्यक्षा श्रीमती निर्मलाजी चोरडिया ने महिला मत्री आदि के साथ मिलकर श्रीमती छोटी बाई नाहर ने गाव की महिलाओ को कुव्यसनो के बारे मे जानकारी देते हुए उनसे होने वाली हानियो एव हिसा की जानकारी दी। साथ ही शीलव्रत धारण करने तथा बच्चो मे सस्कारो के निर्माण एव उनमे शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने पर विशेष जोर दिया।

आज हमारी यात्रा का चौथा दिन है, प्रात. की पहली किरण के साथ ही हमारी यात्रा अगले पडाव के लिये शुरू हो जाती है। यहा से हम नेतालवी जाऐगे। जिसकी दूरी पाच किलोमीटर है। रास्ता अब काफी हद तक ठीक है हालाकि सडक अभी नही है लेकिन शहर के नजदीक होने एव कल समापन है इस आशा मे थकावट के बाद भी पदयात्रियो के जोश मे कोई कमी नही है। भारी शरीर, उम्र की अधिकता के बाद भी चरेवति-चरेवेति के साथ बढते चले जा रहे है। नेतालवी अपेक्षाकृत बडा कस्बा है। यहा पर खेती बाडी भी अच्छी है जिसका मुख्य कारण यहा के खेतो को पास ही के रूपनिया बाध से पानी मिलना है। यहा सपन्नता है चार दिन बाद वापस पक्के मकान यहा देखने को मिलते है। यहा मुख्य रूप से चना, लहसुन, मेथी सोयाबीन, रायडा एव अफीम की खेती होती है। साल मे दो बार नीबू एव सतरे की भी फसल किसान ले लेते है।

परम्परा से स्वागत के बाद खेतो मे होते हुए हम शभूसिह जी ठाकुर के डेरे मे पहुचे। आज हमारा पडाव यही है। सभा भी यही होगी। प्रात के अल्पाहार के पश्चात सभा आरभ होती है। श्री शभूसिह जी ठाकुर यात्रा का स्वागत करते हैं। साथ ही मार्गदर्शन एव अच्छे उद्देश्य के लिये की जा रही यात्रा को महत्वपूर्ण बताते हैं।

तीर्थकर पत्र के समपादक एव शाकाहार क्राति के जनक डॉ श्री नेमीचद जी जैन का सघ उपाध्यक्ष श्री भवरलाल जी कोठारी ने परिचय कराते हुए कहा कि विज्ञान के युग मे तथ्य और तर्क देखा जाता है। आपने अडो एव मासाहार के सबध मे तथ्यो एव तर्को के आधार पर सिद्ध किया है कि किससे-कितने नुकसान होते है। श्री कोठारी ने कहा कि भारत भूमि के कण-कण मे अहिसा व्याप्त है। अहिसा युगो से है। इसी अहिसा का सामूहिक उपयोग कर गाधी ने अग्रेजो को देश से निकाल भगा दिया।

डॉ नेमीचद जी जैन ने कहा कि धधा अधा न हो और न ही वह अधा-धुन्ध हो, आप लोग जो कोई भी कार्य करते है, उसकी समीक्षा करे। तभी हम यह तय कर पायेगे कि हम जो कर रहे हैं वह ठीक है या नही। साथ ही घर के कामो



में भी समीक्षा करें तभी पदयात्रा सफल हो सकेगी।

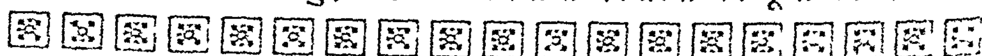
श्री जैन ने कहा कि करूणा की कोई भाषा नही होती उसके लिये चरित्र आवश्यक है, चरित्र होगा तो करूणा, अहिसा व्यसन मुक्त संस्कार पैदा होगे। आपने कहा कि हम पदयात्रा क्यो कर रहे है, किसके लिये करे रहे हैं ? जब तक उसका औचित्य हमारे जीवन मे नही आयेगा हमारा जीवन सफल नही हो सकेगा। उन्होने अपने जीवन के विभिन्न प्रसंगो का उदाहरण देते हुए जीवो की हिसा, कत्लखानो मे हिसा, वर्क बनाने मे हिसा आदि को भत्स बाते हुए इनसे बचने, ऐसी वस्तुओ का उपभोग न करने एव अहिसा का मार्ग अपनाने की अपील की।

डॉ. श्री नेमीचद जी ने कहा कि काम करें और निरन्तरता का वातावरण बनाए रखे तो सफलता अवश्य मिलेगी। ऐसी पदयात्राएँ की जाय तो ताकत बनती है। हम औपचारिक रह कर कार्य करेगे तो हमारे लक्ष्य मे हमे सफलता नहीं मिल सकेगी। उन्होने यात्रा के उद्देश्य को प्रतिपादित करते हुए कहा कि बेहतर माता, बालक, पिता, पत्नि, पति बनाना ही इस यात्रा का उद्देश्य है। व्यसन मुक्ति के कार्य को आपने सूली पर चढे आदमी को सूली से उतार कर जीवन देने जितना महत्वपूर्ण बताया।

इस अवसर पर सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया ने पूर्व अध्यक्ष श्री पी सी चौपडा, महिला समिति सघ अध्यक्षा श्रीमती निर्मला जी चोरडिया, महामत्री महिला समिति श्रीमती इन्द्रा देवी भी उपस्थित थी। सभी ने अपने विचार रखे। झामक लाल खारीवाल ने भी अपने विचार रखे। सचालन समाजसेवी मानवमुनि जी ने किया।

सांय के अल्पाहार के बाद यात्रा अगले पडाव को बढती है जो कि मात्र तीन कि मी पर ही है। यह रोला ग्राम है। स्वागत के बाद गाव मे "होवे धर्म प्रचार सारे भारत मे" गीत गाते हुए, घूमते हुए गतव्य पर पहुचते हैं। यहां पर विश्राम के पश्चात रात्रि 8 बजे धर्मसभा प्रारभ होती है। मामाजी एव नृसिह आदि के प्रयासो से यहा पर 25 लोगो द्वारा व्यसन मुक्त आजीवन रहने का सकल्प लिया जाकर सकल्प पत्र भरे गए हैं। नृसिह ने प्रारभ मे 'गुरुजी मैंने अवगुण बहुत किया" गीत गाया। दूदू की श्रीमती चन्द्राबाई ने "कभी प्यासे को पानी पिलाया नही" गीत प्रस्तुत किया। गाव की ओर से श्री अम्बाराम जी ने सभी आगन्तुको का स्वागत-अभिनन्दन किया।

जावरा शुगरमिल के अध्यक्ष श्री झमकलाल जी खारीवाल ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए कहा कि पदयात्रा परमात्मा की पूजा का अच्छा कार्य



है आज यह देश की सतत आवश्यकता है, व्यसन मुक्ति के इस आन्दोलन से देश का भविष्य सुधरेगा।

आपने धर्मपाल गॉधी श्री समीरमलजी कांठेड को याद करते हुए उनकी कमी को इगित किया साथ ही कहा कि जितना बन सकेगा वे समीरमलजी के कार्य को आगे बढाने मे लगेगे। आपने कहा कि जीवन को सकीर्णता में नही घेरे, मानव मात्र.मे भेदभाव न हो अपने संस्कारो को सुधारे, हरिजन बलाई जाति के. लोगो की धर्म की और प्रवृत्ति बढी है। वे यम नियम का पालन करते है। आपने कहा कि यदि मानव का चरित्र चला जाए तो फिर उसका जीवन जीवन नही रहता।

महिला समिति महामंत्री श्रीमती इन्द्रा जी बैद ने कहा कि रोला मे लोग व्यसन मुक्त है सुना, अच्छा लगा। बच्चो की पढाई की ओर ध्यान देवे। बडो का आदर, दया, करूणा का भाव लावे। माताएँ बच्चो मे लोकव्यवहार एव धर्म के बारे मे सस्कार पैदा करे। प्रतापगढ नगर पालिकाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी बोर्दिया ने कहा कि मानव जीवन मे यदि कुव्यसन, दुर्गुण हैं तो वे उसे पतन की ओर ले जाएँगे। इसलिये कुव्यसनो से दूर रहे। मनुष्य से कोई घृणा नही करता वह तो उसकी बुराईयो से घृणा होती है। व्यसन मुक्त होने से आर्थिक व शारीरिक क्षति से बचा जा सकता है।

महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती निर्मलादेवी जी चोरडिया ने कहा कि [illegible] जागरूक गाव है। अधिकतर लोग व्यसन मुक्त हैं। कुव्यसनो के खर्चो और [illegible] में जुडाव है आप कुव्यसनों को छोडेंगे तो बच्चो का भविष्य बन पाएगा और [illegible] प्रेम और सौहार्द से रह पायेगे।

श्री कनकमलजी कांठेड ने अपने अग्रज श्री समीरमल जी की [illegible] हुए कहा कि उनमें कार्य के प्रति तन्मयता थी। डॉक्टर के मना करने [illegible] वे पदयात्रा के कार्यक्रम को सफल बनाने मे जुटे रहे। लेकिन आज [illegible] की सफलता को देखने हम लोगों के बीच नही है। हम उनकी [illegible] कर सकते लेकिन टीम बना कर उनके छोडे कार्यो को पूरा करने [illegible]

श्रीमती प्रेमलता जी ने कहा कि संस्कार निर्मा[illegible] अधिक कार्य कर सकती है। वे अपने बच्चो को प्यार, प्रेम से [illegible] के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा सकती है। [illegible] बाटे तो प्रेम बढेगा।

ब्यावर के श्री धनराज जी ने कहा कि धर्म [illegible] की स्थिति ठीक होगी। सक्षम होंगे तो धर्म [illegible]

कहा कि लघु उद्योग लगे तो विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। श्री उदयलाल जी जारोली ने कहा कि मन विषय वासनाओ में डूबा हो तो गुरु भगवंतो की वाणी अपना काम नही कर पाती क्योकि तब उसकी गति मंद होती है लेकिन जब विषय वासनाएँ मंद हो तो उस समय ज्ञान का विचार आ सकता है। उस समय यदि हम स्वाध्याय करे, गुरु भगवतो की वाणी सुनें तो हम जल्दी ग्रहण कर सकेगे। संघ उपाध्यक्ष श्री कालूराम जी नाहर ने कहा कि पदयात्रा सिर्फ धर्मपालों के लिये ही नही है सभी समाजो के लोग इससे जुडें और अपने आप को कुव्यसनों से दूर करे।

सघ उपाध्यक्ष एव राजस्थान गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री भवरलाल जी कोठारी ने कहा कि भारत राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर संत-ऋषियो का देश है, पवित्र भूमि है। आज यहां शराब की गंगा बह रही है, चरित्र का पतन, हिसा का तांडव हो रहा है। आज देश किस और जा रहा है। हम यह जानते है इसलिये इसमे सुधार करने, आदर्श भारत के निर्माण के लिये कार्य करने आप लोगो के बीच चरित्र निर्माण का लक्ष्य लेकर आए है।

सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया ने कहा कि सेवा का फल मनोकामनाओ को पूरा करने वाला होता है, जीवन मे सेवा का बहुत अधिक महत्त्व है, साथियो को व्यसन मुक्त करेगे तो आप लोगो को भी लाभ मिलेगा। आपने ग्राम विकास, गौ वश वृद्धि, खेती को बढाने के उपाय बताए। यहां पर सभा रात्रि पौने बारह बजे तक चली। अच्छी सभा हुई उपस्थिति भी अधिक थी। जिज्ञासा का भाव एव स्वय को सुधारने का मानस भी दिखाई दे रहा था।

यहा से रात्रि विश्राम के बाद ही हम रिंगनोद के लिए प्रस्थान करते हैं जो रोला से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थिति बडा कस्बा है। यहां पर हमारी पदयात्रा का अंतिम पडाव है। ऊँचे-ऊँचे पेडो के मध्य से होते हुए वाहनो की आवक जावक के कारण सडक के किनारे चलते पैदल यात्री रिंगनोद के मुहाने पर पहुंच चुके हैं। सामने ही माध्यमिक विद्यालय प्रांगण है, आसपास लोगों के मकान है। दूर कस्बे के बीच मे क्षुधा शांति की प्रतीक पानी की टंकी दिखाई दे रही है। परम्परागत तरीके से स्वागत के बाद काफिला पास ही के खेत में बने पाडाल मे रूकता है। आज पाडाल मे सभा न होकर रिंगनोद के समता भवन में होगी। इसलिये सभी यात्री स्नान और अल्पाहार के बाद सभा स्थल की ओर बढे। ग्यारह ग्राम बालाए सिर पर कलश लिये पदयात्रियो के आगे ढोल की थाप के साथ "होवे धर्म प्रचार सारे भारत मे" नाना गुरु ने क्या दिया, समता का सदेश दिया" हु शि उ चौ श्री जग नाना, राम चमकते भानु समाना" आदि नारे लगाते



`रिंगनोद के गली मौहल्लो मे होते हुए धर्मपाल क्षेत्रो मे जाते है। यहा बच्चो की टोली पदयात्रियो के आगे-आगे हो जाती है नारे लगाते है "एक दो तीन चार, जैन धर्म की जय जयकार", इस प्रकार समता भवन मे पहुचते है। यहा पर रिंगनोद श्री संघ की ओर से सभी का स्वागत किया जाता है।

रिंगनोद सघ अध्यक्ष श्री प्रकाशचद श्रीमाल, धर्मपाल संघ रिंगनोद के अध्यक्ष श्री गुमानकुमार जी पानोला ने सभी आगन्तुको का स्वागत किया। श्री सुमेद कुमार श्रीमाल ने "नानेश आचार्य महान है" गीत प्रस्तुत किया। नागुबाई ने नाना गुरु महान है गीत गाया। जावरा के श्री मुकेश पगारिया ने कहा कि आज धर्मपाल गाव मे सस्कारित, जीवन साधक, व्यसन मुक्त व्यक्ति के रूप मे गिने जाते हैं। उन्होने कहा कि आज किसी भी बात को कहना तो आसान है लेकिन उसे गुणना बडी बात है। हम अपने मापदण्डो को नही छोडेगे तो ज्ञान का मिठास कहा से पाऐगे। प्रतापगढ पालिका के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोर्दिया ने कहा कि व्यसन मुक्ति, सस्कार निर्माण, जीवन साधना की यह पदयात्रा गाव मे अलख जगाने आई है कि आज भी भारत मे गाव ही भविष्य निर्माण का कार्य कर सकते है।

महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती निर्मलादेवी चोरडिया ने कहा कि पाच दिन की पदयात्रा एव समीक्षण ध्यान, स्वाध्याय एव प्रतिक्रमण से विभाव से स्वभाव मे आए है। समभाव से ही समता आती है।

सघ उपाध्यक्ष श्री भवरलाल जी कोठारी ने कहा कि यहा का समाज व्यसन मुक्त है यह जानकर प्रसन्नता हुई, हम धन्य हो गए। आज चारित्रिक पतन, हिसा, विलासिता के वातावरण मे सस्कार युक्त समाज का दर्शन अद्भुत है। आपने कहा कि सम्यकत्व से जैनत्व आता है, जो अहिसक होता है वह निर्भय होगा। हम करूणा से कापते है, दर्द देखकर कापते है। हमे एकात्म बोध है यही साधना है।

सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया ने कहा कि रिंगनोद मे सारा गाव व्यसन मुक्त है यह जान कर सारी थकान दूर हो गई। आपने कहा कि सघ अध्यक्ष धर्मपालो को साधना की प्रेरणा दे, अष्टमी, चतुर्दशी की साधना, प्रतिक्रमण करावे। आपने कहा कि धर्मपालो ने अच्छी प्रगति की है। दिलीप नगर छात्रावास के अस्सी से अधिक छात्र राजकीय सेवाओ मे ऊँचे औहदो पर पहुचे हैं। लोकसभा विधानसभाओ, परिषदो, पालिकाओ तथा ग्राम पचायतो, सरपचो के पदो पर सैकडो धर्मपाल पहुचे हैं।

श्री चोरडिया जी ने कहा कि गभीर बीमारियो के लिये सघ की ओर से 25

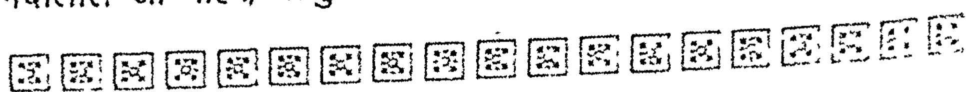


हजार रु. की आर्थिक सहायता तत्काल प्रभाव से देय होगी। इसके लिए संबंधित क्षेत्र के अध्यक्ष लिख भेजे। आपने अधिकाधिक श्रमणोपासक के सदस्य बनने पर जोर देते हुए कहा कि यात्रा एवं आप लोगो की आत्मीयता ने आत्म विभोर कर दिया है।

धर्मपाल शाला के छात्रो से संवाद एवं नाट्य के माध्यम से भाव अभिव्यक्त किए। हिम्मतसिह जी श्री श्रीमाल ने संचालन करते हुए कहा कि जैन भाईयो मे दुर्व्यसन आ रहे है, सुनते हैं तो शर्म महसूस करते है। यहां 50 घर हैं। सभी लोग भाई चारे से रहते हैं। सभी दुर्व्यसनों से दूर हैं। पदयात्रा आगमन पर आभार माना।

समापन के बाद भोजन से निवृत्त हुए। यहां से जावरा तक जाने का कार्यक्रम परिवहन साधनो से था। जावरा मे समता भवन मे पहुच कर सभी ने विश्राम किया। फिर शोक व्यक्त करने समीरमल जी कांठेड के घर गए। साय को दो कि मी. की पदयात्रा के बाद स्थानक के पास विद्यालय परिसर मे पदयात्रा का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जावरा श्री संघ के अध्यक्ष श्री छगनलाल जी पटवा ने कहा कि व्यसन मुक्ति का जो प्रयास किया गया है उसे भुलाया नही जा सकता। आपने जावरा युवा सघ की पदयात्रा के दौरान की गई सेवा की प्रशसा की। पिपलिया मण्डी के मनोहरलाल जी जैन ने कहा कि कांठेड जी की यादगार को जीवित रखना है यही मानकर पदयात्रा निकाली। जो वास्तविक आवाज जन-जन तक पहुंचनी थी वह मामाजी, मानवमुनि जी व महिलाओ ने घर घर पहुचाई। आपने कहा कि मानव जीवन की सफलता के लिये व्यसन मुक्ति आवश्यक है। हर व्यक्ति को धर्म पर चलकर जीवन जीना चाहिए। कर्मो के बोझ से अगर हम दब गए तो डूब जावेगे। हमारे इस मनुष्य जीवन का लक्ष्य मोक्ष है। कर्मो में बधे तो भटकाव मे रहेगे।

सर्राफा उद्योग सघ जावरा के अध्यक्ष श्री पारसमल जी पगारिया ने आगन्तुको का स्वागत किया। पूर्व संघ अध्यक्ष श्री पी.सी. चौपडा ने कहा कि गांव मे व्यसन मुक्ति का बिगुल बजाने का मानस बनाया है। आपने कहा कि धर्मपाल ही नही अन्य लोगों ने भी व्यसन मुक्ति का संकल्प लिया है। श्री चौपडा साहब ने प्रथम धर्मपाल पुष्प श्री सीताराम जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि सीताराम जी मामाजी के मार्गदर्शन से गुरुदेव के श्री चरणो मे आए और उनके आर्शीवाद से धर्मपाल प्रवृत्ति को जन्म दिया। आपने कहा कि सीताराम जी ने धर्मपाल प्रवृत्ति के लिये सतत सक्रिय रह कर कार्य किया। श्री चोपडा जी ने गेदालाल जी नाहर, गोकुलचद जी, समीरमल जी काठेड के इस क्षेत्र मे किए



कार्यो को याद किया। आपने बताया कि पूर्व मे 10 पदयात्राओ का आयोजन किया जा चुका है। बारह वर्ष बाद यह पदयात्रा हुई है।

सघ उपाध्यक्ष श्री भवरलाल जी कोठारी ने कहा कि पदयात्रा मे सब कुछ मर्यादित था। हमारी दृष्टि बाहर है पहला काम है उसे स्वय पर लाना। आपने कहा कि हम बदलेगे तो युग बदलेगा समाज बदलेगा और राष्ट्र बदलेगा। उन्होने कहा कि यह एक बहुत बडा राष्ट्रीय कार्य है। राष्ट्र का निर्माण करना है तो चरित्रवान राष्ट्र भक्त नागरिको का निर्माण करना होगा। यह निर्माण दीप से दीप जलाकर होगा। उपदेशो से यह निर्माण नही होने वाला।

श्री कोठारी ने कहा कि हमारा दूसरा उद्देश्य व्यसनमुक्त समता समाज की रचना का है। आपने धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा एव माता यशोदा देवी के न आ सकने की पीडा को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि वे आना चाहते थे लेकिन स्वास्थ्य की अनुकूलता नही होने से नही आ सके।

महिला समिति अध्यक्षा निर्मला देवी चोरडिया ने कहा कि हम प्रेम से रहेगे तो समता समाज की सरचना होगी। प्रेम से ही सभी समस्याओ का समाधान संभव है। इसलिये आपस मे एक दूसरे से प्रेम की डोर से बधे रह कर जीवन बिताएँ।

सघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी सा. चोरडिया ने कहा कि पदयात्रा उत्साह उमग और उल्लास पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हो रही है। समता युवा सघ द्वारा पदयात्रा मे किए गए सेवा कार्यो को देखते हुए आपने उन्हे समता प्रचार सघ से जोडे जाने को कहा। आपने कहा कि स्वाध्यायी बन कर वीर वाणी से स्वय को अभिसिक्त करे तो कुछ लोग धर्मपालो को भी शिक्षा दे सकेगे। आपने कहा कि आजीवन सदस्य बनावे, सस्था एव सामाजिक गतिविधियो को बढावे।

श्री चोरडिया ने कहा कि सारे देश मे अभियान चलाकर सदस्य बनाये जाऐ। आपने कहा कि समता जन कल्याण योजना, छात्रवृत्ति योजना है, लाभ लेवे। शीलव्रत, ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय का पालन करे सघ सगठन हेतु सुझाव देवे। कार्यालय मे लिखे तो विचार किया जावेगा।

श्री मागीलाल जी मेहता सघ मत्री जावरा ने कहा कि धर्मपाल प्रवृत्तियो मे सहयोग हेतु हमेशा तत्पर रहेंगे। सभी का आभार व्यक्त किया। सचालन कातिलाल जी खारीवाल ने किया। अत मे दो मिनट का मौन रख कर के धर्मपाल गाधी श्री समीरमल जी काठेड को श्रद्धाजली अर्पित की गई।

पदयात्रा समाप्त हुई। यात्रीगण अपने गतव्यो को चल पडे।



इस प्रकार एक भव्य, गरिमामय, प्राकृतिक परिवेश मे स्वाध्याय, साधना और सेवा के प्रति समर्पित शासननिष्ठ पदयात्रियो की यह यात्रा तीर्थयात्रा का स्व प्रमोद भाव हृदयो पर अंकित कर सम्पन्न हुई। धर्मपाल समाज से एकात्म स्थापित करने आए समाज बंधुओ-बहिनो के उल्लासित हृदय और धर्मपाल क्षेत्र के उत्फुल्ल अतकरण का यह सात्विक समागम धर्मपाल समाज रचना की दिशा मे एक अक्षय स्मृति चिन्ह की भाति अकित हो गया।

— ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर (राज)

धर्मपाल बन्धुओं के आध्यात्मिक विकास हेतु

गुरु नानेश द्वारा प्रदत्त नव सूत्र

नशा नही करना कभी-नही धूम्र का पान
कटू शब्द कहना नही-नही करना अपमान
शुक्ल पक्ष की दसम को-करो धर्म का काम
प्रतिक्रमण करना सदा-लो ईश्वर का नाम

भ्रातृभाव रखो सदा-करना नही विवाद
यदि विवाद हो जाय तो-सुलझा शान्ति विवार
प्रतिक्रमण करना सदा-नहीं करना भई क्लेश
धर्म ध्यान करना सदा-जिससे मिटजा द्वेष

जय जिनेन्द्र कहना सदा-मिलने आये लोग
हाथ जोड कहना सदा-यही मिलन का जोग
नमोकार के मत्र को-जपना ग्यारह बार
उठकर ऊषाकाल मे -कर गुरु वदन, सार

संत साते पधारेज भी-कर दर्शन का ध्यान
लो लाभ व्याख्यान का-मत करना अभिमान
सुसंस्कृत बालक करो-शाला भेजो आप
अध्ययन हित प्रेरित करो-करो धर्म का जाप

नमोकार माला जपो-करो हृदय मे ध्यान
ईश्वर वदन मे रहो-दो दिवस मेहमान

— श्री रतनलाल व्यास



धर्मपाल पदयात्रा : आत्मावलोकन का एक अपूर्व अवसर

निर्मला देवी चोरडिया

निम्बाहेडा मे आयोजित सघ अधिवेशन के दौरान ही मुझे जानकारी प्राप्त हुई कि संघ अध्यक्ष, त्यागमूर्ति, समाज रत्न श्री गुमानमल जी चोरडिया, जयपुर के नेतृत्व मे चैत्र मास के लगभग एक धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा का आयोजन किया जावेगा। मेरा मन खुशी से झूम उठा, क्योकि मुझे ध्यान था कि पूर्व मे भी इस प्रकार की पदयात्रा आयोजित की गई थी जिसमे बहुत ही अभूतपूर्व धर्म-ध्यान, धर्म-जागृति का प्रसग बना था। मैने मन ही मन सकल्प किया कि इस पदयात्रा मे अवश्य ही चलना है। अन्तत दिनाक 16 3 97 से 20 3 97 तक (पच दिवसीय) की धर्मपाल पदयात्रा आयोजित किया जाना निश्चित हुआ। जिसमे यात्रा प्रमुख सघ अध्यक्ष मा गुमानमल जी चोरडिया, सहप्रमुख श्रीमान् भवरलाल जी कोठारी को तथा महिला यात्रा प्रमुख पद का भार मुझे दिया गया।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार दिनाक 16 3 97 को जयपुर का प्रवासीदल नगरी पहुचा। जहा पर पूर्व मे ही काफी यात्रीगण पधार चुके थे। पदयात्रा के पडाव मे कदम रखते ही मनस्थिति इस प्रकार बन गई, मानो हम धार्मिक शिविर मे आ गये हैं।

पदयात्रा के उद्देश्य को ध्यान मे रखकर निर्धारित दैनिक कार्यक्रम के अनुसार प्रात 5 00 बजे से रात्रि 10 बजे तक क्रमश ध्यान, प्रार्थना, पदयात्रा, अल्पाहार, सभा, भोजन, विश्राम, स्वाध्याय, अल्पाहार, पदयात्रा, प्रतिक्रमण, सभा तथा रात्रि विश्राम आदि कार्य पूर्ण व्यवस्थित रूप से प्रतिदिन इस प्रकार सम्पन्न होते कि पता भी नही चल पाता कि दिन किस प्रकार से व्यतीत हुआ। सुबह-शाम जिस ग्राम मे पदयात्रा की टोली पहुचती, वहा के धर्मपाल बन्धुजन स्वागत हेतु तत्पर रहते, पहुचने के बाद वहा का कार्यक्रम इतना व्यस्थित रहता कि पाच मिनट का समय भी व्यर्थ नही होता। धर्मपाल भाई-बहिनो से सम्पर्क करने पर लगता—मानो हम किसी श्रृद्धानिष्ठ, गुरुभक्त, सुश्रावक-सुश्राविका से चर्चा कर रहे हो। उनकी विनयता, सरलता, सादगी, भक्ति अन्तरमन को छू जाती थी और प्रेरणा देती थी स्व आत्मावलोकन की।



सघ अध्यक्ष, यात्रा प्रमुख आदरणीय श्री गुमानमल जी सा. चोरडिया, संघ उपाध्यक्ष, यात्रा सहप्रमुख श्रीमान् भंवरलाल जी कोठारी के प्रेरक, ओजस्वी उद्‌बोधन अन्तरग को छूने वाले होते थे। मन का रोम-रोम प्रफुल्लित हो जाता थे। सांयकाल प्रतिक्रमण के समय सब पदयात्री दिनभर मे हुई गलतियो का प्रायश्चित संघ प्रमुख से प्राप्त कर उसका पालन करते।

यात्रा के पांच दिन किस प्रकार व्यतीत हुए, पता भी नही चला कि पांच दिन हो गये। यात्रा की सुखद अनुभूति का वर्णन जितना किया जाय, उतना ही थोडा है। मेरे पास इन पांच दिनों की सुखद अनुभूति का वर्णन करते हुए इतना शब्दकोष नही कि पूर्ण वृतान्त लिख पाऊ। यात्रा मे धर्मपाल भाईयो के आचरण को देखकर मन ही मन अपंने आत्मवलोकन करने की जो प्रेरणा प्राप्त होती है, उनके गुण ग्रहण करने की ललक मन मे रहती है, वह अविस्मरणीय है।

पदयात्रा के व्यवस्थापक, संयोजक के साथ ही साथ धर्मपाल भाइयों, ग्रामवासियो, जावरा-मन्दसौर आदि संघ के बहन-भाईयो का उत्साह, सेवाभावना, प्रेम, वात्सल्यता देखने को मिली, वह अभूतपूर्व थी। प्रतिदिन की यात्रा के उपरान्त स्वत. ही मुझे जो अन्तरावलोकन की प्रेरणा मिलती, जिसके करने पर मन मे जो विशुद्ध भावो की प्राप्ति होती वह चिरकाल स्मरणीय रहेगी।

मै यही चाहूँगी कि इस प्रकार की धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा प्रतिवर्ष आयोजित होती रहे ताकि हम एक दूसरे के गुणो, भक्तिभावना को ग्रहण करते हुए एक अन्तरावलोकन का सुखद, अपूर्व अवसर प्राप्त कर सके।

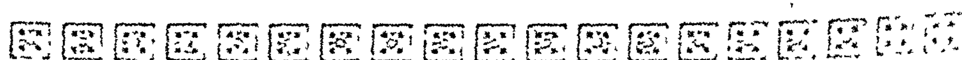
अध्यक्ष,

श्री अ. भा. सा. जैन महिला समिति

---

* आराधना दिवस माह नवम्बर के *

कार्तिक सुदी 4 मगलवार 4 11 97 जन्म दिवस–आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा
कार्तिक सुदी 9 रविवार 9 11 97 स्वर्गवास–आचार्य श्री चौथलाल जी म सा
कार्तिक सुदी 9 रविवार 9 11 97 आचार्य पद पदारोहण–आचार्य श्री श्रीलालजी म सा
कार्तिक सुदी 15 शुक्रवार 14 11 97 पक्खी चातुर्मास समाप्ति
कार्तिक बदी 1 शनिवार 15 11 97 दीक्षा दिवस–आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा
कार्तिक बदी 14 द्वि शनिवार 29 11 97 पक्खी





ग्रामीण अंचल मे धर्म–ध्वजा लिए सघ–प्रमुख एव पदयात्री

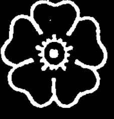
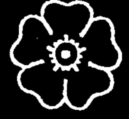


धर्मपाल क्षेत्र मे धर्म जागरण एव
संस्कार निर्माण पदयात्रा 1997

व्यसन मुक्ति एव सस्कार निर्माण पदयात्रा के दौरान धतरावदा मे आयोजित धर्मसभा मे विचार व्यक्त करते धर्मपाल नृसिह, मच पर सघ अध्यक्ष श्री चोरडियाजी व श्री मानवमुनि जी



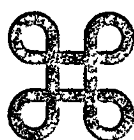
लामगरा मे समता–भवन का शिलान्यास करते हुए तत्कालीन सघ अध्यक्ष श्री रिद्धकरणजी सिपानी व संघ–प्रमुख

खण्ड 6

विज्ञापन

गृहस्थ को सयम की तरह प्रतिदिन कुछ न कुछ तप भी करना चाहिए। तप से इन्द्रियो के विषय क्षीण होते हैं और पर दुख मे सवेदना जागृत होती है।



With Best Compliments from:

"मनुष्य अपने सदाचरण से महान् बनता है, कुल या जाति से नहीं, मनुष्य की श्रेष्ठता के परिचायक उसके गुण है कुल, जाति या शरीर नहीं। गुणों के कारण ही मनुष्य वंदनीय है।"





सम्पतराज मनसुखलाल कटारिया

KATARIA BENEFIT FUND LTD.

Administrative Office:
63, 3rd Cross, Sriampuram,
Bangalore-560 021 Ph. 3325661, 3324483

Better Interest, Easier Loans

Regd Office:
"Kataria House"
H-53, 2nd Main Road, Nagappa Block,
Bangalore-560 021 Ph 3327742

"TRANSACTIONS ARE RESTRICTED TO MEMBERS ONLY"

With Best Complir

'चारित्र सममावो' अर्थात् स

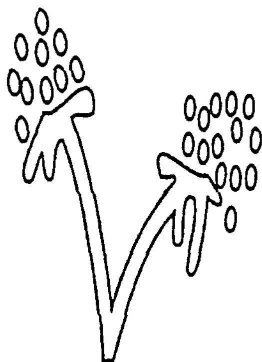


OM TRANSPORT CORPORATION

JAIPUR

ब्रह्मचर्य के वास्तविक परमार्थ को यदि सम्मुख रखा जाए, तो जीवन का नक्शा कुछ और ही बन सकता है।

—आचार्य श्री नानेश







स्रग्धरा छन्द

हुक्माचार्यो महात्मा शिवपदशरण गौरव पीठमास ।
प्रोद्यत्प्रोतुङ्ग लोके हृदय गुरु महोराजते रत्नपीठे ।।
चौथाचार्यो मनस्वी ललित, लव लय शोभते शोममान ।
श्री लालोलब्धलामो जनहित निरतो भ्राजते दीव्यवर्चा ।।

शार्दुल विक्रीडित छन्द

श्रीमन्तं सुरदेव भक्त मनुजा, स्तुवन्ति दीव्यैस्स्तवै. ।
श्रीमत् पूज्य जवाहर गुण निधि शान्त गणेश गुरुम् ।।
नाना नाम सुधीन्द्र शान्त मनसं, लोके सदा पूजितम् ।
सर्वे मे गुरवो जयन्तु जयिनो, रामो बुध सादरम् ।।

फलश्रुति

भक्त्या नमस्कारोत्येतान्,
प्रातरुत्थाय यो जन
सर्वसिद्धमवाप्नोति
न दुःख लभते नर ।।

—कवि रत्न श्रद्धेय वीरेन्द्र मुनिजी
की डायरी से साभार

जिन क्षितिज के दीप्तिमन्त
भास्कर सप्ताचार्य
वर्तमान आचार्य देव
समता निलय
नानेश
व युवाचेतना के प्रेरणाप्रदीप
भावी शासननायक
रामेश
के
पदनीरजों में
प्रणति

नागड़ी मोहल्ला,
बीकानेर—(राज.)
Ph 520292 Fax 524019

[illegible]
पुखराज [illegible] व परिवार [illegible]

जय गुरु नाना   जय श्री राम

जिनशासन सरोवर के राजहंस, धर्मपाल
प्रतिबोधक, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यानयोगी
पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म.सा.
आदि ठाणा का ब्यावर मे वर्ष 97 का भव्य वर्षावास
एव
तरुण तपस्वी शास्त्रज्ञ, पूज्य युवाचार्य श्री
रामलालजी म.सा. आदि ठाणा का रतलाम मे
वर्षावास सोत्साह, सानन्द, धर्म–ध्यान से परिपूर्ण एव
मगलमय हो, यही मगल मनीषा है।

वन्दनकर्ता
शान्तिलाल, संजय, अजय, तुषार एवं समस्त सांड परिवार



चम्पालाल शान्तिलाल सांड

सेठ चम्पालाल सांड मार्ग देशनोक–334 801 (राज.)
फोन 0151–65309, 35310

शान्ति निवास

[illegible] 59, [illegible] -56 [illegible]
फोन 2235726 2225754 2234971 [illegible]
[illegible] 2234774 [illegible]